लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–13

लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ

बूची ओफ़ोडिल

2001

पहला भाग

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series–13
Book Title: Lavaris Ladaki Aur… -1 (The Orphan Girl and Other Stories-1)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Africa

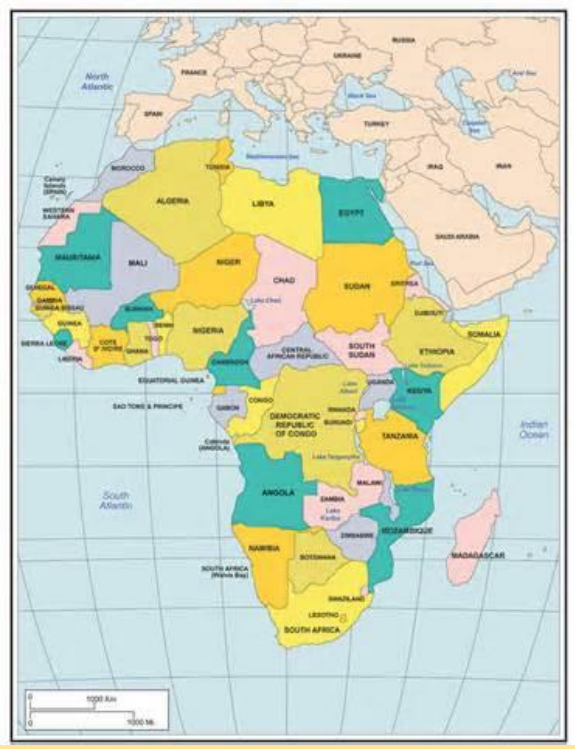

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5

लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ–1 7

1 सॉप दुलहा 9

2 केंकड़े ने अपना खोल कैसे पाया 23

3 धुँए का बना ताज 34

4 तैसे के लिये चाल 44

5 फ़ोरीवा के मोती 59

6 फ़ैरैयैल और जादूगरनी डैब्बे ऐंगल 65

7 सोने की लीद करने वाला घोड़ा 87

8 मक्का के एक दाने के बदले में पत्नी 100

9 जानवरों की भाषा 120

10 खोजने वाले और रखवाले 143

11 आदमी और लोमड़ा दुश्मन क्यों? 156

12 मौत का जन्म 166

13 सबसे ठीक नाम 173

14 लड़ाई का जन्म 180

15 नदी के राक्षस 188

16 दुनियॉ का जन्म 196

17 जादुई सेमल का पेड़ 201

18 केवल तुम्हारे कानों के लिये 214

19 अपूनन्चू 224

20 हर एक 234

21 कछुए ने उधार कैसे उतारा 249

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ–1

एशिया के बाद अफ्रीका ही संसार में दूसरे नम्बर का महाद्वीप है जनसंख्या में भी और क्षेत्रफल में भी। नाइजीरिया अफ्रीका के पश्चिमी तट पर दक्षिण की ओर स्थित है। यह अफ्रीका का सबसे ज़्यादा जनसंख्या वाला देश है। इसकी जनसंख्या इस समय लगभग **200** मिलियन है। इसकी जनता भी बहुत भिन्न प्रकार की है।

अफ्रीका में केवल **2–4** देशों का ही साहित्य प्रकाशित रूप में मिलता है जैसे नाइजीरिया, मिश्र, दक्षिण अफ्रीका, तनज़ानिया आदि इसलिये जहॉ भी हमें अफ्रीका की लोक कथाओं की पुस्तकें दिखायी देती हैं हम उनका हिन्दी अनुवाद कर लेते हैं। इससे पहले हमने अफ्रीका के तनज़ानिया देश के ज़ंज़ीबार द्वीप की लोक कथाओं की एक पुस्तक प्रकाशित की थी।[2] अफ्रीका की लोक कथाओं की एक पुस्तक हमने और प्रकाशित की थी जो दक्षिण अफ्रीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति नेलसन मन्डेला की सम्पादित की हुई थी।[3] उसके बाद हमने तीसरी पुस्तक प्रकाशित की थी नाइजीरिया की योरुबा लोक कथाओं की फूजा अबायेमी की लिखी हुई "चौदह सौ कौड़ियॉ... ।"[4] उसके बाद चौथी पुस्तक थी ए सैनी की लिखी हुई "अफ्रीका की लोक कथाऐं"[5]।

आशा है ये सभी पुस्तकें आप सबको बहुत पसन्द आयी होगी। तो लीजिये अब प्रस्तुत है आपके हाथों में अफ्रीका की लोक कथाओं की यह पॉचवीं पुस्तक बूची ओफ़ोडिल की लिखी हुई "लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ"।[6] इस पुस्तक में **41** लोक कथाऐं हैं जो एक पुस्तक में प्रकाशित करने के लिये बहुत अधिक हैं इसलिये हम इसे दो भागों में प्रकाशित कर रहे हैं।

हमें पूरी आशा है कि यह पुस्तक भी आपको उतनी ही पसन्द आयेगी जितनी इससे पहले वाली चार पुस्तकें आयी थीं। आशा है कि ये लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें आपको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये अफ्रीका की ये लोक कथाओं की पुस्तक की कहानियों को अब हिन्दी में।

---

[2] Bateman, George W. "Folktales of Zanzibar". Chicago: AC McClurg. 1901. 10 tales.

[3] Mandela, Nelson. "Nelson Mandela's African Favorite Folktales". WW Norton Company. 2002. 32 tales.

[4] Fuja, Abayomi. "Fourteen Hundred Cowries: traditional stories of the Yoruba". Ibadan: OUP. 1962. 31 tales.

Fuja, Abayomi. "Fourteen Hindred Cowries and Other African Tales." NY: Lothrop, Lee and Shepard. 1971. 1st American edition.

[5] Ceni, A. "African Folktales". Barnes & Nobles. 1998. 128 p. 18 tales.

[6] Offodile, Buchi. "The Orphan Girl and Other Stories". 2001. 41 tales

1 सॉप दुलहा[7]

यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के बिनीन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक गॉव में अलाबी[8] नाम का एक आदमी अपनी पत्नी के साथ रहता था। वे बहुत अमीर थे। उनके पास कई एकड़ जमीन थी, बहुत सारे नौकर चाकर थे और उनके बहुत सारे दोस्त थे पर उनके कोई बच्चा नहीं था।

वे रोज भगवान से प्रार्थना करते कि उनके एक बच्चा हो जाये। आखिर एक दिन भगवान ने उनकी प्रार्थना सुन ली और समय आने पर उनके एक सुन्दर सी बेटी हुई।

क्योंकि पति पत्नी बहुत अमीर थे इसलिये उन्होंने अपनी बेटी को बहुत लाड़ प्यार से पाला। उन्होंने उसको वह सब कुछ दिया जो वह चाहती थी। अगर वह कुछ गलती भी करती थी तो उन्होंने उसको उसके लिये कभी डॉटा नहीं।

इस तरह जैसे जैसे उनकी बेटी बड़ी होती गयी वह बिगड़ती चली गयी।

[7] The Serpent Groom (Tale No 1) – a folktale from Fon, Benin, West Africa.
[8] Alabi – a Nigerian name of a man

जब वह लड़की शादी के लायक हो गयी तो बहुत सारे आदमी अमीर और गरीब और राजकुमार और भिखारी उससे शादी करने के लिये आये पर उसने उन सबको मना कर दिया।

यह लड़की यह सोचती थी कि वह सबसे कुछ अलग करके जियेगी। उन दिनों उस देश की यह रीति थी कि लड़के का पिता लड़की के पिता से मिल कर शादी तय करता था सो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि यह लड़की किसी से भी सलाह लेना नहीं चाहती थी।

और यह लड़की शादी तो बिल्कुल भी नहीं करना चाहती थी क्योंकि दूसरे लोग यह सोचते थे कि शादी करना अच्छा है।

उसने अपने पिता से कहा — "मैं उस आदमी से शादी कैसे कर लूँ जिसको मैंने देखा तक नहीं। इसके अलावा मेरे लिये कोई भी आदमी इतना सुन्दर और अमीर नहीं है जिससे मैं शादी करूँ। वे तो मेरे नौकर होने के लायक भी नहीं हैं।"

आदमियों के लिये उसके ऐसे विचार उसके माता पिता को बहुत परेशान कर रहे थे। उन्होंने उसके विचार बदलने की कोशिश भी की पर उसने उनकी एक न सुनी क्योंकि उसने किसी की सलाह लेनी और माननी तो सीखी ही नहीं थी। वह तो बस अपने ही मन की करती थी।

सो कई साल बीत गये और उस लड़की ने शादी नहीं की। वह सुन्दर लड़की सारे गॉव में "वह लड़की जो शादी नहीं करना चाहती" के नाम से मशहूर हो गयी।

गॉव के आदमियों ने तो अब उससे शादी करने का विचार ही छोड़ दिया। सारे गॉव में अब उसकी सुन्दरता की बजाय उसके इसी बर्ताव के चर्चे होने लगे कि वह शादी नहीं करना चाहती।

किसी से भी उसकी सुन्दरता की बात करो तो वह यही कहता था — "अरे वह लड़की? हॉ, वह सुन्दर तो जरूर है पर वह तो वह मुर्गी है जिसको हम भगवान पर भी नहीं चढ़ा सकते।"

धीरे धीरे गॉव में अब यह विश्वास हो गया कि यह लड़की वह नहीं है जिससे कोई शादी करना चाहेगा।

जल्दी ही उसकी यह खबर कि वह आदमियों के साथ ठीक से बर्ताव नहीं करती है दूर और पास सभी जगह फैल गयी। यहॉ तक कि भूतों और शैतानों और जंगली जानवरों[9] की दुनियॉ में भी फैल गयी।

उस लड़की के बारे में यह सब सुन कर एक दिन एक अजगर अपने साथियों से बोला — "यह लड़की मुझे चाहिये।"

उसके एक साथी ने कहा — "तुम तो बहुत ही बदसूरत हो। उसने तो बहुत सुन्दर सुन्दर लोगों को मना

[9] Lands of ghosts, monsters and wild animals

कर के ठुकरा दिया है तुम उन लोगों के सामने क्या चीज़ हो। और तुम क्या सोचते हो कि वह तुमसे शादी कर लेगी? हा हा हा।" और उसके साथी और भी ज़ोर से हॅस दिये।

वह बोला — "देखो तो।"

अगले दिन सुबह जब सूरज उगा तो वह अजगर उस लड़की से शादी करने के लिये चला। रास्ते में वह अपने एक मन्दिर में रुका और काफी जाप करने के बाद वह एक इतने सुन्दर नौजवान के रूप में बदल गया जितना सुन्दर नौजवान दुनियॉ में कभी किसी ने नहीं देखा था।

फिर उसने एक राजकुमार के जैसे कपड़े पहने और शाही तरीके से गॉव की तरफ चला। वह बहुत ही सुन्दर लग रहा था और अपनी सुन्दरता से किसी को भी अपनी तरफ खींच रहा था। उसका चेहरा सुबह के तारे की तरह चमक रहा था।

वह सोच रहा था कि अब समय आ गया है जब उस लड़की को शादी के बारे में एक दो सबक सिखाने चाहिये।

जब वह उस लड़की के घर पहुॅचा तो उसका पिता अपने दोस्तों के साथ शराब पी रहा था। उसने उस लड़की के पिता से कहा — "मैं शादी के लिये आपकी बेटी का हाथ मॉगने आया हूॅ।"

तभी उस लड़की ने भी उस अजनबी को देखा और उसकी तरफ दौड़ी। उसने उसको गले लगा लिया और बोली — "यही वह आदमी है पिता जी जिससे मुझे शादी करनी है।"

अजनबी बोला — "मैं भी तुमसे शादी करना चाहता हूँ। मगर मुझे तुम्हारे पिता से कुछ रस्मी तौर तरीके पूरे करने हैं। फिर मैं अपने घर के कुछ लोगों को बुलाऊँगा और उसके बाद हम शादी कर लेंगे।"

पर लड़की को चैन कहाँ? उसको तो इतना भी सब्र नहीं था कि वह यह इन्तजार करती कि उसके अपने लोग उस अजनबी के बारे में कुछ पता कर लें।

उसने अपना सामान बाँधा और अपने माता पिता को धमकी दी कि अगर उन्होंने उसकी शादी उस अजनबी के साथ नहीं की तो वह उसके साथ भाग जायेगी।

उसके पिता ने उससे उस अजनबी की बात सुनने के लिये कहा और उसको समझाया — "अजनबी अक्लमन्द है और हमारे तौर तरीकों को जानता है। उसके लोगों को आ जाने दो तब हम उससे तुम्हारी शादी की बात कर लेंगे।"

पर लड़की बोली — "नहीं, मैं उसके आदमियों के आने का इन्तजार नहीं कर सकती। मुझे तो अभी जाना है।"

उसके पिता ने उसे बहुत समझाने की कोशिश की, उसकी माँ ने भी उसे बहुत समझाने की कोशिश की और फिर उसके परिवार वालों ने भी उसको समझाने की कोशिश की पर उसने किसी की भी एक नहीं सुनी।

उसने उस अजनबी का हाथ पकड़ा, अपनी एक नौकरानी को अपने साथ लिया, अपना सामान साथ लिया और उस अजनबी के साथ चल दी। उसके पिता को यह जानने का मौका ही नहीं मिला कि वह अजनबी था कौन और आया कहॉ से था।

अजनबी ने भी उस लड़की को साथ लिया, उसका कुछ सामान लिया, उसकी नौकरानी को लिया, मुर्गियॉ लीं, एक बकरा लिया और अपने घर की तरफ चल दिया।

वे कई बाजार वाले दिन[10] तक चलते रहे। उन्होंने सात खेत पार किये, सात नदियॉ पार की पर फिर भी उस अजनबी का घर नहीं आया

लड़की ने अजनबी से पूछा — "आपके घर पहुॅचने में अभी कितनी देर है?"

अजनबी ने जवाब दिया — "अब ज़्यादा दूर नहीं है बस हम अब घर पहुॅचने ही वाले हैं।"

वह लड़की फिर बोली — "आपका घर काफी दूर है।"

अजनबी बोला — "हॉ, तुम यह कह सकती हो। पर वे सब मेरे रिश्तेदार हैं, हैं न? क्योंकि जैसा कि हमारे बड़े कहते हैं "किसी के लिये कोई गॉव दूर हो सकता है और किसी और के लिये वही गॉव पास हो सकता है। मेरे लिये वह गॉव दूर नहीं है।"

[10] Market days – in villages markets are organized daily, bi-weekly or weekly, thus this may mean that they had walked for several days – maybe at least for 7 days if the market was organized everyday.

पर वे उस अजनबी के गॉव फिर भी नहीं पहुँच सके जब तक कि उन्होंने ज़िन्दा और मरे हुए लोगों की दुनियॉ के बीच की हद पार नहीं कर ली। अब तक वह लड़की और उसकी नौकरानी दोनों थक कर चूर हो चुके थे।

खैर, जल्दी ही वे लोग एक बहुत ही घने जंगल में आ पहुँचे। लड़की को लगा कि वहॉ तक अभी तक कोई भी आदमी नहीं पहुँचा होगा। पर फिर भी वे दोनों उस अजनबी के पीछे पीछे चलती रहीं और वे सब उस जंगल के बीच में आ गये।

जैसे जैसे वे उस घने जंगल में आगे बढ़ रहे थे कि लड़की को रोना आ गया। अजनबी ने उसको धीरज बॅधाया — "चुप हो जाओ, मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ और यह काफी है।" पर लड़की का रोना जारी रहा क्योंकि अब उसको उस अजनबी से डर लगने लगा था।

जब वे जंगल के बीच में आ गये तो वहॉ उनको एक गुफा मिली। अजनबी आगे बढ़ा और उसने लड़की और उसकी नौकरानी को उनका बोझा वहीं पास में रख देने के लिये कहा।

दोनों ने अपना अपना बोझा रख दिया और वह अजनबी उस गुफा में घुस गया। वह लड़की और उसकी नौकरानी आश्चर्य से खड़ी देखती रहीं। अन्दर जा कर उस नौजवान ने अपने आपको एक अजगर में बदल लिया।

यह सब देख कर वह लड़की और उसकी नौकरानी दोनों ही बहुत ज़ोर से चिल्ला पड़ीं।

अजगर बोला — "मुझे कुछ खाना चाहिये मुझे भूख लगी है।" और इससे पहले कि वह लड़की कुछ कर सके वह अजगर उस लड़की की नौकरानी को निगल गया और खा गया।

फिर उस अजगर ने अपनी पत्नी को पकड़ा और उसे उस गुफा के एक कमरे में बन्द कर दिया। उसने उस गुफा का ताला लगाया और उसकी चाभी को निगल गया।

अगले कई दिनों तक वह अजगर वे मुर्गियॉ और बकरा खाता रहा जो वह लड़की अपने साथ ले कर आयी थी। उतने दिन वह लड़की उस गुफा के कमरे में भूखी रही।

अजगर ने उसे जान बूझ कर भूखा रखा था ताकि वह थोड़ी कमज़ोर हो जाये और वह उसे आसानी से निगल सके।

इस बीच में लड़की का पिता बहुत डरा हुआ था। उसका डर और भी ज़्यादा हो गया था जब उसको अपनी लड़की के बारे में बहुत दिनों तक कोई खबर नहीं मिली।

सो वह एक पुजारी[11] के पास गया और उससे अपनी लड़की और अपने दामाद के बारे में पूछा।

[11] Translated for the word "Diviner" – they are like our Indian Pandit who tell the future by divine means

पुजारी बोला — "तुम्हारी बेटी नदी के बीच में है और अभी भी रो रही है। लगता है कि जैसे साबुन से उसकी ऑखें जल रहीं हैं। वह एक बड़े खतरे में है और केवल कुछ दिनों की मेहमान है।"

यह सुन कर अलाबी बहुत दुखी हुआ। उसने अपने सब होशियार कलाकारों को बुलाया और उनमें से सबसे अच्छे पॉच कलाकारों को चुना।

पहला कलाकार था मास्टर देखने वाला जो दीवार के पार भी देख सकता था और जिसकी नजर किसी भी आदमी की नजर से ज़्यादा दूर तक देख सकती थी।

दूसरा आदमी था मास्टर रोग[12] जो एक खाते हुए शेर के मुँह में से भी खाना छीन सकता था। तीसरा आदमी था मास्टर शौट[13] जो एक उड़ते हुए तोते को बिना गोली के भी मार सकता था।

चौथा आदमी था मास्टर बढ़ई जो पलक झपकते बिना किसी सामान के नाव बना सकता था। और पॉचवा आदमी था मास्टर नाविक जो नाव को बिना किसी पतवार आदि के नाव खे सकता था।

उसने उन लोगों से कहा — "तुम लोगों का काम मेरी बेटी को ढूँढना है और उसको मेरे पास ज़िन्दा वापस लाना है। अगर तुम

[12] Master Rogue
[13] Master Shot

ऐसा करोगे तो मैं तुमको इतना इनाम दूँगा जितना कि तुम सपने में भी नहीं सोच सकते।

सो वे सब अपने इस काम पर चल दिये। मास्टर देखने वाला उनका गाइड था।

जब वे नदी पर पहुँचे तो मास्टर बढ़ई ने एक नाव बनायी और मास्टर नाविक उसे खेने लगा। घने जंगल में पहुँचने से काफी पहले मास्टर देखने वाले ने एक अजगर नदी के किनारे धूप सेकता हुआ देख लिया।

आगे देखने पर उसको एक लड़की एक गुफा के कोने में बैठी हुई दिखायी दे गयी जहाँ वह ताले में बन्द थी और उसकी चाभी उस अजगर के पेट में थी।

अब मास्टर रोग का काम था। जब अजगर ने करवट बदली तो वह मास्टर रोग के असर से जम सा गया जैसे किसी ने उसके ऊपर कोई जादू डाल दिया हो।

मास्टर रोग ने अजगर का मुँह खोला और उसके पेट में से उस गुफा के कमरे की चाभी निकाल ली, गुफा के उस कमरे को खोला, लड़की को बाहर निकाला और वह चाभी फिर से अजगर के पेट में डाल दी। यह सब उसने अजगर के हिलने से पहले ही कर दिया।

लोगों ने उस लड़की को नाव में बिठाया और मास्टर नाविक नाव खे कर उसे आदमियों की दुनियाँ की तरफ ले कर चल दिया।

जब अजगर अपनी नींद से जागा तो वह लड़की को खाने के लिये गुफा की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने उस लड़की को ढूँढा तो वह लड़की तो उसको कहीं दिखायी नहीं दी।

लड़की को वहॉ न देख कर वह बहुत गुस्सा हो गया और गुस्से में भर कर उसने गुफा का बहुत बड़ा हिस्सा तोड़ फोड़ दिया।

जब वह गुफा के बाहर आया तो उसने आदमियों के पैरों के निशान और उनके कुछ और दूसरे निशान देखे। उसने नदी की लहरों पर भी कुछ देखा जिससे उसको पता चल गया कि कोई उसकी सबसे ज़्यादा कीमती चीज़ ले गया है।

उसने नदी की लहरों पर उसका पीछा ऐसे किया जैसे कि कोई जादू किया हुआ[14] आदमी करता है। बहुत जल्दी ही उसने उन पॉचों लोगों को पकड़ लिया और उन पर कूद पड़ा।

पर मास्टर देखने वाले ने उसको पहले से ही आते हुए देख लिया था और मास्टर शौट को उसके बारे में बता दिया था। मास्टर शौट ने उसको मारने की कोशिश की पर जब तक मास्टर शौट ने उसको मारा तब तक अजगर ने नाव को सैंकड़ों टुकड़ों में तोड़ दिया।

उसका यह नाव को तोड़ना उन आदमियों के लिये बहुत ही घातक था और जब तक कि मास्टर बढ़ई ने दूसरी नाव नहीं बना

[14] Translated for the word “Possessed”

ली तब तक सारे लोग पानी में तैरते रहे। उसके बाद मास्टर नाविक उस नयी नाव को खे कर आदमियों की दुनियॉ में ले आया।

जब वे लोग लड़की को ले कर वापस आ गये तो अलाबी ने उन सबको बहुत इनाम दिया। अब उनमें से हर एक अपने लिये सबसे ज़्यादा इनाम रखना चाहता था।

मास्टर देखने वाला बोला — "अगर मैं न होता तो सबसे पहले तो हमें वह लड़की ही दिखायी नहीं देती।"

मास्टर बढ़ई बोला — "पर वह मैं था जिसने वह नाव बनायी और जिसमें बैठ कर हम वहॉ तक गये। और जब हम करीब करीब डूबने वाले थे तब फिर मैंने ही दूसरी नाव बनायी जो हमको बचा कर यहॉ ले कर आयी।"

मास्टर शौट बोला — "और मैं? अगर मैंने उस अजगर को न मारा होता तो वह हम सबको खा जाता। मुझे इस इनाम में से सबसे बड़ा हिस्सा मिलना चाहिये।"

मास्टर रोग बोला — "यह मत भूलो कि मैंने अपनी ज़िन्दगी दॉव पर लगा कर उस अजगर के पेट से चाभी निकाली और उस लड़की को उस गुफा से बाहर निकाल कर लाया। अगर मैं यह सब नहीं करता तो आज हम यहॉ बैठ कर इस इनाम पर नहीं लड़ रहे होते।"

आखीर में मास्टर नाविक बोला — "अब अपने बारे में मैं क्या कहूॅ। मैं तो एक मामूली सा नाविक हूॅ। मुझे कोई इनाम नहीं चाहिये

सो मैं अपने हिस्से का इनाम तुम लोगों को देता हूँ। तुम लोग इस इनाम के ज़्यादा हकदार हो।"

ऐसा कह कर वह जाने को तैयार हुआ तो बाकी लोगों को लगा कि वे तो बहुत ही मतलबीपन से बात कर रहे थे। उन्होंने सोचा कि सभी लोगों ने इस काम में अपना अपना काम किया है इसलिये सबका बराबर का हिस्सा है, न कोई कम और न कोई ज़्यादा।

तो मास्टर रोग बोला — "ओ साथी, वापस आओ। हम लोग एक पहेली के बहुत सारे टुकड़े हैं जिनको साथ रखने पर ही वह पहेली यानी कि खोयी हुई लड़की की पहेली सुलझी है।

हममें से न तो कोई ज़्यादा है और न कोई कम। आओ हम अपना इनाम बराबर बराबर बॉट लेते हैं क्योंकि बन्दूक के जब तक सारे हिस्से काम न करें उससे गोली नहीं छूटती।"

हालॉकि उस लड़की ने "जो कभी शादी नहीं करना चाहती थी" अपना सबक सीख लिया था और अपना तरीका भी बदल लिया था पर फिर भी गॉव वाले उसके बारे में अपना विचार नहीं बदल पाये थे।

दूसरे यह कि वह लड़की अब इतनी बड़ी हो गयी थी कि उसकी सुन्दरता भी अब ऐसे मुरझा गयी थी जैसे किसी गर्मी के फूल को पाला मार जाये।

सो जैसा उसका नाम था वह फिर अपनी सारी ज़िन्दगी वैसी की वैसी ही रही यानी फिर उसकी शादी नहीं हुई।

2 केंकड़े ने अपना खोल कैसे पाया[15]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये पश्चिमी अफ्रीका के बुरकीना फ़ासो देश की लोक कथाओं से ली है।

बहुत दिन पहले की बात है कि केंकड़ों के पास कोई खोल नहीं हुआ करता था। उनका शरीर भी उतना ही चिकना था जितना कि नदी में रहने वाले दूसरे जानवरों का होता है।

उन्हीं दिनों एक बहुत ही बुरी बुढ़िया भी अपनी पोती के साथ रहती थी। उस बुढ़िया का बेटा और बहू मर चुके थे और वह बुढ़िया अपनी पोती के साथ अकेली रहती थी। वह उसके साथ बहुत ही बुरा बर्ताव करती थी।

वह अक्सर उसको ऐसे ऐसे काम करने के लिये भेजती थी जो बहुत ही नामुमकिन से होते थे और जब वह ऐसे काम नहीं कर पाती थी तो उसको उसके साथ बुरा बर्ताव करने का एक और मौका मिल जाता था।

एक दिन उसने उस लड़की को एक टोकरी ले कर पानी भरने के लिये भेजा। वह छोटी लड़की गयी पर जब वह बिना पानी लिये हुए वापस आयी तो उस बुढ़िया ने उसे बहुत पीटा और गालियॉ दीं।

[15] How the Crab Got Its Shell (Tale No 2) – a folktale from Burkina Faso (formerly Upper Volta), West Africa

वह बोली — "ओ आलसी बेवकूफ, तू किसी काम की नहीं। क्या तुझको मालूम नहीं कि तू एक टोकरी में पानी नहीं भर सकती?"

लड़की बोली — "मालूम है दादी। मगर तुमने ही तो मुझे उसमें पानी भरने के लिये कहा था।"

"अगर मैं तुझे अपने आपको मारने के लिये कहूँ तो क्या तू अपने आपको मार लेगी?" बुढ़िया गुस्से से बोली।

यह सुन कर उस लड़की को बहुत दुख हुआ और गुस्सा भी आया क्योंकि वह जानती थी कि किसी भी तरीके से वह टोकरी में पानी नहीं भर सकती थी।

पर अगर वह अपनी दादी से इस बात पर बहस करती या उससे कोई सवाल जवाब करती तभी भी उसी को डॉट पड़ती।

उसने तो उसकी बात को केवल इसलिये मान लिया था ताकि वह डॉट खाने के लिये थोड़ा सा समय टाल सके। उसकी दादी भी यह बात जानती थी।

एक दिन उस लड़की ने अपनी दादी से कहा — "दादी।"

पर दादी तुरन्त ही उसकी बात काट कर बोली — "मैंने तुझसे कितनी बार कहा है कि तू मुझे दादी मत कहा कर। अगर तूने फिर कभी मुझे दादी कहा तो मैं तुझे पहले से भी ज़्यादा मारूँगी।"

"पर तुमने मुझे अपना नाम भी तो कभी बताया नहीं।" लड़की बोली।

"यह मालूम करना तेरा काम है। और अगर तूने मेरा नाम मालूम नहीं किया तो फिर तुझे कभी इस घर में खाना नहीं मिलेगा।"

यह सुन कर लड़की बहुत दुखी हुई क्योंकि वह जानती थी कि बच्चे अपने से बड़े लोगों को नाम से नहीं पुकारते। उनको उनके किसी बच्चे के माता या पिता कह कर पुकारा जाता था। अगर उनके कोई बच्चा नहीं होता था तो जैसे "हमारे माता" और "हमारे पिता" के नाम से पुकारा जाता था।

वह छोटी लड़की अपनी दादी का नाम किसी बड़े से भी नहीं पूछना चाहती थी क्योंकि इससे उसको यह लगता था कि अगर उसने दादी का नाम किसी बड़े से पूछा तो वे लोग सोचेंगे कि वह बड़ों की कितनी बेइज़्ज़ती करने वाली लड़की है।

इससे वे लोग यह भी सोचने लगेंगे कि उसकी दादी ने उसके बारे में कुछ झूठ बोला है। और अगर उसने नाम पता नहीं किया तो वह तो भूखी ही रह जायेगी।

यह सोच सोच कर तो वह छोटी लडकी बेचारी और ज़्यादा परेशान हो गयी और वह अकेली रहने लगी। जब भी वह नदी की तरफ जाती वह वहॉ उसके किनारे बैठ जाती और नदी के पानी में पड़ी अपनी परछाईं से बात करती रहती।

फिर वह गाती और अपने माता पिता को उनका नाम ले ले कर बुलाती रहती। वह उनको बताती कि कैसे उसकी दादी उसके

साथ बुरा बर्ताव करती थी और फिर उनसे अपनी इस मुश्किल में सहायता करने के लिये कहती।

एक दिन जब वह नदी के किनारे बैठी गा कर अपने माता पिता को बुला रही थी उसने अपनी मुट्ठी में पानी भरा और अपने पैरों पर डाल लिया। उसने फिर गाया और हॅस कर अपने आपको तसल्ली दी।

फिर उसने नदी पर झुक कर पानी लिया और वहॉ से घर चलने को हुई कि एक केंकड़ा पानी के ऊपर आ गया।

केंकड़ा उस लड़की से बोला — "मैं यहॉ तुमको रोज आते देखता हूॅ। तुम हमेशा रोती रहती हो और दुख भरे गीत गाती रहती हो, क्यों?"

लड़की बोली — "क्योंकि मेरी दादी बहुत बुरी है। वह मुझे खाना भी नहीं देगी जब तक में उसका नाम न जान जाऊॅ।"

केंकड़ा बोला — "हॉ तुम्हारी दादी है तो बहुत ही बुरी बुढ़िया। पर वह वह ऐसा क्यों चाहती है कि तुम्हें उसका नाम मालूम हो?"

लड़की बोली — "क्या इससे यह साफ जाहिर नहीं है कि वह हमेशा इस बात का मौका ढूॅढती रहती है कि वह मुझसे अपने बुरे बर्ताव के लिये कोई सफाई दे सके।

अगर मैं उसका नाम नहीं जान पाऊँगी तो वह मुझे खाना नहीं देगी और उसको मुझे खाना न देने का एक बहाना मिल जायेगा। और अगर मैं उसका नाम जान जाती हूँ तो भी वह मुझे उस नाम से बुलाने के लिये मारेगी। पर भूखी रहने और न पीटे जाने की बजाय मैं खाना खा कर पीटा जाना ज़्यादा पसन्द करूँगी।"

केंकड़ा बोला — "ठीक है। मैं तुम्हारी इस काम में सहायता करूँगा। लेकिन तुम मुझसे वायदा करो कि तुम उससे यह नहीं बताओगी कि उसका नाम तुम्हें मैंने बताया है क्योंकि अगर उसको यह पता चल गया कि उसका नाम तुम्हें मैंने बताया है तो मैं नहीं बता सकता कि वह मेरी क्या हालत करेगी।"

"मैं वायदा करती हूँ। मैं वायदा करती हूँ। मैं दादी को कुछ नहीं बताऊँगी। बस तुम मुझे उसका नाम बता दो।" लड़की खुशी से चिल्लायी।

केंकड़ा बोला — "तुम्हारी दादी का नाम है "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा"[16]।"

"सर्जमोटा अ... और आगे क्या?" लड़की ने इतना लम्बा अजीब सा नाम सुन कर पूछा। उसने इस नाम को केंकड़े के सामने कई बार दोहराया "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा", "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा"।"

[16] Sarjmota Amoa Oplem Dadja

"वाह, क्या नाम है? क्या इसी लिये वह चाहती थी कि कोई उसका नाम न जाने? धन्यवाद मिस्टर केंकड़े, मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूँगी।" लड़की ने खुश हो कर जवाब दिया।

इसके बाद उसने अपना कैलेबाश[17] पानी से भरा और घर चल दी। चलते समय वह उस नाम को बार बार दोहराती जा रही थी ताकि वह उसे भूल न सके।

पर बहुत जल्दी ही उसका दिमाग इधर उधर भटकने लगा। वह अपनी लावारिस होने की ज़िन्दगी के बारे में सोचने लगी। फिर वह अपनी ज़िन्दगी अपने माता पिता की ज़िन्दगी से मिलाने लगी।

"मैं अपने माता पिता को हमेशा अपने पास रखूँगी चाहे वे मुझे कितनी भी बुरी तरीके से क्यों न रखें। मॉ ठीक कहती थी — "तुमको मेरे जितना प्यार कोई नहीं कर सकता।"

जब वह अपने ख्यालों में से निकली तो उसको पता चला कि वह तो अपनी दादी का नाम ही भूल गयी थी — "सरगामौन्टा स.." ओह मैं तो दादी का नाम ही भूल गयी। अब मैं क्या करूँ। मुझे तो फिर भूखा रह जाना पड़ेगा। उफ़। यह तो बहुत गड़बड़ हो गयी।"

[17] Dry outer cover of a pumpkin-like fruit which can be used to keep both dry and wet things – mostly found in Africa – see its picture above.

वह थोड़ी देर तक वहीं खड़ी रही और सोचती रही कि अब वह क्या करे – क्या वह नदी पर वापस जाये और उस केंकड़े से दादी का नाम फिर से पूछे? और या फिर वह घर वापस जाये और भूखी रहे?

जल्दी ही उसकी खाना खाने की इच्छा ने ज़ोर पकड़ा और वह नदी की तरफ जाने लगी पर वह नदी की तरफ का लम्बा रास्ता ही भूल गयी। उसने तुरन्त ही अपना पानी का कैलेबाश जमीन पर रखा और उसका पानी गर्म तपती जमीन पर बिखेर दिया।

वहॉ की झाड़ियों को वह पानी पी कर बड़ा आराम मिला। वे उस पानी को पी कर इतनी खुश हुईं कि जब वह पानी सूरज की गर्मी से धरती में बनी दरारों में गया तो कोई भी उनका ताली बजाना और खुश होना सुन सकता था।

खाली कैलेबाश ले कर जब वह लड़की नदी पर गयी तो वह केंकड़ा पहले की तरह से उसकी दादी के नाम के साथ बाहर नहीं आया।

फिर भी वह बाहर आ कर बोला — "मुझे लगता है कि मैंने तुम्हें तुम्हारी दादी का नाम बता कर गलती की क्योंकि तुम तो उसको भूल ही गयीं। जबसे तुम यहॉ से गयी थीं मैं तभी से मैं यह सोचता रहा कि मुझे तुमको उसका नाम नहीं बताना चाहिये था।

तुम्हारी दादी सचमुच में ही बहुत बुरी है और मैं नहीं चाहता कि वह मेरे सबसे बुरे दुश्मन पर भी गुस्सा करे। मुझे लगता है कि

तुम्हारा उसका नाम भूलना एक तरह का शगुन है। कम से कम मैं तो उसके गुस्से से बच गया।"

उस छोटी लड़की ने उससे प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के मुझे उसका नाम बता दो नहीं तो मैं भूखी रह जाऊँगी। उसको इस बात का कभी पता नहीं चलेगा कि यह नाम मुझे तुमने बताया है। यह सब मेरे और तुम्हारे बीच में ही रहेगा।"

उसने केंकड़े को यह बताते हुए कि अगर वह दादी का नाम बिना जाने घर चली जाती तो उसकी दादी उससे किस तरह का बर्ताव करती कई बार केंकड़े से दादी का नाम बताने की प्रार्थना की।

इसके अलावा उसने केंकड़े को यह भी बताया कि अगर दादी को यह पता चला कि नदी पर उसने कितना समय बर्बाद किया तो उसकी उलझन और भी बढ़ सकती थी।

इस तरह उसने केंकड़े को अपनी दादी का नाम फिर से बताने पर मजबूर कर दिया और केंकड़े ने उसे उसकी दादी का नाम फिर से बता दिया।

केंकड़ा बोला — "ठीक है। उसका नाम है "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा"। मैं इस नाम को फिर से कहता हूँ क्योंकि अब इसके बाद तुम मुझे दोबारा यह नाम बताने के लिये यहाँ नहीं पाओगी – "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा"।"

लड़की बहुत खुश हुई और खुश हो कर घर चल दी। इस बार भी वह उस नाम को बार बार दोहराती हुई चली जा रही थी कि उसका दिमाग फिर से भटकने लगा।

पर अबकी बार उसने उसे भटकने से रोका — "नहीं, "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा", "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा" और वह उसे दोहराते हुए घर आ गयी।

शाम को जब वह शाम का खाना बनाने बैठी तो अचानक उसके मुँह से निकल गया "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा", जैसा कि वह नदी से आते समय दोहराती चली आ रही थी।

बुढ़िया ने यह सुन कर उसको गाली दी — "ओ कमीनी बच्ची, मेरा नाम तुझे किसने बताया?"

लड़की झूठ बोल गयी — "किसी ने नहीं।"

बुढ़िया बोली — "किसी ने तो बताया है, कौन है वह?"

लड़की फिर बोली — "नदी ने बताया।"

बुढ़िया ने पूछा — "नदी में से किसने बताया?"

लड़की बोली — "पता नहीं। मुझे तो ऐसे ही पता चला।"

बुढ़िया गुस्से से भर गयी। उसने एक कैलेबाश का बर्तन उठा लिया और नदी की तरफ तेज़ तेज़ भागी। कभी वह तेज़ तेज़ चलती और कभी वह तेज़ तेज़ भागती।

सबको पता चल गया कि आज वह किसी पर अपना गुस्सा उतारने जा रही थी। रास्ते में उसे जो कोई भी मिला वह उसी से

पूछती गयी कि क्या उसको मालूम था कि उसकी पोती को उसका नाम किसने बताया था।

सबने मना कर दिया कि वे इस बारे में कुछ नहीं जानते थे। वह इसी तरह नदी की तरफ भागती चली गयी जब तक वह केंकड़े के पास नहीं पहुँच गयी।

अब क्योंकि हर एक ने मना कर दिया था कि उनको यह पता नहीं था कि उसकी पोती को उसका नाम किसने बताया, तो केंकड़े को पूरा यकीन था कि बुढ़िया को यह पता चल गया था कि उसी ने उसका नाम उसकी पोती को बताया था।

बुढ़िया ने जाते ही केंकड़े से पूछा — "उस छुटकी को मेरा नाम क्या तुमने बताया था?"

केंकड़ा बोला — "हाँ।"

हाँ करते ही केंकड़े को पता था कि अब वहाँ से भागने में ही उसकी भलाई है नहीं तो वह बुढ़िया उसको पीटते पीटते मार ही देगी। सो वह वहाँ से भाग लिया।

पर उस बुढ़िया ने उसका पीछा किया। उसने अपना कैलेबाश पकड़ा और केंकड़े के ऊपर दे मारा। इससे उसका कैलेबाश दो हिस्सों में टूट गया।

उसने उसका आधा हिस्सा उठाया और केंकड़े के पीछे फिर से भागी। जब वह उसके पास तक आ गयी तो उसने कैलेबाश के उस

आधे हिस्से को उसके ऊपर उलटा दे मारा जिससे वह केंक़ड़े के शरीर पर और फिर जमीन में गड़ गया।

वह उस आधे हिस्से को निकालने गयी तो केंकड़ा उस कैलेबाश के आधे टुकड़े को लिये हुए वहॉ से जल्दी से झाड़ी में भाग गया।

इस तरह से कैलेबाश का वह आधा हिस्सा अभी भी उसके शरीर पर लगा हुआ था। इसी वजह से केंकड़े अभी भी अपने शरीर पर कैलेबाश का खोल लिये फिरते हैं।

3 धुँए का बना ताज[18]

यह लोक कथा मध्य अफ्रीका के कैमेरून देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें एक कछुआ अपनी अक्लमन्दी से राजा की बेटी से शादी कर लेता है।

एक बार की बात है कि किसी समय कैमेरून देश में एक राजा रहता था जो अपने राज्य को बड़ी होशियारी से चलाता था। उस राजा के कई बच्चे थे, बेटे भी और बेटियाँ भी। पर उनमें से वह अपनी एक बेटी को बहुत चाहता था क्योंकि वह बहुत सुन्दर थी।

जब वह लड़की बड़ी हुई तो गाँव का हर आदमी उससे शादी करने के लिये आने लगा। और राजा क्योंकि उसको बहुत प्यार करता था तो हमेशा उसको यही लगता था कि कोई भी आदमी उसकी बेटी के लायक नहीं था सो वह उसकी शादी किसी से भी नहीं करना चाहता था।

पर राजा की अब उम्र बढ़ती जा रही थी। हालाँकि वह अपनी बेटी की शादी के बारे में सोच कर ही बहुत दुखी हो जाता था पर फिर भी वह यह जानता था कि एक न एक दिन तो उसको अपनी बेटी की शादी किसी न किसी से तो करनी ही पड़ेगी।

जब उसको लगा कि अब वह ज़्यादा दिनों तक ज़िन्दा नहीं रहेगा तब वह अपने इस दुख से बाहर निकला।

---

[18] The Crown Made of Smoke (Tale No 3) – a Fulani folktale from Cameroon, Central Africa.

एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा — "यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि मैं अपनी बेटी की शादी नहीं करना चाहता पर मेरी उम्र भी अब बढ़ती जा रही है इसलिये मुझे इसके बारे में कुछ करना चाहिये।"

पत्नी बोली — "यह तो तुम जानो। उसकी शादी या तो तुम अपने आप करो और अपनी ऑखों से देखो नहीं तो जब तुम मर जाओगे तो उसकी शादी तुम्हारे बाद तुम्हारा बेटा कर देगा। अब तुम यह बताओ कि तुम उसके लिये कैसा पति चाहते हो?"

"न मैं उसमें पैसा चाहता हूॅ, न ही मैं उसमें बहुत ताकत चाहता हूॅ और न ही उसमें बहुत सुन्दरता चाहता हूॅ। मैं तो बस यही चाहता हूॅ कि वह बहुत अक्लमन्द हो।

क्योंकि अगर वह अक्लमन्द है तो उसके पास पैसा भी बहुत होगा, वह ताकतवर लोगों से भी घिरा रहेगा, और वह सारी दुनियॉ पर राज भी कर सकेगा और मेरी बेटी को खुश रखेगा।"

बहुत सोचने के बाद राजा के दिमाग में एक तरकीब आयी। उसने एक मुकाबला रखने की सोची जो सबके लिये खुला था, यहॉ तक कि जानवरों के लिये भी।

उसने घोषित किया — "मैं तुममें से उसको अक्ल में अपने बराबर समझूॅगा जो मेरे लिये एक धुॅए का ताज बना सका। उसके ऊपर से मैं उस आदमी को अपनी राजकुमारी का हाथ और आधा राज्य भी दूॅगा।"

इसके बाद उसने इस मुकाबले के लिये अपने नौकरों को गॉव के चौराहे पर एक बहुत बड़ी आग बनाने का हुक्म दिया। नौकरों ने सूखी और ताज़ा लकड़ी ला कर गॉव के चौराहे पर आग लगा दी जिससे बहुत सारा धुँआ हो गया।

सलाहकार मुकाबले में हिस्सा लेने वालों के आने का इन्तजार करने लगे। वे सोच रहे थे कि कौन ऐसा बेवकूफ होगा जो राजा के इस मुकाबले में हिस्सा लेगा। कौन बना सकता है धुँए का ताज?

कुछ बोले — "राजा तो अपनी बेटी की शादी करना ही नहीं चाहता और यह उसने इस तरह के मुकाबले को रख कर साबित कर दिया है।"

पर इस तरह के मुकाबले के बाद भी राजकुमारी से शादी करने की और आधा राज्य लेने की इच्छा बहुत लोगों में अभी भी बहुत ज़्यादा थी।

इस मुकाबले में हिस्सा लेने वाले सबसे पहले लोग वे थे जिनको राजा ने पहले मना कर दिया था। उनको लगा कि राजकुमारी को पाने का यह एक अच्छा मौका है। उन्होंने धुँए का ताज सिलने की बहुत कोशिश की परन्तु वे उसे नहीं सिल सके।

उनके बाद गॉव के और लोग आये। एक आदमी ने दूसरे से कहा — "तुमको तो पहले ही मना कर दिया था। तुमको नहीं मालूम कि कब यह कोशिश छोड़नी चाहिये?"

दूसरे ने जवाब दिया — "अगर तुमने निशाना चूकने की वजह से शिकार करने की कोशिश छोड़ दी तो तुम अपने आपको शिकारी नहीं कह सकते। बस तुम बिना निशाना लगाये यह इनाम वाला खेल देखो।"

जब सारे आदमी अपनी अपनी कोशिशों में नाकामयाब हो गये तब जानवरों की बारी आयी।

सबसे पहले शेर आया। वह गुर्राया और अपने पिछले पैरों पर कूदा। उसने अपने दाँत दिखाये, नाक सिकोड़ी, पंजे भींचे और धुँए को पकड़ने की कोशिश की पर वह ताज सिलने लायक धुँआ नहीं पकड़ सका।

उसने तब तक कोशिश की जब तक वह थक कर चूर नहीं हो गया। फिर वह हाँफने लगा और गिर गया।

उसके बाद हयीना[19] आया और बोला — "दुलहा अक्लमन्द होना चाहिये ताकतवर नहीं। जहाँपनाह, मैं बनाऊँगा आपके लिये धुँए का ताज।"

वह धुँए पर चिल्लाया। उसने धुँए को पकड़ने के लिये उसके चारों तरफ कई बार चक्कर भी काटा। उसने धुँए को पकड़ने की कितनी कोशिश की पर धुँआ उसकी पकड़ में ही नहीं आया।

[19] Hyena – a tiger like animal. See its picture above.

जब वह उसके चारों तरफ भागते भागते थक गया तो उसने भी धुँए का ताज बनाने की कोशिश छोड़ दी।

फिर हाथी आया और बोला — "मैं धरती का सबसे अक्लमन्द जानवर हूँ। मैं आपके लिये धुँए का ताज सिलूँगा।" कह कर वह आगे पीछे हुआ। उसने अपनी सूँड़ से धुँए को पिया और फिर एक उसका एक छल्ला छोड़ दिया जो जल्दी ही गायब भी हो गया।

उसने भी बहुत कोशिश की पर वह भी धुँए का ताज सिलने में नाकामयाब रहा। और बाकी जानवरों ने भी कोशिश की पर वे सब भी राजा के लिये धुँए का ताज सिलने में नाकामयाब रहे। लोग उनके ऊपर बहुत हँसे।

इसके बाद आया कछुआ। उसने राजा को प्रणाम किया — "राजा बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहे। जहाँपनाह, मैं आपके लिये धुँए का ताज सिलूँगा।" भीड़ में खड़ा हर आदमी उस पर हँस पड़ा और उस पर रेत उछालने लगा।

उन्होंने सोचा — "यह धीरे चलने वाला जानवर यह काम कैसे कर सकता है जब इतने ताकतवर जानवर जैसे हाथी, शेर, हयीना और बहुत सारे मजबूत जानवर नहीं कर सके। लगता है यह तो केवल हमारा समय बरबाद करने ही आया है।"

कछुआ बोला — "मैं जानता हूँ कि आपके सब आदमियों और जानवरों ने कोशिश कर के देख ली है और वे सब उस काम में

नाकामयाब रहे हैं पर जहॉ तक मेरा सवाल है मुझे यह मानने में बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा है कि देश के सारे जानवर नाकामयाब हो गये हैं। क्योंकि अभी तो मैं बचा हूॅ।

पर फिर भी मैं हयीना की यह बात मानता हूॅ कि दुलहे को अक्लमन्द होना है ताकतवर नहीं। और इसी लिये मैं यहॉ हूॅ।"

यह सुन कर वहॉ खड़ी भीड़ में कुछ फुसफुसाहट हुई। उधर राजा भी कुछ मुस्कुराया और उसने फुसफुसाती भीड़ को चुप किया।

कछुआ आगे बोला — "क्योंकि आप खुद एक अक्लमन्द आदमी हैं जहॉपनाह, आप जानते हैं कि धुॅए का ताज सिलने में काफी समय लगेगा। अगर आप चाहें तो जहॉपनाह, धुॅए का ताज सिलने के लिये मुझे सात बाजार[20] दिन दें।"

राजा बोला — "यकीनन, तुम जितना चाहो उतना समय ले सकते हो।"

कछुआ आगे बोला — "मैं तो भूल ही गया कि मुझे इस काम के लिये कुछ खास सामान की भी जरूरत पड़ेगी। राजा होने के नाते आप मेरे लिये वह सब तो कुछ कर ही सकते हैं जो मैं चाहूॅ। पर क्या आप मुझे इसका वायदा करेंगे कि आप मुझे वह सब कुछ देंगे जिसकी मुझे जरूरत होगी?"

---

[20] Market days – in villages markets are organized on daily, weekly or bi-weekly, thus this might mean that the tortoise asked for a week (seven market days) or seven weeks, but possibly one week.

राजा ने उसको विश्वास दिलाया — "तुमको इस काम के लिये जो कुछ भी चाहिये तुम ले सकते हो।"

कछुआ बोला — "सबको यह मालूम हो कि राजा ने इस काम के लिये मुझे वह सब देने का वायदा किया है जो मुझे इस काम के लिये जरूरत होगी।"

राजा बोला — "यह बात पक्की है और ऐसा ही होगा।" इस के बाद कछुआ, आदमी और सब जानवर वहॉ से चले गये।

सात बाजार दिन के बाद सब लोग यह सोचते हुए फिर वहीं उस चौराहे पर जमा हुए कि आज कछुए का अच्छा बेवकूफ बनेगा।

पर कछुआ तो भीड़ में था ही नहीं। उसको वहॉ न देख कर लोगों को भी बिल्कुल आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि उनको यकीन था कि वह अब तक भी धुँए का ताज नहीं सिल पाया होगा और इसी लिये तो वह वहॉ था भी नहीं।

तभी कछुआ धीरे धीरे रेंगता हुआ चौराहे के बीच में आ कर राजा की तरफ बढ़ा। सबने देखा कि उसके हाथों में तो कोई धुँए का ताज था ही नहीं सो वे बहुत ज़ोर से हॅस पड़े और उसका इतना मजाक बनाया कि हॅसते हॅसते उनके फेंफड़ों में दर्द हो गया।

राजा बोला — "मैं देख रहा हूँ कि तुम भी और लोगों की तरह से धुँए का ताज बनाने में नाकामयाब रहे।" फिर वह खुद भी इतना हॅसा कि बाकी सब लोग भी हॅसने लगे।

कछुआ बोला — "नहीं, ऐसा नहीं है महाराज। आपको आपका ताज मिलेगा।" राजा की तो यह सुन कर बोलती बन्द हो गयी पर कछुए ने अपनी बात जारी रखी।

"आपने जो चीज़ मुझसे माँगी है वह बड़ी खास है पर वह करीब करीब पूरी हो चुकी है। जब मैंने रात को भगवान से बात की कि यह काम इतना समय क्यों ले रहा है तो उन्होंने मुझे बताया कि धुँए का ताज सिलने के लिये एक खास तरीके के धुँए की जरूरत है। वह इस मामूली धुँए से नहीं बनेगा।"

राजा ने पूछा — "वह किस तरीके का धुँआ? तुम मुझे बताओ तो मैं तुमको वह धुँआ ला कर दूँगा।"

कछुआ फिर बोला — "हम लोग गलत तरीके से काम कर रहे हैं। लकड़ी की आग से जो धुँआ निकलता है उससे काम नहीं चलेगा।

एक नयी आग शुरू करवायी जाये। फिर आप अपने सारे आदमियों के सिर मुँड़वायें और वे बाल उस आग में डाले जायें। उस आग से जब तक धुँआ निकलेगा तब तक आपको अपना धुँए का ताज मिल जायेगा।"

राजा का हुक्म। तुरन्त ही एक नयी आग लगवायी गयी। लोगों के सिर मुँड़वाये गये और उनके बाल उस आग में डाले गये। पर जैसे ही उनके वे बाल उस आग में डाले गये वे सारे बाल तो तुरन्त ही जल गये। उनको जलने में तो एक पल भी नहीं लगा।

इसके अलावा वह धुँआ भी इतना देर नहीं रुका कि कछुए को उसको इकट्ठा करने का समय मिल जाता। उसका ताज सिलना तो दूर की बात थी।

कछुआ बोला — "मेहरबानी कर के और धुँआ दीजिये।"

पर राजा के लोग तो अपने सिरों पर इतनी जल्दी और बाल नहीं उगा सकते थे कि वे कछुए की माँग पूरी कर सकते। अब राजा के पास सिवाय इसके और कोई चारा नहीं था कि वह अपनी शर्त में कछुए को जिता सके।

राजा बोला — "सचमुच में इस धुँए के ताज का कोई फायदा नहीं है। और धुँए का ताज चाहिये भी किसको? मेरे पास तो मेरा अपना सोने चाँदी का ताज है।

मुझे पता है कि तुम एक बहुत ही अक्लमन्द जानवर हो। अपने वायदे को रखते हुए मैं अपनी बेटी की शादी तुम्हारे साथ करता हूँ।"

राजा ने अपनी बेटी की शादी उस कछुए से कर दी। उसने अपना राज्य भी आधा आधा बाँट दिया। एक आधा उसने अपने पास रख लिया और दूसरा आधा कछुए को दे दिया।

जिस आधे राज्य पर वह राजा खुद राज कर रहा था वह आदमियों का राज्य कहलाया और दूसरा आधा राज्य जो उसने कछुए को दिया था वह जानवरों का राज्य कहलाया।

इसी लिये आज भी कछुआ सबसे ज़्यादा अक्लमन्द जानवर कहलाया जाता है। तबसे वह बड़ी अक्लमन्दी से अपने राज्य पर राज कर रहा है।

कभी कभी शेर, क्योंकि सब जानवरों में वही सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर है उसकी गद्दी ले लेता है पर फिर भी कछुआ सबसे ज़्यादा अक्लमन्द है और इसी वजह से वह उसे हरा कर अपना राज्य उससे वापस ले लेता है।

4 तैसे के लिये चाल[21]

यह बहुत साल पहले की बात है कि एक भैंस और एक नर गिलहरी आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। वे एक साथ अपना खाना इकट्ठा करते थे और एक साथ ही अपनी खेती भी किया करते थे।

पर यह नर गिलहरी बहुत चालाक था और अक्सर भैंस के साथ उस काम में कोई न कोई चाल खेलता था जो वह बेचारी कर नहीं सकती थी।

एक बार की बात है कि उन दोनों के खेत में खेती बहुत कम हुई और नर गिलहरी के पास खाने के लिये बहुत कम गिरी[22] थी। दूसरी तरफ भैंस को थोड़ी बहुत घास कहीं न कहीं से मिल ही जाती थी।

सो एक दिन दोनों दोस्त खाना ढूँढने निकले। उस दिन दिन बहुत ही गर्म था और उनको खाना नहीं मिल रहा था। नर गिलहरी को रात के लिये खाना चाहिये था और उसको प्यास भी लगी थी।

---

[21] Tricks for Tat (Tale No 4) – a Bantu folktale from Cameroon, Central Africa.

[22] Translated for the word “Nuts”. See their picture above.

नर गिलहरी हमेशा भैंस का दूध पीना चाहता था पर उसको पता था कि वह उसे अपना दूध नहीं पीने देगी। वे सारा दिन बाहर थे और गर्मी बहुत थी। नर गिलहरी जितना ज़्यादा भैंस के थनों की तरफ देखता उसको उतनी ही ज़्यादा प्यास लग आती।

नर गिलहरी ने देखा कि भैस के थनों में अब तक काफी दूध भर गया था। वह उसके थनों में अपना मुँह लगाने के लिये बहुत देर तक इन्तजार नहीं कर सका सो उसने भैंस का दूध पीने की एक तरकीब सोची। वह भैंस से बोला — "मैं तुमसे शर्त लगाता हूँ कि मैं तुमसे ज़्यादा तेज़ भाग सकता हूँ।"

भैंस ने उसका मजाक बनाते हुए कहा — "इन छोटे छोटे पॉवों से? मैं तो अपनी ऑखें बन्द कर के भी तुमसे ज़्यादा तेज़ भाग सकती हूँ।"

नर गिलहरी बोला — "ठीक है तो मेरी शर्त मानो और साबित कर दो कि तुम मुझसे ज़्यादा तेज़ भाग सकती हो। तुम वे दो बड़े पेड़ देख रही हो न? देखते हैं कि उनमें से दूसरे पेड़ के पास जल्दी कौन पहुँचता है।

हम लोग जितनी तेज़ भाग सकते हैं उतनी तेज़ भागेंगे और पहिले पहले पेड़ के चारों तरफ चक्कर काटेंगे फिर दूसरे पेड़ की तरफ जायेंगे। जो भी दूसरे पेड़ तक पहिले पहुँच जायेगा वही जीतेगा।"

भैंस बोली — "यह काम तो आसान है। मैं तुम्हारा स्वागत करने के लिये वहॉ मौजूद रहूँगी।"

तब भैंस ने अपना पैर जमीन पर मारा और अपना दाहिना पॉव उठा कर हिला कर दौड़ शुरू होने की घोषणा की। पर जब तक भैंस अपना पैर जमीन पर वापस ले कर आयी नर गिलहरी तो उससे पहले ही दौड़ चुका था।

वह भैंस से ज़्यादा तेज़ था। वह सीधा पहले पेड़ के पास गया और फिर बिजली की तेज़ी से उसके चारों तरफ चक्कर काटा, और वहॉ से दूसरे पेड़ की तरफ दौड़ गया।

भैंस को तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसको लगा कि नर गिलहरी पेड़ के बीच से हो कर भाग गया था।

आखिर में जब वह पहले पेड़ के पास पहुँची तो वह अपने सींगों के साथ उस पेड़ में फॅस गयी। उसके सींगों का ज़ोर इतना ज़्यादा था कि उसके सींग पेड़ में घुस गये और इस वजह से वह पेड़ हिल गया और उसके फल नीचे गिर गये।

वह चिल्लायी और जितनी ज़ोर से वह अपना सींग खींच सकती थी उसने खींचने की कोशिश की पर वह उसे पेड़ से नहीं खींच सकी।

नर गिलहरी भैंस के पास आया और उससे बोला — "मैं न कहता था कि मैं तुमसे ज़्यादा तेज़ हूँ।"

भैंस बोली — "मैं मान गयी। तुम जीत गये। अब ज़रा तुम इस पेड़ से मेरा सींग निकालने में तो मेरी सहायता करो।"

नर गिलहरी ने बहुत कोशिश की पर वह भैंस का सींग उस पेड़ से नहीं निकाल सका – क्योंकि अगर वह निकाल देता तो उसका सारा प्लान ही बिगड़ जाता।

सो उसने वहीं पास में जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा साफ किया और लेट गया। वह भैंस के भूखे होने का इन्तजार कर रहा था।

गिरे हुए फलों की खुशबू चारों तरफ महक रही थी और भैंस उस खुशबू को सहन नहीं कर पा रही थी। उसने चारों तरफ सूँघा पर वह किसी भी फल तक नहीं पहुँच सकी।

जब नर गिलहरी अपनी भूख को और नहीं रोक सका तो वह भैंस का दूध दुहने गया। पर जैसे ही उसने भैंस के थनों को छुआ भैंस ने अपना पैर मार कर उसको पेड़ की तरफ फेंक दिया।

जब नर गिलहरी को उस पेड़ की चोट से थोड़ा होश आया तो वह भैंस से कुछ समझौता करने आया।

उसने कुछ फल उठाये और उनको भैंस की नाक के आगे घुमाते हुए बोला — "इस बात का कोई मतलब नहीं है कि हम दोनों यहाँ भूखे मरें। तुमको भी भूख लग रही है और तुम हरी घास और ये रसीले फल खाने की लिये बेचैन हो रही हो।

मैं न तो घास खा सकता हूँ और न ही फल। काश ये गिरी होते। पर तुम्हारे पास दूध है जो मैं पी सकता हूँ और मैं तुमको ये फल खाने को दे सकता हूँ।

जैसा कि मुझे लग रहा है कि मुझे तुम्हारी जितनी जरूरत है उससे कहीं ज़्यादा तुम्हें मेरी जरूरत है। मैं तुमको यहीं छोड़े जा रहा हूँ और मैं घर जा रहा हूँ।"

जैसे ही वह जाने के लिये मुड़ा उसने कुछ फल जो भैंस के पास पड़े थे उनको पैर से इतनी ज़ोर से ठोकर मारी कि वे भैंस से इतनी दूर जा कर पड़े जहाँ तक वह पहुँच ही नहीं सकती थी।

भैंस बोली — "क्या तुम मुझे सचमुच ही यहाँ अकेला छोड़ कर जा रहे हो?"

नर गिलहरी बोला — "देख लो।" और फिर जाने के लिये मुड़ गया।

भैंस बोली — "अच्छा अच्छा। अगर तुम मुझे खाने के लिये थोड़ी घास और फल दो तो तुम मेरा थोड़ा सा दूध पी सकते हो।"

नर गिलहरी ने भैंस के लिये थोड़ी सी ताजा घास काटी और थोड़े से पके हुए रसीले फल उठाये और उनको भैंस को खाने को दिये।

जब भैंस घास और फल खा रही थी तो नर गिलहरी ने उसका थोड़ा सा दूध पिया और एक बालटी भर कर घर ले जाने के लिये

भी जमा कर लिया। उसके बाद वह यह कह कर घर चला गया कि वह उसके लिये सहायता माँगने जा रहा था।

जब वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने उस दूध से बहुत ही स्वादिष्ट दलिया बनाया। नर गिलहरी और उसका परिवार और उनके मेहमान मिसेज़ हयीना ने उस दिन बहुत अच्छे से खाना खाया।

मिसेज़ हयीना बोली — "यह तो बहुत ही अच्छा खाना था। तुमको इतना अच्छा दूध कहाँ से मिला?"

गिलहरी बोली — "मेरे पति ले कर आये हैं। वह बहुत ही अच्छे शिकारी हैं। वह रोज नया नया खाना ले कर आते हैं। आज वह बड़ी मुश्किल से मिलने वाला भैंस का दूध ले कर आये हैं। क्या तुम सोच सकती हो कि उन्होंने उसका यह दूध कैसे दुहा?"

खाना खाने के बाद गिलहरी ने थोड़ा सा दलिया मिसेज़ हयीना को उसके परिवार के खाने के लिये भी दे दिया।

जब मिसेज़ हयीना घर पहुँची तो उसने वह दलिया अपने पति को खाने के लिये दिया। हयीना को वह दलिया इतना अच्छा लगा कि उसने यह जानना चाहा कि उसकी पत्नी को यह दलिया कहाँ से मिला।

उसकी पत्नी ने उसको चिढ़ाया — "दूसरे लोग सारा दिन या तो शिकार करते हैं या फिर खेती करते हैं। शाम को वे अपनी पत्नियों के लिये रोज़ रोज़ नया शिकार ले कर आते हैं।

कभी वे अपने घर दलिया बनाने के लिये बहुत बढ़िया दूध ले कर आते हैं, भैंस का भी। पर तुम तो केवल घर में ही पड़े रहते हो और कुछ करते भी नहीं। यह दलिया गिलहरी ने मुझे दिया है। उसका पति अपने खेत से भैंस का दूध ले कर आया है।"

यह सुन कर हयीना चुप नहीं बैठ सका। अगले दिन मुर्गे के बॉग देने से पहले ही वह उठा और नर गिलहरी के घर पहुँच गया। उसने जा कर नर गिलहरी के घर का दरवाजा खटखटाया तो नर गिलहरी ने घर का दरवाजा खोला।

सोते हुए नर गिलहरी ने उससे पूछा — "कहो कैसे आना हुआ हयीना भाई?"

हयीना बोला — "क्या तुमको इस बात से कभी परेशानी नहीं होती कि हम लोग पड़ोसी हैं और हम लोग कोई भी काम एक साथ नहीं करते?"

दरवाजा बन्द करने के लिये उत्सुक नर गिलहरी बोला — "नहीं मुझे तो ऐसा नहीं लगता।"

हयीना बोला — "रुको ज़रा। आज हम लोग अच्छे पड़ोसियों की तरह शिकार करने साथ साथ चलें?"

नर गिलहरी ने हयीना को टालने की बहुत कोशिश की। उसने कहा कि यह विचार कुछ काम का नहीं है क्योंकि हयीना अपने ही तरीके का शिकार करना पसन्द करते हैं और गिलहरी शिकार करता नहीं।

पर जब हयीना ने बहुत ज़ोर दिया तो नर गिलहरी के पास और कोई चारा नहीं रहा और वह हयीना के साथ शिकार पर चलने को राजी हो गया।

नर गिलहरी का हयीना के साथ शिकार करना इतना ही बेकार था जितना कि भैंस के साथ शिकार करना। पर नर गिलहरी हयीना को अच्छी तरह से जानता था इसलिये वह अपने दूध लाने की जगह को उससे दूर ही रखना चाहता था।

पर वह इस बात से भी डरता था कि अगर वह भैंस से बहुत दिन तक दूर रहा तो भैंस भूख और प्यास से मर भी सकती थी। सो वह हयीना को भैंस के पास ले गया।

नर गिलहरी ने भैंस से पूछा — "कैसी हो? मैं तुम्हारे लिये सहायता ले कर आया हूँ।"

भैंस बोली — "तो अपना काम करो और मुझे यहाँ से आजाद करवाओ।"

एक दिन से ज़्यादा हो गया था और भैंस का दूध नहीं दुहा गया था। सो जैसे ही हयीना ने उसके दूध से भरे थन देखे उसके मुँह में भी पानी आने लगा।

जैसे ही नर गिलहरी भैंस को उस पेड़ से आजाद करने लगा कि हयीना ने नर गिलहरी को पकड़ लिया और उसे बाँध दिया।

भैंस ने यह सोचते हुए कि आगे क्या होने वाला है अपने खुर जमीन पर मारने शुरू कर दिये और चिल्लाना शुरू कर दिया। जब

वह चिल्ला रही थी तो हयीना ने उसको दुहना शुरू कर दिया और भैंस ने उसको अपने पैर से ठोकर मारनी शुरू कर दी।

नर गिलहरी बोला — "हयीना भाई, इस तरह से काम नहीं चलेगा। इसको कुछ ताज़ा हरी घास और फल खाने को दो ताकि यह शान्त हो जाये। तब तुम इसका जितना चाहे दूध निकाल सकते हो।"

तुरन्त ही हयीना ने भैंस के लिये कुछ ताजा घास काटी और फल इकट्ठे किये और उसको खाने को दिये। जब भैंस उन्हें खा रही थी तो हयीना ने भी पहिले पेट भर कर उसका दूध पिया और फिर उसके दूध से अपनी बालटी भी भर ली।

नर गिलहरी बोला — "क्या यह ठीक रहेगा कि मैं तो तुमको यहाँ खाने के लिये ले कर आऊँ और तुम मुझको एक मुजरिम की तरह से बाँध कर यहाँ छोड़ जाओ?"

हयीना बोला — "नहीं, ऐसा तो नहीं है पर ज़िन्दगी भी हर समय बहुत अच्छी नहीं होती।"

नर गिलहरी बोला — "तुम ठीक कहते हो। पर अगर तुम मुझे खोल दोगे तो मैं तुम्हारी दूध की बालटी तुम्हारे घर तक ले जा सकता हूँ। तुम्हारे जैसे अच्छे शिकारी के लिये यह ठीक नहीं है कि तुम अपना खाना खुद ले कर जाओ।"

हयीना ने नर गिलहरी की सलाह के ऊपर कुछ विचार किया। हयीना जितना ज्यादा उसकी सलाह पर सोच रहा था नर गिलहरी उसको अपने खोलने के लिये उतना ही उकसा रहा था।

नर गिलहरी बोला — "ज़रा सोचो, तुम्हारी इज़्ज़त कितनी बढ़ेगी जब लोग यह सुनेंगे कि तुमने अकेले ही भैंस को उसका दूध दुहने के लिये पछाड़ दिया।"

हयीना बोला — "हॉ यह तो है।"

नर गिलहरी बोला — "पर इस बात के लिये तुमको एक गवाह भी तो चाहिये न?"

नर गिलहरी की यह चाल काम कर गयी और हयीना ने उसको खोल दिया।

हयीना बोला — "यह लो यह दूध की बालटी। यह भी हो सकता है कि घर पहुॅच कर मैं इसमें से थोड़ा सा दूध तुमको भी दे दूॅ।"

जब दोनों हयीना के घर चले तो नर गिलहरी ने अपना चाकू लिया और हयीना की बालटी में एक छोटा सा छेद कर दिया। फिर उसने हयीना की बालटी अपनी बालटी के ऊपर रख ली। इससे हयीना की बालटी में से दूध धीरे धीरे उसकी अपनी बालटी में आने लगा।

वे लोग चलते रहे और जब तक वे अपने घर पहुॅचे तो हयीना की बालटी का सारा दूध नर गिलहरी की बालटी में आ गया था।

जब नर गिलहरी अपने घर जाने लगा तो उसने हयीना की बालटी जिसमें अब केवल दूध के झाग ही रह गये थे सँभाल कर हयीना को दे दी।

उसने हयीना से कहा — "ताजा दूध एक लड़की की तरह होता है उसकी ठीक से देखभाल करनी चाहिये नहीं तो वह मुँह बनायेगा, उफान लायेगा। इसलिये ख्याल रखना कि जब तुम घर जाओ तो तुमको कोई नमस्ते न करे वरना यह दूध झाग में बदल जायेगा।"

हयीना तो दूध पा कर बहुत ही खुश था। उसने नर गिलहरी से बालटी ले ली और उसे ले कर अपने घर चला।

जब वह अपने घर पहुँचा तो उसकी पत्नी दौड़ी दौड़ी आयी और उसको नमस्ते की और बोली — "आइये आइये । लगता है कि आज आप मेरे लिये दूध ले आये हैं।"

हयीना बोला — "नहीं नहीं। तुमको मुझे नमस्ते नहीं करनी चाहिये थी। इससे तुमने मेरा सारा दूध झाग में बदल दिया है।"

हयीना ने अपनी पत्नी को इसके लिये जिम्मेदार ठहराते हुए अपनी बालटी उलटी कर दी और उसको दिखा दिया कि उसके उसको नमस्ते करने की वजह से अब उस बालटी में केवल झाग ही थे दूध नहीं।

वह अपनी पत्नी पर बहुत गुस्सा हुआ और उनकी सारी रात एक दूसरे से बहस करते निकल गयी। जब वे लड़ते लड़ते थक गये तो हयीना लेट गया और कुछ सोचने लगा।

उसके दिमाग में एक विचार आया कि उसको वापस जाना चाहिये और उस भैंस को मार देना चाहिये। सो सुबह होते ही वह वहाँ वापस गया और जा कर भैंस को मार दिया।

फिर उसने उसे काटा और उसका माँस घर ले आया। उसने उसके माँस को अपनी अँगीठी पर भूनने के लिये रख दिया।

उस दिन बाद में जब नर गिलहरी भैंस के पास उसका और दूध लेने गया तो देखा कि भैंस तो गायब थी। केवल उसका खून ही वहाँ पड़ा था। उसको तभी पता चल गया कि हयीना ने उसको मार दिया था।

गुस्सा हो कर नर गिलहरी घर वापस आ गया। घर बैठ कर वह कोई ऐसी तरकीब सोचने लगा जिससे कि वह हयीना से अपनी लूट वापस ले सके। रात को वह हयीना के घर गया और उसके घर के दरवाजे पर जा कर मरे जैसा लेट गया।

जब हयीना का बेटा रात को घर के दरवाजे का ताला लगाने गया तो उसने अपने घर के दरवाजे के पास किसी को लेटे देखा। डर कर वह अपने पिता के पास भागा और बोला — "पिता जी, दरवाजे पर तो कोई लेटा है और वह कुछ बोलता भी नहीं है।"

वह अपने बेटे पर बहुत गुस्सा हुआ और उसको बहुत बुरा भला कहा। फिर उसने अपनी पत्नी को भेजा। वह भी दरवाजे पर आयी और उसको भी जब उस शक्ल से कोई जवाब नहीं मिला तो वह भी डर गयी और जल्दी से घर के अन्दर वापस चली गयी।

उसने अपने पति से कहा — "तुम्हारा बेटा ठीक कहता है जी। दरवाजे पर कोई है जो न तो हिलता है और न ही बोलता है।"

वह चिल्लाया — "तो मेरा भाला ले कर आओ। वहाँ पर जो कोई भी है उसको मुझे जवाब तो देना ही पड़ेगा।"

सो वह अपना भाला ले कर दरवाजे की तरफ उससे लड़ने के लिये चला। जब उसने उसे अपने भाले से धक्का दिया तो उसको पता चला कि वह तो नर गिलहरी था और वह तो मरे हुए का बहाना बनाये पड़ा था।

वह फिर बोला — "आज मेरा दिन अच्छा है। इसको मारने के लिये तो मुझे एक उँगली भी नहीं उठानी पड़ी।"

कह कर उसने उस नर गिलहरी को उठाया और उसको अपने घर के अन्दर ले गया। उसने उसको भी अपनी अँगीठी पर रख दिया जहाँ भैंस का माँस भुन रहा था और सोने चला गया।

जब हयीना और उसका परिवार सो गया तो नर गिलहरी उठा। रात भर हयीना और उसका परिवार आग के अंगारों पर भैंस के माँस की चर्बी के गिरने की आवाज सुनता रहा। असल में उनको उस रात ठीक से नींद आयी ही नहीं।

पर वे जितनी भी देर सोये, नर गिलहरी के लिये उतनी ही देर उस भैंस का माँस वहाँ से अपने घर ले जाने के लिये काफी थी।

रात भर ठीक से न सोने की वजह से और फिर ज़्यादा देर तक सोने की वजह से हयीना को भैंस के माँस के सपने बहुत आये। सो

जैसे ही हयीना जागा वह यह देखने के लिये अपनी अँगीठी के पास गया कि वहाँ माँस है या नहीं। लो वहाँ तो उसकी अँगीठी खाली पड़ी थी।

यह देख कर हयीना को बहुत गुस्सा आया। पर क्योंकि वह नर गिलहरी भी वहाँ से जा चुका था तो उसको यकीन हो गया कि वह नर गिलहरी ही भैंस का सारा माँस चुरा कर ले गया था।

सो वह भी रात को नर गिलहरी के घर के दरवाजे के सामने जा कर मरे हुए की तरह लेट गया।

जब नर गिलहरी का बेटा रात को अपने घर का दरवाजा बन्द करने गया तो वहाँ हयीना को लेटा देख कर बहुत डर गया और अपने पिता के पास भागा गया।

वह डर से काँपते हुए हकला कर बोला — "पिता जी, दरवाजे पर तो एक बहुत बड़ा शैतान पड़ा हुआ है। वह कुछ बोलता नहीं। वह तो ऐसा लगता है...।"

"अपने आपको सँभालो बेटे। बताओ तो वह है क्या?"

पर नर गिलहरी का बेटा कुछ नहीं बता सका तो उसे खुद ही बाहर आना पड़ा।

नर गिलहरी बाहर आया तो उसको देख कर समझ गया कि वह हयीना था सो उसने अपनी पत्नी की तरफ देखा और उससे इतनी ज़ोर से बोला कि हयीना भी सुन ले — "देखो मेरा जादुई

चाकू[23] लो जो अपने आप काटता है और दरवाजा खोल कर उसे बाहर फेंक दो तो वहाँ जो कुछ भी है वह उसको काट कर फेंक देगा।" हयीना तो यह सुनते ही बहुत डर गया और उठ कर अपने घर भाग गया।

किसी चालाक आदमी के लिये यही अच्छा है कि वह अपने जैसे आदमियों के साथ ही रहे ताकि जब वह मरे तो उन लोगों को पता रहे कि उसे किस तरह से गाड़ना है।

[23] Translated for the word "Matchet" – matchet is a long sword type knife used to cut grass in African countries. See its picture above.

5 फ़ोरीवा के मोती[24]

बहुत साल पहले की बात है कि एक बार पश्चिमी अफ्रीका के आइवरी कोस्ट देश के दो गॉवों में लड़ाई हुई। उनमें से एक गॉव में एक आदमी अपनी पत्नी और बेटी के साथ रहता था।

उनके क्योंकि वह अकेला ही बच्चा था इसलिये वे उसको बहुत प्यार करते थे और उसकी बहुत अच्छी तरह देखभाल करते थे।

सो जब लड़ाई छिड़ी तो उन्होंने अपनी बेटी के लिये गॉव की एक सुरक्षित जगह पर खूब मोटी मिट्टी की छत की झोंपड़ी बनवायी और उसको उस झोंपड़ी में रख दिया।

वहॉ उन्होंने उसके लिये वे सारी चीज़ें रख दीं जिनकी उसको कभी भी जरूरत पड़ सकती थी। फिर उस लड़की का पिता लड़ाई पर चला गया और उसकी मॉ खेतों पर काम करने चली गयी।

उन्होंने उस बच्ची को उस झोंपड़ी में बन्द कर दिया था और उससे कह दिया था कि वह अन्दर से उसका ठीक से ताला लगा कर रखे।

वे नहीं चाहते थे कि उनकी बेटी अपनी छिपी हुई जगह से बाहर आ कर किसी खतरे में पड़े इसलिये उन्होंने उससे कहा कि वह न तो किसी से कुछ कहे और न ही किसी के लिये दरवाजा खोले।

[24] Foriwa's Beads (Tale No 5) – a folktale from Ivory Coast, West Africa.

जब उसकी मॉ उसके लिये खाना ले कर आती तो वह एक गाना गाती थी –

फ़ोरीवा, मेरी बेटी, मैं तुम्हारी मॉ हूँ मुझे अन्दर आने दो अब खाने का समय हो गया है

फ़ोरीवा की मॉ रोज अपनी बेटी के लिये खाना ले कर आती और वही गीत गाती। फ़ोरीवा अपनी मॉ की आवाज पहचान जाती और उसके लिये दरवाजा खोल देती।

यह लड़ाई काफी दिनों तक चलती रही सो फ़ोरीवा भी अपनी उस खास झोंपड़ी में बहुत दिनों तक अकेली रहती रही। पर अब वह अपने इस अकेले रहने से बहुत तंग आ गयी थी।

जंगली जानवर भी अपने अपने घर छोड़ कर कहीं कहीं चले गये थे। अब वे अपना खाना ढूँढने के लिये बस्तियों में भी जाने लगे थे। वहॉ जा कर वे घरेलू जानवरों को मार डालते और कभी कभी तो आदमियों को भी खा जाते।

एक दिन एक कछुआ खाने की खोज में निकला तो वह फ़ोरीवा की झोंपड़ी की तरफ आ निकला। जब वह चल रहा था तो उसके चलने से उसके पैरों के नीचे सूखे पत्तों की चरमराने की आवाज हो रही थी।

फ़ोरीवा इस आवाज से डर गयी। पर धीरे धीरे अपने डर पर काबू पाते हुए उसने गाया —

कौन जानवर यहॉ से जा रहा है, फ़ोरीवा के पीछे से
कौन जानवर यहॉ से जा रहा है, फ़ोरीवा के पीछे से

जैसे ही कछुए ने इस गीत को सुना तो उसने उस गीत का जवाब दिया —

मेरे बच्चे, यह मैं हूॅ कछुआ, मेरे बच्चे, यह मैं हूॅ कछुआ

जब कछुए को यह लगा कि यह बच्ची लड़ाई से बचने की वजह से यहॉ अकेली जगह में रख दी गयी है तो उसने और आगे गाया —

पर चुप रहो मेरे बच्चे, चारों तरफ खतरा है कहीं ऐसा न हो कि तुम मर जाओ

जब फ़ोरीवा ने यह सुना तो वह पहचान गयी कि वह कछुआ है तो वह ज़ोर से हॅस पड़ी और बोली —

ओ अपनी तारीफ करने वाले, क्या तेरे छोटे छोटे हाथों से?

इस पर कछुए ने कुछ नहीं कहा। उसने चुपचाप अपना खाना खाया और धीरे धीरे वहॉ से चला गया। कछुए को गये ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि वहॉ एक हिरन आ गया। उसके पैरों की आवाज सुन कर फ़ोरीवा ने फिर गाया —

कौन जानवर यहॉ से जा रहा है, फ़ोरीवा के पीछे से
कौन जानवर यहॉ से जा रहा है, फ़ोरीवा के पीछे से

हिरन ने भी कछुए की तरह ही जवाब दिया —

मेरे बच्चे, यह मैं हूँ हिरन, मेरे बच्चे, यह मैं हूँ हिरन
पर चुप रहो मेरे बच्चे, चारों तरफ खतरा है कहीं ऐसा न हो कि तुम मर जाओ

फ़ोरीवा ने हिरन को भी उसी तरीके से जवाब दिया जैसे उसने कछुए को दिया था —

ओ अपनी तारीफ करने वाले, तेरे तो सींग भी नहीं हैं और न तेज दाँत हैं

हिरन ने भी यह सुन कर कोई जवाब नहीं दिया वह भी अपनी घास चर कर वहाँ से चला गया। इसी तरह वहाँ और भी कई जानवर आये – बकरा आया, जिराफ आया, अजगर आया, हाथी आया और फिर आया एक शेर।

सभी जानवरों ने फ़ोरीवा को खतरे से सावधान किया और सभी अपने अपने रास्ते चले गये। पर शेर नहीं गया। वह बहुत नाराज था। उसने सोचा कि मैं तो इस छोटी लड़की को खतरे से सावधान कर रहा हूँ और यह मुझे क्या दे रही है – चुनौती?

शेर अपने दाँत और पंजे निकालते हुए बहुत ज़ोर से दहाड़ा और अपने पीछे वाले पैरों पर खड़ा हो कर फोरीवा की झोंपड़ी के ऊपर कूद गया। उसने गुस्से में आ कर अपनी पूरी ताकत से उस झोंपड़ी को अपने पंजों से बहुत ज़ोर से मारा।

इससे उस झोंपड़ी की सूखी मिट्टी टूटने लगी। उसने उस सूखी मिट्टी के कुछ टुकड़े उठाये और उनको अपनी पीठ पीछे फेंक दिया।

जल्दी ही वह उस मिट्टी की झोंपड़ी के अन्दर था और बाहर बस केवल उसकी पूँछ ही दिखायी दे रही थी। उसको वहाँ वह लड़की मिल गयी। उसने उसको गले से पकड़ा और मार दिया।

शेर बहुत भूखा था सो वह बिना समय बर्बाद किये उसे खा भी गया। उस बच्ची का कुछ भी नहीं बचा सिवाय उन मोतियों के हार के जो वह अपने गले में पहने थी।

एक चिड़िया एक बहुत ही ऊँचे पेड़ पर बैठी यह सब देख रही थी। जैसे ही वह शेर उस लड़की को खा कर वहाँ से गया वह चिड़िया वहाँ से नीचे आयी और उसके वे मोती उठा कर ले गयी।

वे मोती उसने ले जा कर फ़ोरीवा की माँ को दे दिये जो अपने खेत पर काम कर रही थी।

वह फ़ोरीवा की माँ से बोली — "तुम्हारे जैसे किसी बहरे को यह कहने का क्या फायदा कि लड़ाई चल रही है। वह जो नहीं सुनती वह भी जल्दी ही सुन लेगी।" यह कह कर उसने वे मोती फ़ोरीवा की माँ की गोद में डाल दिये।

जैसे ही फ़ोरीवा की मॉ ने वे मोती देखे तो वह उनको पहचान गयी। उसको लगा कि उसकी बच्ची के साथ कुछ बुरा हो गया है। वह अपनी बेटी की झोंपड़ी की तरफ भागी और उसको टूटी फूटी और खाली देख कर रो पड़ी।

वह इतना रोयी इतना रोयी कि उसकी तो ऑखों के ऑसू ही खत्म हो गये। वह चिल्लायी — "सच है कि वह जो नहीं सुनती वह भी जल्दी ही सुन लेगी।"

6 फ़ैरैयैल और जादूगरनी डैब्बे ऐंगल[25]

जादूगरनी की यह लोकप्रिय लोक कथा पश्चिमी अफ़्रीका के गाम्बिया देश से ली गयी है।

बहुत पुरानी बात है कि एक जादूगरनी थी जिसका नाम था डेब्बे ऐंगल[26]। उसके 10 बहुत सुन्दर बेटियॉ थीं। वह उनके साथ गॉव से बहुत दूर एक बहुत बड़े घर में रहती थी।

उसकी बेटियों की सुन्दरता के चर्चे सब जगह थे। हर शादी की उमर वाला आदमी उनमें से किसी एक से शादी करना चाहता था।

कभी कभी वे आदमी जो उतनी दूर जा सकते थे उनमें से किसी एक से शादी करने के लिये उनके घर तक गये भी। पर अजीब सी बात यह थी कि वे वहॉ गये तो पर कोई भी वहॉ से वापस लौट कर नहीं आया।

इसलिये किसी का भी यह पता नहीं चला कि उन्होंने उनमें से किसी एक से शादी की या नहीं, और या फिर वे वहीं रह गये। या फिर वे उन लड़कियों के घर तक भी पहुँचे या नहीं या उनका क्या हुआ।

पर इस बात ने उन लड़कियों से शादी करने की इच्छा रखने वालों के उत्साह में कोई कमी पैदा नहीं की क्योंकि वे सब लड़कियॉ

---

[25] Fereyel and Debbe Engal, The Witch (Tale No 6) – a Fulani folktale from The Gambia, West Africa.
[26] Debbe Engal – the name of the witch

सुबह के सूरज की तरह सुन्दर थीं और हर आदमी उनका प्यार पाना चाहता था।

डैब्बे ऐंगल के गॉव से बहुत दूर के एक गॉव में एक औरत अपने 10 बेटों के साथ रहती थी। उसके बेटे भी शादी के लायक थे और डेब्बे ऐंगल की बेटियों से शादी करना चाहते थे।

उनमें से सबसे बड़े बेटे ने सोचा कि यह केवल अल्लाह की मर्जी है अगर उन सबकी शादी उन सब लड़कियों से हो जाये।

वह बोला — "यह तो अल्लाह की मर्जी है कि हमारी शादी उन लड़कियों से हो। वे भी 10 हैं और हम भी 10 हैं इससे हमारे परिवारों को अलग भी नहीं होना पड़ेगा।"

उसके बाकी भाई भी इस बात पर राजी थे सो सबने डैब्बे ऐंगल और उसकी बेटियों के घर जाने के लिये उस लम्बी यात्रा के लिये अपना मन पक्का कर लिया।

उनकी मॉ उनके इस विचार से कुछ खुश नहीं थी। उसने उनको बहुत कहा कि वे अपनी पत्नियॉ वहीं किसी पास के गॉव से चुन लें पर उन्होंने साफ मना कर दिया कि वे ऐसा नहीं करेंगे और अपना विचार भी नहीं बदला। उनको तो वे लड़कियॉ ही चाहिये थीं।

मॉ ने कहा — "मेरे बच्चों, मुझे तुम लोगों के लिये बहुत डर लगता है क्योंकि उस गॉव जो भी गया है वह वहॉ से कभी वापस लौट कर नहीं आया। वह गॉव तो बहुत बुरा है।"

पर उसके बेटों ने उसको विश्वास दिलाया — "तुम चिन्ता न करो मॉ, हम सब बिल्कुल ठीक रहेंगे।"

मॉ ने फिर कहा — "ऐसा भी तो हो सकता है कि पहिले तुममें से कोई एक या दो चले जाओ फिर जब वे वहॉ से लौट आयें तब बाकी भाई अपनी अपनी पत्नियों को लाने चले जायें।"

"नहीं मॉ हम सबको साथ ही जाना चाहिये और हम सब साथ साथ ही जायेंगे। हमारा विश्वास है कि डैब्बे ऐंगल अपनी सब बेटियों को एक ही परिवार में देना चाहती है और वह भी हमारे जैसे सुन्दर लड़कों को।"

इस तरह उन दसों बेटों ने मॉ का डर दूर किया और हॅस कर बोले कि क्योंकि वह स्त्री थी इसलिये आदमियों की इच्छाओं को नहीं समझ सकती थी।

उन्होंने अपनी मॉ से पूछा — "मॉ वे दस लड़कियॉ हम दस लड़कों से कैसे मैच कर सकतीं हैं?" और उन्होंने यात्रा पर जाने के लिये अपना सामान बॉध लिया।

अगले दिन बहुत सुबह, वे मुर्गे की बॉग देने से भी पहले उठे, उन्होंने अपनी मॉ को विदा कहा और डैब्बे ऐंगल और उसकी बेटियों के गॉव चल दिये।

उनके गॉव का रास्ता बहुत ही तंग और लम्बा था। सबसे बड़ा भाई सबसे आगे था और उसके बाकी सब भाई उसके पीछे पीछे

चल रहे थे। वे सब गाते हुए चले जारहे थे। वे सब बहुत खुश थे और अपनी इच्छा पूरी होने के बारे में सोचते जा रहे थे।

उधर जैसे ही उन दसों लड़कों ने अपना गॉव छोड़ा और तब तक सूरज भी नहीं निकला था कि उनकी मॉ ने अपने 11वें बेटे को जन्म दिया।

वह बच्चा इतना छोटा था कि वह अपनी मॉ को भी मुश्किल से दिखायी दे रहा था। उसकी मॉ ने घबरा कर इधर उधर देखा तो वह कूद कर बोला — "मैं यहॉ हूॅ मॉ, मेरे बड़े भाई कहॉ हैं?"

वह बेचारी तो कुछ बोल ही नहीं सकी। ऑखें फाड़े देखती रह गयी। जब वह कुछ होश में आयी तो बोली — "वे लोग तो डैब्बे ऐंगल और उसकी बेटियों के घर गये हैं बेटे उसकी बेटियों से शादी करने।"

उस छोटे से बच्चे ने कहा — "मुझे जा कर उन्हें बचाना चाहिये मॉ। वे बहुत बड़े खतरे में हैं।" और वह तुरन्त ही अपने भाइयों को पकड़ने भाग गया।

उसने कुछ और कहने के लिये अपना मुॅह खोलना चाहा पर उसके मुॅह से कोई शब्द ही नहीं निकला। वह तो खतरे के नाम से ही बहुत घबरा गयी थी।

वह खुद ही बड़बड़ाता जा रहा था — "वह नीच जादूगरनी। वह केवल जवान आदमियों का शिकार करती है।

वह उनके लिये एक स्वागत वाली चटाई बिछाती है। फिर वह उनको बहुत बढ़िया बढ़िया खाना खिलाती है और शराब पिलाती है। वह उनको इतना पिलाती है कि वे बेहोश से हो जाते हैं। फिर जब वे उसकी बेटियों से बात करते हैं तो वे भूल जाते हैं कि वे कहाँ हैं। और तब तक रात हो जाती है।

तब वह कहती है — "ओह अब तो रात हो गयी तुम यहीं मेरे घर क्यों नहीं ठहर जाते? अब यहाँ से जाने में बहुत खतरा है। तुम मेरे घर में आराम से सोओ कल सुबह चले जाना।"

वे जवान आदमी तुरन्त ही राजी हो जाते हैं। फिर जब वे सो जाते हैं तो वह नीच जादूगरनी अपनी म्यान में से एक खंजर निकालती है, उसको तेज़ करती है और उन आदमियों के कमरे में जा कर उन सबको मार डालती है।

उफ़ ये जादूगरनियाँ। ये आदमी के माँस पर ही क्यों जीती हैं? और अगर जीना चाहती हैं तो वे किसी और का माँस खा कर जियें, पर मेरे भाइयों के माँस पर नहीं... । मुझे जा कर अपने भाइयों को बचाना चाहिये।"

उसने अपने आगे देखा तो उसको अपने भाई जाते दिखायी दे गये। उसने उनको पुकार कर उसका इन्तजार करने के लिये कहा तो वे आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि उनको उम्मीद ही नहीं थी कि कोई उनको इस तरह रास्ते में पकड़ भी सकता था।

फिर उन्होंने अपने चारों तरफ देखा कि वह आवाज़ कहाँ से आ रही थी पर उनको कोई दिखायी भी नहीं दिया। वे उस आवाज को अनसुना कर के आगे चलने ही वाले थे कि वह छोटा लड़का सबसे आखीर में चलने वाले भाई की टाँगों से लिपट गया और बोला — "मैं यहाँ हूँ भैया।"

जब उन्होंने उस छोटे से लड़के को देखा तो वे आश्चर्य में पड़ गये। उनको पता नहीं था कि वे उसको क्या कहें – आदमी या कुछ और। क्योंकि देखने में वह आदमी जैसा लगता तो था पर एक आदमी कहलाने के लिये वह बहुत ही छोटा था।

उन्होंने उससे पूछा — "तुम कौन हो और क्या हो?"

वह छोटा लड़का बोला — "मैं फ़ैरैयैल हूँ, तुम्हारा भाई।"

उनमें से एक भाई बोला — "तुम हमारे भाई कैसे हो सकते हो? तुम तो कोई चालबाज हो क्योंकि हमारी माँ के तो हम केवल 10 ही बेटे हैं। तुम कहाँ से आ गये? तुम चले जाओ यहाँ से और हमको अकेला छोड़ दो हमें अभी बहुत दूर जाना है।"

फ़ैरैयैल बोला — "इसी लिये तो मैं यहाँ आया हूँ। तुम जिस यात्रा पर जा रहे हो वह बहुत खतरनाक है और मैं तुम सबको उस खतरे से बचाने के लिये आया हूँ।"

सारे भाई उस छोटे बच्चे की ये बातें सुन कर उन्हें मजाक समझ कर हँस पड़े। जितना ज़्यादा वे इस बच्चे की बातों को अनसुना करते रहे उतना ही ज़्यादा वह बच्चा अपनी बात पर अड़ा रहा।

उन्होंने उसको बहुत पीटा और मरा हुआ समझ कर वहीं छोड़ कर डैब्बे ऐंगल के घर की तरफ चले गये।

काफी रास्ता पार करने के बाद जब सूरज उनके सिर के ऊपर से गुजर गया तो एक भाई को रास्ते में एक बहुत ही सुन्दर कपड़े का टुकड़ा पड़ा मिला।

उसने उस कपड़े को उठा लिया और उसको सबको दिखाते हुए बोला — "खुशी मनाओ मेरे भाइयो, अब हमारी यात्रा बहुत ही अच्छी रहेगी। यह देखो।

लगता है कि यह कपड़ा डैब्बे ऐंगल की बेटियों ने हमारे लिये यहाँ जान बूझ कर छोड़ा है ताकि हम उनके घर आसानी से पहुँच सकें।" और यह कह कर उसने वह कपड़ा अपने कन्धे पर डाल लिया।

पर वे थोड़ी ही दूर और आगे गये थे कि उस भाई को लगा कि उसका कन्धा उस कपड़े के बोझे से कुछ भारी सा लगने लगा है सो उसने अपने भाइयों से कहा कि वे उस कपड़े को ले चलने में उसकी सहायता करें।

उनमें से एक भाई ने हँसते हुए कहा — "क्या? तुमको एक कपड़े को ले चलने में भी सहायता की जरूरत है? माँ ठीक कहती थी कि तुम एक लड़की हो जो वह कभी नहीं चाहती थी।"

उसके एक भाई ने उससे वह कपड़ा ले लिया और अपने कन्धे पर डाल लिया। यह देख कर उसके दूसरे भाई हँस पड़े। पर वे

फिर कुछ ही दूर चले थे कि उस भाई को भी उस कपड़े का बोझ ज़्यादा लगने लगा सो उसने भी वह कपड़ा अपने दूसरे भाई को दे दिया।

कुछ देर बाद उसको भी वह कपड़ा बोझ लगने लगा। यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक कि 10वॉ भाई भी उसको उठा कर नहीं चल सका।

जैसे ही उसने वह कपड़ा अपने कन्धे पर से उतारा तो एक आवाज आयी — "हा हा हा। यह मैं हूँ फ़ैरैयैल, तुम्हारा सबसे छोटा भाई।" यह कहते हुए वह कपड़े में से कूद कर बाहर आ गया।

बाहर आ कर वह बोला — "मैं कपड़े के अन्दर बैठा था और इतनी देर तक तुम लोग मुझे उठाये ला रहे थे। इसी लिये वह कपड़ा इतना भारी था।"

यह सुन कर उसके भाई लोग बहुत गुस्सा हुए। उन्होंने उसको पकड़ कर फिर से बहुत पीटा।

एक भाई ने कहा — "यह उसको सबक सिखाने के लिये काफी है इसे वह इतनी जल्दी नहीं भूल सकता।" उन्होंने उसको फिर से मरा समझ कर छोड़ दिया और आगे अपनी यात्रा पर चल दिये।

जल्दी ही उनमें से एक भाई का पैर किसी सख्त चीज़ पर पड़ा तो उसने नीचे देखा तो देखा कि वहॉ तो एक चॉदी की अँगूठी पड़ी थी।

उसने उस अँगूठी को उठाते हुए कहा — "लगता है कि आज मेरा दिन अच्छा है। किसी की अँगूठी खो गयी है और अब यह मेरी है।" कह कर उसने वह अँगूठी अपने हाथ में पहन ली और वे फिर आगे चल दिये।

कुछ देर बाद उस भाई ने महसूस किया कि उसकी वह अँगूठी उसकी उँगली में बहुत भारी हो गयी है और वह इतनी भारी हो गयी थी कि वह उसको और नहीं पहन सकता सो उसको उसने अपने दूसरे भाइयों को दे दिया जैसा कि उन्होंने उस कपड़े के टुकड़े के साथ किया था।

एक भाई से दूसरे भाई के हाथों से गुजरती हुई वह अँगूठी आखीर में सबसे बड़े भाई के पास पहुँची और जब वह भी उसको नहीं पहन सका तो फ़ैरैयैल उस अँगूठी में से कूद कर बाहर आया और बोला — "अब तक तुम सबको मालूम हो जाना चाहिये था कि इसमें मैं बैठा था।"

सब भाइयों ने फिर से उसको इतना पीटने का निश्चय किया कि वह मर जाये पर इस बार सबसे बड़े भाई ने उन सबको यह करने से रोक दिया।

वह बोला — "इस छोटे से बच्चे ने हमारा इतना ज़्यादा समय लिया है तो इसको अपने साथ चलने दो और फिर यह हमारे साथ चलने के लिये इतना पक्का इरादा ले कर आया है तो हमें इसे

नाउम्मीद भी नहीं करना चाहिये। इससे अब हमको इतना परेशान होने की जरूरत भी नहीं है।"

इस तरह अब 11 भाई अपनी यात्रा पर चल पड़े। वे अब पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ जा रहे थे। फ़ैरैयैल उन सबके पीछे चल रहा था।

वे लोग जल्दी ही डैब्बे ऐंगल के गॉव आ गये। जब वे वहॉ पहुँचे तो वह जादूगरनी उनके स्वागत के लिये बाहर आयी। उसकी बेटियॉ उसके पीछे थीं।

उन लड़कियों की सुन्दरता देख कर तो सारे भाइयों की बोलती ही बन्द हो गयी थी। उन्होंने ऐसी सुन्दरता पहिले कभी नहीं देखी थी। उन्होंने तो यह कभी सोचा ही नहीं था कि इतनी सुन्दर लड़कियॉ धरती पर थीं भी।

उनको तो अपनी मॉ की कहानियॉ याद थीं जो वह उनको सुनाया करती थी जिनमें बहुत सुन्दर लड़कियॉ पानी में रहा करती थीं, या फिर वे बहुत दूर किसी ऐसी जगह रहती थीं जहॉ अब तक कोई गया ही नहीं था।

उनकी मॉ के अनुसार अगर कोई लड़की इतनी सुन्दर थी कि अगर कोई लड़का सड़क पर उसके पास से गुजर जाता और पीछे मुड़ कर नहीं देखता था तो इसका यह मतलब था कि वह जरूर ही किसी बीमारी का शिकार था।

और अगर कोई आदमी किसी ऐसी सुन्दरता को शाम को देखे तो उसको उस लड़की से कोई बात नहीं करनी चाहिये क्योंकि वह जरूर ही कोई भूत रही होगी।

उस लड़की को उसे अपनी ऑखों के कोनों से यह देखते हुए कि वह उसे कहीं देख तो नहीं रही, गुजर जाने देना चाहिये था। उसको झुक कर यह भी देखना चाहिये था कि उसकी एड़ियॉ तो जमीन से नहीं छू रहीं थीं और उसके पैर भी जमीन पर निशान छोड़ते जा रहे थे या नहीं।

क्योंकि अगर उसकी एड़ी जमीन से नहीं छू रही थी तो उसको वहॉ से जितनी तेज़ वह भाग सकता था उतनी तेज़ भाग जाना चाहिये था क्योंकि तब तो वह निश्चित रूप से भूत थी।

उन लड़कियों को देख कर उन लड़कों ने सोचा कि वे इतनी सुन्दर लड़कियॉ केवल उनका सपना ही थीं। फिर भी वे वहॉ उन दसों लड़कों के सामने कम से कम खड़ी तो थीं, आमने सामने। उनको लगा कि वे मर गये हैं और स्वर्ग में खड़े हैं।

डैब्बे ऐंगल बोली — "आओ मेरे बच्चों। अब जबकि तुम लोगों ने मेरी बेटियों को देख लिया है मैं चाहूँगी कि तुम उनको जान भी लो। उनको यकीन है कि वे तुमको यहॉ आराम से ठहरायेंगी।"

इसके बाद उस जादूगरनी ने उन सबका अपनी बेटियों से परिचय कराया और फिर उनको अपने मेहमानों वाले घर में ले

गयी। तब तक उसने फ़ैरैयैल को नहीं देखा था जो अपने सबसे बड़े भाई के पैरों के पीछे ही खड़ा था।

उसने उन लड़कों को मेहमानों वाले घर में ले जा कर खूब अच्छा खाना खिलाया और खूब शराब पिलायी। आखीर में उसने फ़ैरैयैल को देखा तो उसे उसका साइज़ देख कर उसे बड़ा आनन्द आया।

उसने उससे कहा — "ए तुम, इधर आओ। तुम मेरे साथ मेरे घर में आओ। तुम तो बहुत ही प्यारे हो। मैं तुमको अपने घर में आराम से ठहराऊँगी।"

जैसा कि डैब्बे ऐंगल ने सोच रखा था वे लड़के उसकी बेटियों के साथ आनन्द करते रहे और उन लड़कों के वहाँ रहते रहते ही रात हो गयी।

उन लड़कों को वहाँ रोकने में उसको कोई खास परेशानी नहीं हुई। वह लड़के वहाँ रुकने में बहुत खुश थे। उसने उनको और खाना और और शराब परसी। सब लोगों ने खूब खाया और खूब नाचा।

डैब्बे ऐंगल ने जब देखा कि बीसों लड़के लड़कियाँ खा पी कर धुत हो गये हैं और एक दूसरे के ऊपर सो रहे हैं तो वह आ कर बोली — "सब चीज़ों का कहीं तो अन्त होता ही है।"

उसने उनके बिस्तर बिछाये। आदमियों को उसने सफ़ेद कपड़े ओढ़ाये और अपनी बेटियों को नीले कपड़े ओढ़ाये। फिर वह अपने घर चली गयी।

फ़ैरैयैल के सोने के लिये उसने एक बहुत ही अच्छी जगह तैयार की। उसने फ़ैरैयैल से "गुड नाइट, मेरे छोटे आदमी" बोला तो फ़ैरैयैल बोला "गुड नाइट, मेरी बड़ी औरत। तुम कैसे सोती हो?"

डैब्बो ऐंगल बोली — "जब मैं सो जाती हूँ तो खर्राटे मारती हूँ, ऐसे —

हू हू हू हू अब मैं सुबह उठूँगी, हू हू हू हू अब मैं सुबह उठूँगी

और तुम कैसे सोते हो?"

फ़ैरैयैल ने झूठ बोला — "मैं तो जंगली सूअर की तरह सोता हूँ। हं हं हं हं।"

डैब्बो ऐंगल बोली — "ठीक है, ठीक से सोना।" और फिर वह खुद भी सोने चली गयी।

पर फ़ैरैयैल सोया नहीं, वह बस चुपचाप पड़ा रहा और सोने का बहाना करता रहा — "हं हं हं हं।"

जब डैब्बे ऐंगल ने उसको जैसे उसने उसको बताया था खर्राटे मारते सुना तो वह बिना आवाज किये अपने बिस्तर से उठी और कमरे के उस कोने में गयी जहाँ उसका खंजर रखा था।

उसने खंजर को उसकी म्यान से निकाला ही था कि फ़ैरैयैल जाग गया और बोला — "यह तुम क्या कर रही हो?"

उसने तुरन्त ही खंजर म्यान में रख दिया और परेशान सी होती हुई बोली — "कुछ नहीं। मुझे अफसोस है कि मैंने तुम्हें जगा दिया, मेरे छोटे आदमी। लाओ मैं तुम्हारा तकिया ठीक कर दूँ।"

उसने उसका तकिया ठीक किया और उसे फिर से सो जाने के लिये कहा और वह खुद भी अपने बिस्तर पर जा कर सो गयी।

काफी देर बाद फ़ैरैयैल ने फिर से अपने खर्राटे मारने शुरू किये तो डैब्बे ऐंगल फिर से उठी और अपना खंजर लेने गयी पर फ़ैरैयैल फिर उठ गया और उसने फिर उससे पूछा — "अब तुम क्या कर रही हो?"

डैब्बे ऐंगल फिर यही बोली कि वह कुछ नहीं कर रही थी। उसने फिर से फ़ैरैयैल का तकिया ठीक किया और उसको सोने के लिये कहा।

काफी देर बाद, सुबह होने के करीब के समय में जब सब शान्त था, कोई मकड़ा भी नहीं बोल रहा था, फ़ैरैयैल अपनी यात्रा के बारे में सोच रहा था तो उसने जादूगरनी के खर्राटे सुने –

हू हू हू हू अब मैं सुबह उठूँगी, हू हू हू हू अब मैं सुबह उठूँगी

उसके खर्राटे सुन कर फ़ैरैयैल चुपचाप से अपने बिस्तर से उठा और उस मेहमानों वाले घर में पहुँच गया जहाँ उसके भाई और वे सुन्दर लड़कियाँ सोयी हुई थीं।

उसने बड़ी सावधानी से अपने भाइयों के ऊपर से सफेद कपड़े हटा कर उन्हें लड़कियों के ऊपर डाल दिया और उन लड़कियों के नीले कपड़े हटा कर अपने भाइयों के ऊपर डाल दिये।

यह सब कर के वह अपने उस घर में आ गया जहाँ वह और डैब्बे ऐंगल सो रहे थे। धीरे से वह अपने बिस्तर में घुस गया और अपनी चादर ओढ़ ली। वह फिर से उस जादूगरनी को धोखा देने के लिये खर्राटे भरने लगा।

जब डैब्बो ऐंगल ने फिर से फ़ैरैयैल के खर्राटे सुने तो वह फिर चुपचाप से उठी और अपने कमरे के कोने में अपना खंजर निकालने गयी।

उसने अबकी बार बड़ी धीरे से अपनी म्यान में से उसे निकाला, चुपचाप ही उसको तेज़ किया और मेहमानों वाले कमरे में चली गयी।

उसने पहचाना कि कौन कौन है और फिर सफेद कपड़े से ढके लोगों को बड़ी सफाई से मार दिया। अपने काम से सन्तुष्ट हो कर वह अपने कमरे में आ कर सो गयी।

काफी देर बाद उसने भी खर्राटे मारना शुरू कर दिया। फ़ैरैयैल को पता चल गया कि अब वह गहरी नींद सो गयी है।

तुरन्त ही फ़ैरैयैल अपने बिस्तर से उठा और अपने भाइयों को जगाने गया। उसने उनको पहले समझाया और फिर दिखाया कि वहॉ क्या हुआ था कि डैब्बे ऐंगल ने अपनी ही बेटियों को मार दिया था।

यह देख कर तो वे सब बहुत आश्चर्य में पड़ गये। उन्होंने वहॉ से अपना सामान उठाया और भाग लिये।

अभी वे लोग जंगल में बहुत दूर नहीं जा पाये थे कि डैब्बे ऐंगल जाग गयी। उसने देखा कि फ़ैरैयैल अपने बिस्तर पर नहीं है तो वह मेहमानों वाले घर की तरफ भागी जिसमें वे नौजवान और उसकी बेटियॉ सोये हुए थे।

वहॉ जा कर उसने देखा कि उसने तो गलती से अपनी ही बेटियों को मार दिया था और वे नौजवान भी वहॉ से भाग गये थे।

यह सब देख कर तो वह गुस्से से लाल पीली हो गयी। उसने तुरन्त ही हवा को बुलाया और उस हवा पर सवार हो कर वह उन नौजवानों का पीछा करने चली।

फ़ैरैयैल ने देख लिया कि उनके पीछे आने वाली हवा में वह जादूगरनी थी। उसने अपने भाइयों को सावधान किया भी पर उसके भाइयों को तो पता ही नहीं था कि उनको क्या करना है।

लेकिन फ़ैरैयैल ऐसा नहीं था। उसने तुरन्त ही झाड़ियों में से एक अंडा निकाला और उसे अपने भाइयों और हवा के बीच में तोड़ दिया।

तुरन्त ही उस हवा और भाइयों के बीच में एक बहुत चौड़ी नदी बन गयी जो वह जादूगरनी पार नहीं कर सकती थी। यह देख कर जादूगरनी ने हवा में से एक कैलेबाश पैदा किया।

वह उस कैलेबाश में नदी का पानी भर भर कर नदी को खाली करने लगी। जल्दी ही वह नदी खाली हो कर सूख गयी और डैब्बे ऐंगल फिर से उन भाइयों का पीछा करने लगी।

फ़ैरैयैल ने फिर देखा कि वह जादूगरनी अभी भी हवा में आ रही थी सो उसने फिर से अपने भाइयों को सावधान किया। पर उसके भाइयों को तो पता ही नहीं था कि उनको क्या करना था।

अबकी बार फ़ैरैयैल ने नीचे से एक पत्थर उठाया और उसको अपने और डैब्बे ऐंगल के बीच में उड़ा दिया। वह पत्थर तुरन्त ही एक पहाड़ में बदल गया और उसने उन दोनों के बीच का रास्ता ही बन्द कर दिया।

इस पर डैब्बो ऐंगल ने हवा से जादू की एक कुल्हाड़ी बुलायी और उससे पहाड़ खोदने लगी। पर जब तक उसने पहाड़ में से जाने का रास्ता बनाया तब तक तो वे भाई लोग ज़िन्दा आदमियों और जादूगरों की दुनियॉ के बीच की हद पार कर चुके थे।

अब वह उन पर अपना कोई असर नहीं डाल सकती थी। उन लोगों को भी अपना घर दिखायी दे गया था सो वे दौड़ कर अपने घर के अन्दर घुस गये।

अगले दिन इन भाइयों को गॉव के लिये लकड़ी काटने जंगल जाना था पर वे अभी भी डरे हुए थे कि कहीं उनका सामना डैब्बे ऐंगल से न हो जाये। पर उनको तो लकड़ी लाने जाना ही था सो वे जंगल तो गये पर वे बहुत सावधान थे और हमेशा पीछे देखते रहते थे।

डैब्बे ऐंगल ने उन लोगों को देख लिया तो वह एक लट्ठे का रूप रख कर वहीं रास्ते में पड़ गयी। फ़ैरैयैल ने जब एक अजीब सा लट्ठा रास्ते में पड़ा देखा तो उसने पहचान लिया कि यह तो डैब्बो ऐंगल है।

उसने फिर अपने भाइयों को सावधान किया कि वह वहॉ लट्ठा नहीं था बल्कि वह तो जादूगरनी थी तो इससे पहले कि वह जादूगरनी उनको किसी और रूप में बदल पाती वे वहॉ से जल्दी ही अपने घर भाग गये।

पर डैब्बे ऐंगल भी उनको छोड़ने वाली नहीं थी। उसने अपने आपको कई चीज़ों में बदला ताकि गॉव वाले उसे पहचान न सकें पर उसकी कोई तरकीब काम नहीं की।

कई दिनों बाद एक बार उन भाइयों को जंगल से आलूबुखारा[27] लाने के लिये भेजा गया। तब तक वे सब तो उस जादूगरनी को भूल ही गये थे पर फ़ैरैयैल नहीं भूला था।

[27] Translated for the word “Plums”. See its picture above.

जब वे सब अपने प्रिय आलूबुखारों के पेड़ों के पास आये तो उन्होंने देखा कि करीब करीब सारे आलूबुखारे खराब हो चुके थे सिवाय एक पेड़ पर एक गुच्छे के।

उस पेड़ की पत्तियॉ गहरे हरे रंग की थीं और उसके फल रसीले और सुन्दर लग रहे थे। सारे भाई यह देख कर बहुत खुश हुए।

वे उन फलों को तोड़ने के लिये दौड़े कि फ़ैरैयैल ने महसूस किया कि यह तो डैब्बो ऐंगल की चाल है सो उसने उनको सावधान कर दिया। इससे वे उसकी पकड़ में आने से बच गये।

अगली सुबह जब वे भाई सो कर उठे तो उन्होंने देखा कि एक गधा बाहर मैदान में चर रहा है। वे उस गधे पर चढ़ गये और उसको दौड़ाने के लिये "अइ अइ अइ" करने लगे।

पर वह तो चला भी नहीं और फ़ैरैयैल की तरफ देखने लगा। तो उसके भाइयों ने उससे कहा — "आओ, तुम भी इस गधे पर चढ़ जाओ।"

फ़ैरैयैल बोला — "हालॅकि मैं बहुत छोटा हूॅ पर वहॉ मेरे बैठने के लिये तो कोई जगह ही नहीं है।" यह सुन कर गधा और लम्बा हो गया और उसने उसके लिये भी जगह बना दी।

फ़ैरैयैल बोला — "तुम्हारी ज़िन्दगी ले कर नहीं। मैं और उस गधे पर चढ़ूॅ जो मुझे सुन सकता है और मुझे सुन कर अपनी लम्बाई बढ़ा सकता है? नहीं नहीं कभी नहीं।" यह सुन कर गधा फिर से अपनी पुरानी लम्बाई में आ गया।

फ़ैरैयैल जान गया था कि यह गधा नहीं था बल्कि डैब्बे ऐंगल खुद थी सो वह उस पर हॅसने लगा और अपने भाइयों से बोला — "तुम लोग फिर से धोखा खा गये हो। यह गधा नहीं है बल्कि डैब्बे ऐंगल खुद है क्योंकि एक गधा कैसे तो दस आदमियों को बिठा सकता है और कैसे आदमी की बात सुन सकता है?"

उस गधे ने तुरन्त ही उन दसों भाइयों को नीचे गिरा दिया। वे सब उठे और उठ कर वहॉ से भाग गये। डैब्बे ऐंगल ने भी अपने आपको गधे से डैब्बे ऐंगल में बदल लिया और उनके पीछे पीछे भागी।

फिर उसने सोचा "मैंने हर तरकीब लड़ायी पर मेरी हर कोशिश नाकामयाब रही, केवल इस छुटके की वजह से। पहले मुझे इस छुटके से निपटने की कोई तरकीब सोचनी चाहिये उसके बाद मैं उन दसों को तो अपनी मुट्ठी में कर ही लूॅगी।"

सो अगले दिन, दिन निकलने के काफी देर बाद, एक बहुत सुन्दर लड़की फ़ैरैयैल के पास आयी। वह लड़की बहुत सुन्दर थी। इतनी सुन्दरता तो उसने पहले कभी देखी नहीं थी।

वह बोली — "मैं तुमसे मिलने आयी हूॅ।" फ़ैरैयैल उसको देख कर बहुत खुश था। वह उस लड़की को अपने घर ले गया और वहॉ उसने उसकी बहुत खातिरदारी की।

उसकी मॉ ने उस लड़की के लिये बहुत ही स्वादिष्ट खाना बनाया और उनको पीने के लिये बढ़िया शराब भी दी। जब शाम

हो गयी तो वह लड़की बोली कि अब वह अपने माता पिता के पास जाना चाहती थी।

फ़ैरैयैल बोला — "ठीक है, अच्छा विदा। उम्मीद है कि हम लोग फिर जल्दी ही मिलेंगे।"

वह लड़की बोली — "क्या तुम मुझे मेरे घर तक छोड़ने भी नहीं चलोगे? और यह इसलिये नहीं है कि दोस्त लोग अपने घर का रास्ता नहीं जानते बल्कि इसलिये भी कि किसी दोस्त को छोड़ने जाना दोस्ती की भी निशानी है और तौर तरीका भी है।"

फ़ैरैयैल ने अपने सिर पर अपना दॉया हाथ मारा और उससे माफी मॉगते हुए बोला — "उफ़, मुझे अफसोस है। मैं तो भूल ही गया था। सचमुच मुझे बहुत ही अफसोस है कि मैं तो अपने तौर तरीके ही भूल गया था।"

जैसे ही वे दोनों अॅधेरे में घर से बाहर निकले फ़ैरैयैल की मॉ ने भी उस लड़की को विदा कहा। उस रात चॉद आधा ही था सो चारों तरफ बहुत ही कम रोशनी फैल रही थी।

लड़की आगे आगे जा रही थी और फ़ैरैयैल उसके पीछे पीछे चल रहा था पर उसको **10–15** फीट से आगे का भी मुश्किल से ही दिखायी दे रहा था।

अचानक उस लड़की ने अपने कदम बढ़ाये और एक बड़े से पेड़ के तने के पीछे छिप गयी। इससे पहले कि फ़ैरैयैल कुछ कहता

वह फिर से वापस आ गयी। पर इस बार वह लड़की के रूप में नहीं थी बल्कि एक बहुत बड़े भयानक अजगर के रूप में थी।

वह फ़ैरैयैल की तरफ बढ़ी तो फ़ैरैयैल बोला — "मुझे मालूम था कि यह तुम हो डैब्बे ऐंगल। तुम उसके साथ चालें नहीं खेल सकतीं जो खुद ही भगवान से बात करने वाला[28] हो।"

और यह कहते के साथ ही फ़ैरैयैल एक नरक की आग के रूप में बदल गया। अजगर तब तक अपनी लम्बी कुंडली नहीं खोल सका ताकि वह उस आग से बच कर भाग सके सो जब तक वह उस नरक की आग का सामना करता तब तक तो वह आग के चपेटे में आ गया था।

अजगर आग में जल कर मर गया था। फ़ैरैयैल अपने गॉव अपने घर लौट आया और अपने भाइयों और सब गॉव वालों को बताया कि क्या हुआ था। सारे गॉव में खूब खुशियॉ मनायी गयीं। खूब अच्छा खाना पीना नाचना हुआ कि डैब्बो ऐंगल जादूगरनी मर गयी थी।

[28] Diviner

7 सोने की लीद करने वाला घोड़ा[29]

यह लोक कथा भी पश्चिमी अफ्रीका के गाम्बिया देश की लोक कथा है। यह होशियारी की एक बहुत मज़ेदार कहानी है।

अगर कभी कोई चोरी या झूठ की बात करता तो अहमाडु[30] इन दोनों में मास्टर था। वह कोई भी चीज़ चुरा ले जा सकता था जो भी उसके हाथ लग जाती।

वह अपने गॉव में इतना बदमाश हो गया था कि गॉव का कोई भी आदमी अपनी कोई भी चीज़ ऐसे ही खुली नहीं छोड़ता था।

अब क्योंकि वह ऐसा हो गया था तो सब लोग अपनी अपनी चीज़ें सॅभाल कर ही रखते थे। और क्योंकि अब वह गॉव वालों की कोई भी चीज़ नहीं चुरा सकता था तो कुछ दिनों बाद वह गरीब हो गया और इतना गरीब हो गया कि उसको खाने के भी लाले पड़ गये।

एक दिन उसके दिमाग में एक ख्याल आया कि अगर उसको अमीर आदमी बनना है तो चोरी करने के लिये गॉव का सरदार ठीक आदमी रहेगा।

इस दुनियॉ में उसके पास बस अब एक ही चीज़ बाकी रह गयी थी – वह था उसका घोड़ा। नहीं नहीं, उसके पास दो चीज़ें

---

[29] Horse With the Golden Dung (Tale No 7) – a folktale from The Gambia, West Africa.

[30] Ahmadu – a West African Muslim name. This name is popular in Nigeria also.

थीं, अगर तुम उसे गिनो तो, क्योंकि साथ में उसकी पत्नी भी तो थी।

एक रात उसने अपनी पत्नी से कहा — "मैंने अमीर बनने के लिये एक तरकीब सोची है। उसमें तुमको और घोड़े दोनों को मेरी सहायता करनी पड़ेगी। क्योंकि अब केवल तुम दोनों ही मेरे पास रह गये हो। और तुम तो मेरे लिये बहुत ही कीमती हो खास कर के इस समय।

अपनी तरकीब को काम में लाने के लिये मुझे तुम्हारे सोने के हार की जरूरत पड़ेगी जो मैं अपने घोड़े को दूँगा।"

अगले दिन उसने अपनी पत्नी का सोने का हार लिया और उसके कई छोटे छोटे टुकड़े कर दिये। उनमें से एक टुकड़ा उसने घोड़े के खाने में मिला दिया। बाद में जब घोड़े ने लीद की तो उसमें वह सोने का टुकड़ा चमक रहा था।

उसने फिर एक बार घोड़े के खाने में एक सोने का टुकड़ा मिला दिया और उस घोड़े को और उसकी लीद को ले कर वह सरदार के पास पहुँचा।

जब वह सरदार के घर में घुसा तो उसने फर्श छू कर उसको सलाम किया और आवाज लगायी — "सरदार अमर रहे।"

सरदार बोला — "उठो मेरे बच्चे अहमाडु। कहो कैसे आना हुआ?"

अहमाडु बोला — "सरदार, मेरे पास एक बहुत ही खास खबर है जिससे आप घाना और माली[31] दोनों देशों के सारे सरदारों को मिला कर उन सबसे भी अधिक अमीर बन जायेंगे।"

सरदार ने पूछा — "तब तुम वह खबर अपने ही पास रख कर खुद ही अमीर क्यों नहीं बन जाते?"

अहमाडु ने नम्रता से जवाब दिया — "क्योंकि इतनी अमीरी तो केवल सरदारों को ही अच्छी लगती है जहाँपनाह। अगर मैं इतना अमीर बन गया तो मुझे पूरा यकीन है वह खजाना मुझसे आप ले लेंगे। इसलिये मैंने यह सोचा कि उसे मैं आपको अपने आप ही दे दूँ।"

सरदार बोला — "अहमाडु, तुम बहुत ही अक्लमन्द आदमी हो। बताओ क्या खबर है?"

तब अहमाडु ने अपना घोड़ा और उसकी लीद सरदार को दिखायी। सरदार को ऐसा घोड़ा देख कर बहुत आश्चर्य हुआ जो अपनी लीद में सोना निकालता था।

इससे पहले कि वह अपने आश्चर्य पर काबू पाता कि इतने में घोड़े ने फिर से लीद की और उसमें भी सोने का एक टुकड़ा चमचमा रहा था।

[31] Ghana and Mali – both are West African countries

सरदार ने पूछा — "तुम इस घोड़े का क्या लोगे। और देखो ठीक दाम बताना क्योंकि तुम यह जानते हो कि मैं तुमसे वह घोड़ा बिना कुछ दिये भी ले सकता हूँ।"

अहमाडु बोला — "मैं हमेशा ठीक ही बोलता हूँ जहाँपनाह। आपके एक बहुत ही छोटे नौकर की हैसियत से मैं इसका दाम केवल **100** सोने के टुकड़े और **100** चाँदी के टुकड़े माँगता हूँ।"

फिर उसने सरदार के आदर में अपने दोनों हाथ अपनी छाती से लगाये और उसके अपने दाम लगाने का इन्तजार करता रहा।

सरदार बोला — "उठो मेरे बच्चे। तुमको **100** सोने के टुकड़े और **100** चाँदी के टुकड़े मिल जायेंगे।"

और इसके साथ ही उसने अपने नौकरों को अहमाडु से घोड़े का मामला तय करने के लिये बोल दिया।

अहमाडु को तो विश्वास ही नहीं हुआ कि सरदार इतना दयालु था। अहमाडु फिर बोला — "यह देखने के लिये कि कोई आपका सोना चोरी न कर ले आप घोड़े को अलग रखियेगा और अपने बहुत ही यकीन के नौकरों को चार चाँद[32] तक उसकी रक्षा के लिये रखियेगा।

उसके बाद आप अपने कुछ नौकर उस सोने को घोड़े की लीद से अलग करने के लिये लगाइयेगा जो उस काम को आपके बहुत ही

[32] Four Moons means four days

यकीन वाले लोगों की देखरेख में करेंगे।" इतना कह कर और अपने पैसे ले कर वह वहॉ से चला गया।

चार चॉद बाद उस घोड़े को जहॉ रखा गया था वह जगह उसकी लीद से भर गयी। सरदार के नौकरों ने वह पूरी लीद छान मारी पर उसमें तो उनको सोने का एक टुकड़ा भी नहीं मिला।

यह देख कर सरदार गुस्से से भर गया। उसने अहमाडु को बुलाने के लिये यह कह कर अपने आदमी भेजे कि — "उस कमीने को मेरे पास ज़िन्दा ले कर आओ और अगर वह न आये तो उसको मार दो और उसका मरा हुआ शरीर ले कर आओ ताकि मैं उसको गिद्धों को खाने के लिये फेंक सकूॅ।"

अहमाडु तो इसके लिये तैयार ही था क्योंकि उसको मालूम था कि सरदार उसको बुलायेगा ही क्योंकि उस घोड़े की लीद में सोना तो निकलना ही नहीं था सो जैसे ही सरदार के आदमी उसके पास आये तो उसने अपनी पत्नी को भी साथ लिया और उनके साथ चल दिया।

उसने अपनी पत्नी को अपना प्लान पहले से ही बता दिया था — "जब हम सरदार के पास पहुॅचेंगे तुम जो कुछ भी में कहूॅ उस हर बात पर बहस करना और उसको काटना। इस तरह हम आपस में लड़ेंगे और वहॉ से आगे मैं देख लूॅगा।"

अहमाडु ने एक सोने का टुकड़ा लिया और एक मुर्गा खरीदा। फिर उसने उस मुर्गे को मारा और उसका खून एक सॉप की खाल के थैले में भर कर उस थैले का मुँह बॉध कर अपनी पत्नी के गले के चारों तरफ बॉध दिया। उसके बाद वे सरदार के पास चले।

सरदार के घर आ कर अहमाडु ने उसको झुक कर सलाम किया और बोला — "सरदार अमर रहे। जहॉपनाह ने मुझे बुलाया?"

सरदार बोला — "तुम कह रहे थे कि तुम्हारा घोड़ा अपनी लीद में सोना निकालता है। मैंने उसको तुम्हारे कहे अनुसार चार चॉद तक एक अकेली जगह में रखा पर मुझे उसकी लीद में से सोने का एक टुकड़ा भी नहीं मिला।"

अहमाडु ने ज़ोर से कहा — "पर मैंने तो आपसे यह केवल कहा ही नहीं था बल्कि कर के भी दिखाया भी था।"

उसकी पत्नी बोली — "सरकार, इसने आपको धोखा दिया था। वहॉ कोई सोना वोना नहीं था।"

अहमाडु चिल्लाया — "चुप रह झूठी।"

पत्नी ने भी जवाब में कहा — "तुम झूठे हो।"

अहमाडु ने गुस्सा होने का बहाना करते हुए अपनी पत्नी को बहुत डॉटा। फिर उसने अपना छोटा सा चाकू निकाला और उसके गले में लिपटा हुआ वह सॉप की खाल वाला थैला काट दिया।

इससे उस थैले में भरा सारा खून फर्श पर बिखर गया और उसकी पत्नी जमीन पर गिर पड़ी।

यह देख कर सरदार चिल्लाया — "तुमने अपनी पत्नी को मार दिया?"

अहमाडु बोला — "आपने मुझे बुलाया था न? क्यों बुलाया था। जल्दी बताइये ताकि मैं इसको फिर से ज़िन्दा कर सकूँ।"

सरदार यह सब देख कर परेशान था वह बोला — "तुमने अभी अभी एक इतना बड़ा जुर्म किया है और तुम मुझसे पूछ रहे हो कि मैंने तुमको क्यों बुलाया है?

भूल जाओ कि मैंने तुमको क्यों बुलाया है। तुमने अपनी पत्नी को मारा है। तुमने एक भयानक जुर्म किया है और वह भी मेरी ऑखों के सामने सामने। अब तुम उसकी सजा भुगतने के लिये तैयार हो जाओ।"

अहमाडु ने तुरन्त ही एक कैलेबाश भर कर पानी मॉगा। सरदार ने पानी मॅगवा दिया। अहमाडु ने उसके ऊपर कुछ शब्द बोले। फिर उसने अपनी गाय की पूँछ का चॅवर उस पानी में डुबोया और उस पूँछ को सात बार झटक कर उससे एक आवाज करते हुए वह पानी अपनी पत्नी पर छिड़क दिया।

वह बोला — "इसका कटा हुआ गला ठीक हो जाये और मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि तू उठ जा।"

अहमाडु की पत्नी तुरन्त ही उठ कर बैठी हो गयी और अपने पति को गले लगा लिया। अब उसका गला भी कटा हुआ नहीं था।

गाय की पूँछ के उस चॅवर की ताकत को देख कर सरदार ने सोचा कि अगर यह चॅवर उसके पास हो तो वह कितना ताकतवर हो जाये। वह अपने उन सब मरे हुए लोगों को ज़िन्दा कर सकता था जो लड़ाई में मारे जाते थे।

सो वह अहमाडु से बोला — "मैंने तो कभी यह सोचा भी नहीं था कि मैं अपनी ऑखों से ऐसी ताकत देख पाऊॅगा। मुझे लगता है कि मैं लीद में सोना निकालने वाले घोड़े के बदले में यह चॅवर लेना ज़्यादा पसन्द करूॅगा। तुम मुझे इसे कितने में बेचोगे?"

अहमाडु बोला — "मुझे यकीन है कि अब आप जानते हैं कि यह चॅवर इस घोड़े से कहीं ज़्यादा कीमती है। पर आपको मैं इसको **200** सोने के टुकड़े और **200** चॉदी के टुकड़ों में दे दूॅगा।"

सरदार ने उस चॅवर के दाम अहमाडु को दे दिये औरै वह चॅवर उससे ले लिया।

एक दिन जब सरदार अपने सलाहकारों के साथ खा रहा था और पी रहा था तो वह अपनी नयी ताकत उन सबको दिखाना चाह रहा था।

जब उसकी एक पत्नी वहाँ और खाना रखने के लिये आयी तो उसने उन लोगों से कहा कि वह पहले उसको मार देगा और फिर उसे ज़िन्दा कर देगा।

तुरन्त ही उसने अपनी पत्नी को पकड़ कर जमीन पर गिरा दिया और उसका गला काट दिया। उसका एक सलाहकार यह देख कर घबरा गया और चीख पड़ा — "सरदार, यह आपने क्या किया? आपने तो उन्हें मार ही दिया?"

सरदार बोला — "ठीक है ठीक है। अब हम खाना खाते हैं और पीते हैं। बाद में मैं उसको जल्दी ही ज़िन्दा कर दूँगा।"

पर उसके सलाहकारों को तो चिन्ता हो रही थी। उन्होंने सरदार को उसे जल्दी ही ज़िन्दा करने को कहा।

सरदार ने तब वह चँवर कैलेबाश में भरे पानी में डुबोया और अहमाडु की तरह कुछ शब्द बोले। फिर उसने चँवर को सात बार हवा में हिलाया और उसका पानी अपनी पत्नी के शरीर पर छिड़क दिया। उसने उसको हुक्म दिया कि वह उठ जाये।

पर वह तो वहीं की वहीं पड़ी रही हिली भी नहीं। उसने वह सब एक बार और दोहराया पर फिर भी कुछ नहीं हुआ। यह देख कर वह खुद भी डर गया।

उसने अपने नौकरों को फिर से अहमाडु को लाने के लिये कहा और बोला कि अबकी बार तो उसे मरना ही पड़ेगा। नौकर फिर से अहमाडु को सरदार के पास ले आये।

सरदार ने अपने बहुत ताकतवर आदमियों को उसे उसके हाथ पीछे बॉध कर एक डूबने वाली चीज़ से बॉधने को कहा। फिर उसको एक चमड़े के थैले में डाल कर नदी के सबसे गहरे हिस्से में फेंकने के लिये बोल दिया।

उन आदमियों ने उसके हाथ उसके पीछे बॉधे और एक चमड़े के थैले में डाल कर उस थैले का मुँह रस्सी से बॉध दिया। फिर वे उसको नदी में फेंकने के लिये नदी पर ले गये।

वे सुबह से ले कर शाम तक चलते रहे। अब उनको लघुशंका के लिये जाना था सो वह थैला उन्होंने सड़क के किनारे रख दिया और एक झाड़ी की तरफ चले गये।

इससे पहले कि वे वहॉ से लौट कर आते एक कोला नट[33] बेचने वाला व्यापारी अपने गधे पर चढ़ कर वहॉ से गुजर रहा था।

अहमाडु को कुछ आवाज आयी तो वह थैले में से बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। मुझे सोना नहीं चाहिये। उन्होंने कहा है कि सरदार अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये मुझे अपना खजाना देना चाहता है। पर मुझे उसका कोई खजाना नहीं चाहिये, मैं गरीब ही ठीक हूँ।"

[33] Kola Nut – a kind of nut like Indian betel nut which West African people offer to one another when they meet. Otherwise also they chew it most of the time of the day. See its picture above.

वह व्यापारी बोला — "तुम पागल हो गये हो क्या? हर आदमी अमीर होना चाहता है और तुम कह रहे हो कि तुम गरीब ही ठीक हो।"

अहमाडु बोला — "हॉ मैं ठीक कह रहा हूॅ। वह खजाना तुम ले लो। यह पैसा मेरे लिये हमेशा से ही एक परेशानी रहा है। तुम मुझे खोल दो और तुम मेरी जगह इस थैले में बैठ जाओ। मुझे वह खजाना नहीं चाहिये। वह खजाना तुम ले लेना।"

व्यापारी ने तुरन्त ही वह थैला खोला, अहमाडु को बाहर निकाला और खुद उस थैले में बन्द हो गया। अहमाडु उस व्यापारी के कोला नट उस गधे पर ले कर वहॉ से चला गया।

ज्ल्दी ही सरदार के आदमी लघुशंका से वापस आ गये। उन्होंने वह थैला उठाया और उसे उठा कर चल दिये। उनमें से एक बोला — "सो आखिर अहमाडु तुम हमारे हाथ लग ही गये। अब तुम किसी को धोखा नहीं दे पाओगे। हम तुम्हें अब नदी में फेंक देंगे।"

व्यापारी यह सुन कर थैले में से चिल्लाया — "नहीं नहीं। मैं अहमाडु नहीं हूॅ, मैं तो मैं हूॅ। मुझे खोल दो।"

वे लोग बोले — "हॉ हॉ हॉ। वह तुम ही हो, वह तुम ही हो।" कह कर उन्होंने उस थैले को नदी में फेंक दिया और सरदार के पास लौट गये।

पर इससे पहले कि सरदार के नौकर उसको सारी खबर बताते अहमाडु गधे पर सवार हो कर वहॉ आ पहुँचा। सरदार तो उसको देख कर कुछ बोल ही नहीं सका।

अहमाडु सरदार से बोला — "सरदार, आपके पुरखों ने आपको आशीर्वाद भेजा है और साथ में ये कुछ कोला नट भेजे हैं। अच्छा हो अगर आप भी उनसे मिलने चले जायें। वे आपको बहुत याद करते हैं।

जहॉ वे हैं वहॉ सोना और चॉदी टनों में है। वे चाहते हैं कि आप वहॉ खुद जा कर वह सोना चॉदी ले आयें। आपको वहॉ जरूर जाना चाहिये जहॉ मैं गया था। जब तक आप वहॉ से लौट कर आते हैं तब तक मैं यहॉ रहता हूँ।"

यह सुन कर सरदार ने अपने गॉव वालों को बुलाया और उनसे कहा — "अहमाडु ने मेरे पुरखों को देखा है। मैं भी उनको देखने जाना चाहता हूँ।

जब तक मैं उनको देख कर वापस आता हूँ तब तक यह अहमाडु तुम्हारा सरदार रहेगा। तुम लोग उसकी उसी तरीके से सेवा करना जैसे मेरी करते रहे हो।"

अहमाडु ने सरदार के नौकरों को सरदार को वैसे ही चमड़े के थैले में बॉध कर नदी के सबसे गहरे हिस्से में फेंक देने के लिये कह दिया। सरदार के आदमी सरदार को थैले में बॉध कर नदी पर ले गये और उसको नदी में फेंक दिया।

अहमाडु ने उस गॉव पर चार चॉद तक राज किया और जब सरदार वापस नहीं आया तो वह उस गॉव का असली सरदार बन गया। इस तरह से गॉव का वह चोर गॉव का असली सरदार बन गया।

8 मक्का के एक दाने के बदले में पत्नी[34]

यह बहुत समय पहले की बात है कि एक बार आसमान के देवता न्यामे[35] लोगों की अक्लमन्दी की जॉच करना चाहते थे सो उन्होंने आदमियों और जानवरों दोनों से यह कहा कि दोनों में से जो कोई भी यह साबित करेगा कि वह सबसे ज़्यादा अक्लमन्द है तो वह उसको एक बहुत बड़ा खजाना और और बहुत सारी अक्लमन्दी देंगे।

इसके अलावा सारे लोगों को अपना समय खराब न करना पड़े इसके लिये वह असली इम्तिहान से पहले एक और इम्तिहान लेंगे और जो लोग वह इम्तिहान पास कर लेंगे उन्हीं को उस असली मुकाबले में हिस्सा लेने दिया जायेगा।

सब लोगों को यह मुकाबला बहुत मुश्किल लगा क्योंकि उनको डर था कि अगर वे फेल हो गये तो पता नहीं इसका नतीजा क्या निकले और न्यामे उनके साथ क्या करे। सो एक दिन वे सब गॉव के मैदान में इकट्ठा हुए और आपस में इसके ऊपर विचार करने लगे।

[34] Bride for a Grain of Corn (Tale No 8) – a folktale from Ghana, Africa.
[35] Nyame is the Sky God of Ghana

सबसे पहले शेर बोला — "हम उस देवता को अपनी अक्लमन्दी का सबूत कैसे दे सकते हैं जो हमारे बारे में पहले से ही सब कुछ जानते हैं।"

खरगोश बोला — "तो इसका मतलब तो यह हुआ कि हम उनसे झूठ तो बोल ही नहीं सकते।"

एक आदमी बोला — "तुम बिल्कुल ठीक कहते हो। हो सकता है कि वह यही चाहते हों कि इस मुकाबले में केवल आदमी लोग ही हिस्सा लें इसी लिये उन्होंने हमारी अक्लमन्दी को चुनौती दी हो।"

बन्दर शिकायती आवाज में बोला — "पर कम से कम उनको हमको यह तो बता देना चाहिये था कि वह इम्तिहान है क्या। इससे हम कम से कम यह निश्चय तो कर सकते थे कि हम इस मुकाबले में हिस्सा लेना चाहते भी हैं या नहीं।"

इस तरह वे आदमी और जानवर आपस में बहस करते रहे।

जल्दी ही न्यामे के ऑगन में एक बहुत बड़ी भीड़ जमा हो गयी पर उनमें से कोई भी आगे बढ़ कर न्यामे की चुनौती स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं था। वे सब न्यामे के ऑगन की चहारदीवारी की तरफ पीछे हट कर खड़े हो गये।

तभी एक मकड़ा भीड़ के पास आया और उसने हाथी से पूछा — "यहॉ क्या हो रहा है?"

हाथी बोला — "ऐसा लगता है कि यहॉ पर तुम ही एक ऐसे आदमी हो जिसने देवता की चुनौती के बारे में कुछ नहीं सुना।"

मकड़े ने उसको ठीक किया — "नहीं नहीं ऐसा नहीं है, मैंने उसकी चुनौती के बारे में सुना है इसी लिये तो मैं यह पूछ रहा हूॅ कि हर एक फिर यहॉ से लौट क्यों रहा है? और वह कौन है जिसने उनकी चुनौती स्वीकार की है?"

हाथी बोला — "अभी तक तो उनकी चुनौती किसी ने स्वीकार नहीं की है।"

यह सुन कर मकड़ा हाथी और दूसरे जानवरों को जो भी उसके रास्ते में आये उन सबको हटाता हुआ आगे बढ़ा।

और ऑगन के बीच में आ गया और बोला — "ओ देवता, मैं आपकी बनायी हुई चीज़ों में सबसे ज़्यादा अक्लमन्द हूॅ। और मैं आपकी चुनौती को मानने और अपने आपको सबसे ज़्यादा अक्लमन्द साबित करने के लिये तैयार हूॅ।"

यह सुन कर वहॉ पर खड़े सभी लोगों की बोलती बन्द हो गयी। कुछ ने मकड़े को चुप करने की कोशिश भी की पर सब बेकार। वह तो किसी की सुन ही नहीं रहा था। बहुतों ने तो अपनी ऑखें ही बन्द कर लीं कि अब न्यामे मकड़े के साथ पता नहीं क्या करेगें।

पर यह सुन कर न्यामे को बड़ा आनन्द आया कि इतने सारे लोगों में उसी एक अजीब से दिखने वाले जानवर ने उसकी चुनौती

स्वीकार की। और यह तो वह जानवर था जो कि उसके अनुसार उसके केवल प्रयोग और जॉच[36] का एक नतीजा था।

फिर भी वह मकड़े की बहादुरी से बहुत प्रभावित था चाहे उसकी अक्लमन्दी से हो या न हो। इस बात से खुश हो कर कि कम से कम एक तो उसके मुकाबले में हिस्सा लेने के लिये आगे आया उसने अपने सलाहकारों को बुलाया और उन सबसे कहा —

"आज तुम सब लोगों के सामने इस मकड़े ने मेरी यह चुनौती मान ली है कि वह अपनी अक्लमन्दी साबित करेगा। अब तुम सबको यह भी पता होना चाहिये कि अगर यह अपने को मेरी दुनियॉ का सबसे अक्लमन्द आदमी साबित न कर पाया तो, जैसा कि यह अपने आपको कहता है, मैं इससे बहुत गुस्सा हो जाऊॅगा।"

यह सुन कर वहॉ खड़े सब लोग आपस में कानाफूसी करने लगे और मकड़े को एक बार फिर से वह चुनौती स्वीकार न करने की सलाह देने लगे पर मकड़े ने न्यामे के सामने इज़्ज़त से अपना सिर झुकाया और बोला — "अगर मैं आपकी चुनौती पर खरा न उतरूॅ तो मेरे साथ वैसा ही हो जैसा आप चाहते हैं।"

न्यामे बोला — "क्योंकि मैं एक न्यायप्रिय और सबको प्यार करने वाला देवता हूॅ और अपने किसी भी आदमी को दुखी नहीं देख सकता तो अच्छा तो यही होगा तुम अपने आपको यह साबित कर देना कि तुम ही मेरी दुनियॉ के सबसे अक्लमन्द आदमी हो।"

[36] Translated for the words "Experiment and Test"

मकड़ा बोला — "मैं आपकी सेवा में तैयार हूँ।"

न्यामे ने मकड़े को पत्थर का एक टुकड़ा देते हुए कहा — "इसे तोड़ो ताकि हम सब इसे खा सकें। रस्म तो यही है कि ऐसे मौकों पर जैसा कि यह मौका है कोला नट[37] तोड़ा जाना चाहिये पर इस समय यहाँ पर कोला नट तो है नहीं तो इसी को कोला नट समझ कर तोड़ लेते हैं।"

यह सुन कर पहले तो मकड़ा बहुत परेशान हो गया। उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे या क्या करे और इसका क्या जवाब दे पर फिर वह जल्दी ही सँभल गया।

वह तुरन्त ही उस भीड़ में खड़ी स्त्रियों में से एक स्त्री की कमर से उसकी कमर में बाँधने वाला कपड़ा खोल लाया और उस कपड़े को गोल गोल इँडुरी[38] जैसा लपेट कर न्यामे को दे दिया।

न्यामे ने पूछा — "यह किसलिये?"

मकड़ा बोला — "मैं यह चाहता हूँ कि आप इस गाँव के मैदान को इस गद्दी के ऊपर रख कर और फिर उसको अपने सिर पर रख कर कहीं दूर ले जायें। मैं आपका यह पत्थर वहीं तोड़ूँगा"

---

[37] Kola Nut – or Cola Nut – a kind of nut like Indian betel nut which West African people offer to one another when they meet. Otherwise also they chew it most of the time of the day as Indians chew betel nut. See its picture above.

[38] One and half or two feet broad and about 2-3 feet long strip of cloth folded into a round shape kept on the head to support some load on the head or on the ground. See the picture of a pitcher kept on that Induri.

न्यामे बोला — "यह क्या मजाक है? यह तो नामुमकिन है। इस तरह तुम गॉव के मैदान को इस इॅडुरी पर रख कर उठा कर नहीं ले जा सकते। वह तो जमीन है कोई बोझा नहीं है जो इस तरह उठा कर ले जाया जा सके।"

मकड़ा बड़ी नम्रता से बोला — "आपने ठीक कहा। जैसा कि आप जानते हैं यह भी एक पत्थर है कोला नट नहीं है जिसे तोड़ कर खाया जा सके।"

न्यामे बोले — "ठीक है। तुमने मेरा पहला इम्तिहान पास कर लिया।"

फिर न्यामे ने अपनी जेब में हाथ डाला और मक्का का एक दाना निकाला और बोले — "अब यह तुम्हारा असली इम्तिहान है। अपनी अक्लमन्दी साबित करने के लिये मैं तुमको यह मक्का का दाना देता हूॅ।

इसको तुम एक बहुत सुन्दर दुलहिन की कीमत[39] देने के लिये इस्तेमाल करोगे और फिर उस दुलहिन को मेरे ऑगन में ले कर आओगे। इस काम के लिये तुमको सात बाजार दिन[40] दिये जाते हैं।"

[39] Bride Price – In African countries it is customary to pay bride price to the bride's parents.

[40] Market days – means when the market is organized. There village market was organized daily, it means that Anansi was given 7 days to do this job.

मकड़े ने न्यामे से वह मक्का का दाना लिया, देवता को सिर झुकाया और अपने घर चला गया। घर आ कर उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह उसका एक लम्बी यात्रा पर जाने के लिये सामान बॉध दे।

उसका परिवार तो जबसे उसने न्यामे की चुनौती मानी थी तभी से ही डरा हुआ था इसलिये उसके परिवार वालों ने भी उससे कहा कि अब भी समय है वह बस कहीं भी गायब हो जाये तो उसकी जान बच जायेगी पर अनन्सी अपने इरादों में पक्का था।

उसने कहा जैसा वह कहता है वैसा ही किया जाये। उसको कितनी भी मुश्किलों का सामना करना पड़े पर वह कभी अपने वायदे से नहीं फिरेगा।

अगले दिन सुबह ही उसने अपना थैला उठाया, उसे अपने गले में लटकाया और अपनी यात्रा पर रवाना हो गया। हालॉकि उसको मालूम था कि यह काम बहुत ही मुश्किल है पर फिर भी उसने अपने ये विचार अपने चेहरे पर झलकने नहीं दिये।

उसने अपने मन में सोचा कि मुझे अपनी साख और शान बना कर रखनी चाहिये और इसी लिये मुझे कोई ऐसा आदमी अपने पास भी नहीं फटकने देना चाहिये जो मेरे प्लान में रुकावट डाले सो वह अकेला ही अपने लम्बे इधर उधर घूमते हुए रास्ते पर बिना किसी मतलब के चल दिया।

हालॉकि उसने अपने इस काम को पूरा करने के लिये काफी सोचा विचारा था पर फिर भी वह किसी निश्चित रास्ते पर नहीं पहुँच पाया था कि वह न्यामे का यह काम कैसे करेगा।

अपनी दूसरे दिन की यात्रा के तीसरे पहर में वह एक गॉव में आ पहुँचा। इस समय तक उसके पास जो कुछ भी खाना वह घर से ले कर चला था सब खत्म हो गया था।

सो जब वह उस गॉव में आया तो वहुत भूखा और थका हुआ था। वहॉ आ कर उसने एक मुर्गी पालने वाले को ढूँढा। वह उसको वहॉ मिल गया।

एक आदमी अपने मुर्गे मुर्गियों को दाना खिला रहा था। उसने उससे रात भर के लिये ठहरने के लिये जगह मॉगी और यह वायदा किया कि वह सुबह होते ही अपनी यात्रा पर निकल जायेगा। वह आदमी दयालु था सो उसने उसे रात भर के लिये अपने घर में जगह दे दी।

जब उन्होंने अपना शाम का खाना खा लिया तो मकड़े ने न्यामे का दिया हुआ वह मक्का का दाना निकाला और उसे अपने मेजबान को दिखा कर बोला — "यह एक ऐसा आश्चर्यजनक मक्का का दाना है जैसा तुमने पहले कभी नहीं देखा होगा।

अगर तुम इस दाने को बो दो तो फसल काटने के समय तुमको इससे सात बुशैल[41] मक्का मिल जायेगी।

मैं इस दाने को कभी अपनी ऑखों से दूर नहीं करता और सारी ज़िन्दगी मैंने इसकी अपनी जान से भी ज़्यादा रक्षा की है। बस अब मैं इस दाने के बोने के मौसम का इन्तजार कर रहा हूँ।"

मकड़े का मेजबान तो उस मक्के के दाने के बारे में यह बात सुन कर ही बहुत प्रभावित हो गया। वह तो यह सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा मक्का का दाना दुनियॉ में था भी जिससे सात बुशैल मक्का पैदा हो सकती थी। उसने उस दाने को रात भर छिपा कर रखने में मकड़े की सहायता भी की।

सुबह जब मकड़ा अपने वायदे के अनुसार अपनी यात्रा पर निकलने लगा तो उसने उस आदमी से अपना वह मक्का का दाना मॉगा और कहा — "लाओ वह मक्का का दाना मुझे दे दो। बोने से पहले मुझे अभी उस दाने को थोड़ा और सुखाना है।"

उसका मेजबान वह दाना ले आया और मकड़े ने उसको पास में ही धूप में सूखने के लिये रख दिया। जैसे ही मकड़े ने वह दाना

[41] Bushel is a unit of dry measure containing 4 pecks, equivalent in the US for 35.24 liters and in Great Britain for 36.38 liters (Imperial bushel) – see the picture above.

सूखने के लिये रखा कि तुरन्त ही एक मुर्गा आया और उस दाने को खा गया।

यह देख कर तो मकड़ा बहुत ज़ोर से रो पड़ा — "हाय मेरा मक्का का दाना। हाय मेरा मक्का का दाना।"

उस आदमी ने उस दाने के बदले में उसको बहुत सारी चीज़ें देनी चाहीं पर वह तो किसी चीज़ पर भी राजी नहीं हो रहा था। उसको तो बस अपना वही मक्का का दाना चाहिये था जो उस आदमी का मुर्गा खा गया था।

अब वह आदमी उसको वही मक्का का दाना कहॉ से देता वह तो मुर्गा खा गया था। आखीर में वह इस बात पर राजी हुआ कि वह उस दाने के बदले में उसी मुर्गे को लेगा जिसने उसका दाना खाया था ताकि वह घर जा कर उस मुर्गे को मार सके और उसके पेट में से वह दाना निकाल सके।

पर अब यह कैसे पता चले कि उसका मक्का का दाना किस मुर्गे ने खाया है। इसलिये अब यह तो कहने की कोई बात ही नहीं है कि अनन्सी ने उस आदमी के मुर्गे और मुर्गियों में से सबसे बढ़िया मुर्गा चुन लिया। मकड़े ने उस आदमी को धन्यवाद दिया और दूसरे गॉव चल दिया।

दूसरे गॉव पहुॅच कर उसने एक भेड़ चराने वाले को ढूॅढा और उसके मिल जाने पर उससे भी रात भर ठहरने के लिये जगह मॉगी।

उस आदमी ने भी दया करके उसको रात भर ठहरने के लिये जगह दे दी।

मकड़े ने अपना मुर्गा उसको रात भर के लिये उसकी भेड़ों के साथ रखने के लिये दे दिया। रात को वह उठा और उसने अपना मुर्गा मार दिया।

अगले दिन सुबह जब वह जाने के लिये तैयार हुआ तो उसने अपना मुर्गा वापस माँगा। जब वह चरवाहा उसका मुर्गा लेने के लिये अपनी भेड़ों के बाड़े में गया तो वहाँ तो मकड़े का मुर्गा मरा पड़ा था।

मकड़ा बोला — "क्या तुम सच बोल रहे हो? वह तो मेरा बहुत ही खास मुर्गा था। क्या तुमने देखा नहीं था कि उसका सिर कितना बड़ा और लाल था?"

चरवाहा बेचारा घबरा गया और घबरा कर बोला — "अब मैं वह मुर्गा तो तुमको नहीं दे सकता पर यह बताओ कि इसके बदले में मैं तुम्हें क्या दूँ?"

मकड़ा बोला — "तुमने मेरे साथ बहुत ही अच्छा बर्ताव किया है पर जो तलवार के बल पर जीता है वह तलवार से ही मारा जाता है। तुम मुझे बस वह भेड़ दे दो जिसने मेरे मुर्गे को मारा है।"

"पर मुझे तो यह नहीं मालूम कि किस भेड़ ने उसको मारा है।"

मकड़े ने एक मोटे से भेड़ की तरफ इशारा करते हुए कहा — "मुझे लगता है कि मेरे मुर्गे को उस भेड़ ने मारा है। उसके सींग

देखो और उसकी चालाक ऑखें देखो। मुझे यकीन है कि यही वह भेड़ है जिसने मेरे मुर्गे को मारा है।"

चरवाहा बेचारा क्या करता। उसने मकड़े को वह भेड़ दे दी जो उसने मॉगी थी। मकड़े ने उस भेड़ के गले में रस्सी बॉधी और उसको ले कर फिर से अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

रात होने पर वह एक दूसरे गॉव में पहुॅचा तो वहॉ उसने एक जानवरों के मालिक को ढूॅढा और उससे रात को ठहरने की जगह मॉगी। यह मालिक उसको ठहराने के लिये राजी तो हो गया पर उसको राजी होने में थोड़ा समय लगा।

मकड़ा बोला — "तुमको मुझे जानने की जरूरत नहीं है। मैं अनन्सी मकड़ा[42] हूॅ और न्यामे का आदमी हूॅ। उन्होंने मुझे दूर के गॉव में एक खास काम से भेजा है। अगर तुम मुझे अपने घर में रात को रुकने की जगह दे दोगे तो वह तुम्हारा भला करेगा।"

यह सुन कर उस जानवरों के मालिक ने उसको अपने घर में शरण दे दी। उसने उसको खाना खिलाया और अपने मेहमानों वाले कमरे में उसको ठहरा दिया।

जब मकड़ा सोने जाने लगा तो उसने अपने मेजबान से अपने भेड़ को उसके जानवरों के साथ रखने के लिये कहा। उसने जानवरों के मालिक से कहा — "मेरा यह भेड़ बहुत ही खास है यह अपने साथियों के साथ नहीं सोता, यह जानवरों के साथ ही सोना

[42] Anansi Spider

पसन्द करता है इसलिये तुम इसको अपने जानवरों के साथ ही रख लो।"

मालिक तुरन्त ही उस भेड़ को अपने जानवरों के बाड़े में ले गया और उसको अपने जानवरों के साथ रख दिया। वहॉ भी मकड़ा रात को उठा, जानवरों के बाड़े की तरफ गया और अपने भेड़ को खुद ही मार दिया।

जब मकड़ा सुबह अपनी यात्रा पर जाने के लिये तैयार हुआ तो उसने अपने मेजबान से अपना भेड़ मॉगा। मेजबान मकड़े का भेड़ लेने गया तो उसने देखा कि मकड़े का भेड़ तो मरा पड़ा है।

उसने मकड़े से प्रार्थना की कि वह अपने भेड़ के बदले में उसके जानवरों में से कोई सा भी जानवर चुन ले। तो उसने उसके जानवरों में से उसका सबसे अच्छा बैल चुन लिया और उसको ले कर फिर से अपनी यात्रा पर चल दिया।

रास्ते में उसने लोगों के एक झुंड को ज़ोर ज़ोर से रोते हुए सुना तो वह उनके पास गया और यह जानने की कोशिश की कि वे सब क्यों रो रहे थे। वहॉ जा कर उसको पता चला कि उनमें से किसी एक का कोई एक मर गया था।

मकड़े ने दया दिखाते हुए पूछा — "कौन है वह?"

उनमें से एक बोला — "वह एक छोटी लड़की है और ये उसके माता पिता हैं।"

मकड़ा बोला — "मुझे बच्ची के मरने का बहुत अफसोस है पर शायद मैं आपकी कुछ सहायता कर सकूँ। मैं न्यामे का एक प्रिय आदमी अनन्सी मकड़ा हूँ। आप सबकी किस्मत अच्छी है जो आपको मैं मिल गया।

मैं इस लड़की के शरीर को न्यामे के राज्य में ले जाना चाहता हूँ जहाँ जा कर यह अमर हो जायेगी। आप लोग इस बैल को रख लें और इसे मार कर इसके माँस को खा कर आनन्द मनायें क्योंकि न्यामे आज आपसे बहुत खुश हैं।

और मुझे उस लड़की को दे दें ताकि मैं उसको न्यामे के पास ले जाऊँ और उसको अमर करा लाऊँ।"

गाँव वालों ने इस बात पर कुछ सोच विचार किया फिर उन्होंने इस बात पर अपने बड़ों की सलाह ली। सबको यही लगा कि मकड़े की बात ठीक थी सो उन्होंने उसकी बात मान ली।

उनकी बेटी तो उनके लिये मर ही चुकी थी पर अगर वह मकड़ा न्यामे से उनकी बेटी की ज़िन्दगी वापस ला सकता था और उसको अमर करा कर ला सकता है तो इस में बुराई ही क्या थी।

फिर उनको अपना दुख भूलने के लिये भी तो कुछ चाहिये था सो उन्होंने उसका बैल रख लिया और उस लड़की का शरीर मकड़े को दे दिया।

मकड़े ने वहाँ मौजूद लोगों में से एक से उसका नीचे पहनने वाला कपड़ा लिया, लड़की के शरीर को उस कपड़े में लपेट कर

अपनी कमर से बॉधा और उसको दूसरे गॉव ऐसे ले गया जैसे कि वह लड़की सोयी हुई हो।

दो गॉव पार करने के बाद भी वह तब तक नहीं रुकना चाहता था जब तक कि रात न हो जाये। वह जब तीसरे गॉव आया तब रात हो चुकी थी सो उसने उस गॉव के रहने वालों से उसको उनके सरदार के पास ले जाने के लिये कहा।

गॉव वाले उसको अपने सरदार के पास ले गये। सरदार के पास पहुॅचने पर उसने उससे कहा — "मैं न्यामे का आदमी हूॅ।" और उसने उस लड़की को फर्श पर सावधानी से लिटा दिया और उससे उसके रहने के लिये एक खास घर मॉगा।

उसने आगे कहा — "यह न्यामे की बेटी है और कोई इसको तंग न करे। हम लोग बहुत देर से चलते चले आ रहे हैं और अब हमको थोड़ा आराम चाहिये।"

यह सुन कर सरदार ने मकड़े और न्यामे की बेटी के लिये अपना मेहमानों वाला कमरा खोल दिया। उसने मकड़े की बहुत खातिरदारी की और उसके खाने के लिये अपना सबसे मोटा बछड़ा भी कटवाया।

जब खाना तैयार हो गया तो सरदार ने मकड़े से कहा कि वह अब न्यामे की बेटी को भी जगा ले ताकि वह कुछ खा सके तो उसने जवाब दिया कि अगर उसको जगाया गया तो वह कुछ नहीं

खायेगी। इससे अच्छा तो यही है कि वह जब अपने आप उठेगी तभी वह जो कुछ खाना चाहेगी खा लेगी।

जब सब लोग सोने जाने लगे तो मकड़ा सरदार के पास गया और उससे कहा कि अच्छा होगा अगर वह उस लड़की को अपनी लड़कियों के साथ सोने देगा।

मकड़ा फिर बोला — "बच्चों को तो तुम जानते ही हो। वे सब जगह एक से ही होते हैं, यहाँ तक कि न्यामे के राज्य में भी। वह दूसरे बच्चों के साथ नहीं सोयेगी। वह केवल बड़ी लड़कियों के पास ही सोना पसन्द करती है।

तुम्हारे तो कई पत्नियाँ है सरदार, और मुझे यकीन है कि तुम्हारे कई बेटियाँ भी होंगीं और न्यामे की बेटी के साथ सोने में उनको कोई ऐतराज भी नहीं होगा।"

सरदार ने न्यामे का प्यार पाने की उम्मीद में कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। तुम उसको ले आओ और मैं उसको अपनी बेटियों के साथ सुला दूँगा।"

मकड़े ने उस लड़की का शरीर बड़ी सावधानी से उठाया और उस कमरे की तरफ ले गया जहाँ सरदार की बेटियाँ सो रही थीं। वह जब वहाँ पहुँचा तो सरदार की बेटियाँ तो सो चुकी थीं।

उसने सरदार की दो सबसे बड़ी बेटियों में से एक को एक तरफ खिसका कर उस लड़की को उन दोनों के बीच में सुला दिया।

अगले दिन सुबह मकड़े को उसके जाने से पहले बहुत ही स्वादिष्ट और बहुत ही बढ़िया नाश्ता कराया गया। नाश्ते पर जाते हुए मकड़े ने सरदार के एक नौकर से कहा कि वह जा कर देखे कि न्यामे की बेटी अभी उठी या नहीं ताकि वह भी नाश्ता कर ले और अपनी लम्बी यात्रा पर जाने के लिये तैयार हो जाये।

पर अफसोस, जब वह नौकर उस लड़की को देखने गया तो उसने बताया कि वह तो मर चुकी है।

मकड़ा बोला — "नहीं नहीं, यह नहीं हो सकता। वह मर नहीं सकती। वह जरूर ही गहरी नींद सो रही होगी।"

वह सरदार के साथ खुद उस कमरे में गया। उसने अपना हाथ उसकी नाक के आगे फिराया पर उसको तो उसकी सॉस ही महसूस नहीं हुई सो उसने उसका शरीर हिलाया पर उसका भी उसे कोई जवाब नहीं मिला। उसने फिर कोशिश की, सरदार ने भी कोशिश की पर कोई फायदा नहीं हुआ।

यह देख कर मकड़ा तो बहुत ज़ोर से रो पड़ा।

वह चिल्लाया — "ओह न्यामे की प्यारी बेटी।"

फिर वह सरदार से बोला — "जरूर ही तुम्हारी बेटी रात में उसके ऊपर आ गयी होगी और उसने उसको मार दिया होगा। अब मैं क्या करूँ?

अब मैं न्यामे के सामने कैसे जाऊँगा? मैं कैसे उसको अपना मुँह दिखाऊँगा? अब उसका गुस्सा तो उसके ऊपर ही निकलेगा जो भी उसकी प्यारी बेटी को मारने के लिये जिम्मेदार है – उसके माता पिता से ले कर पूरे राज्य पर।"

यह सुन कर सरदार तो बहुत ही घबरा गया। उसको तो समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह करे क्या। उसने न्यामे की प्रार्थना की कि वह चाहे तो उसको मार दे पर उसकी बेटियों और उसके राज्य को उसके किये की सजा न दे।

"मेहरबानी कर के ओ न्यामे, अपना गुस्सा मेरे आदमियों पर न निकालना। मैं अपने किये गये इस खराब काम के लिये आपके लिये कोई भी प्रायश्चित करने के लिये तैयार हूँ।"

मकड़ा बोला — "मुझे लगता है कि इसका केवल एक ही रास्ता है और वह यह कि तुम अपनी सबसे अच्छी बेटी मुझे दे दो ताकि मैं उसे न्यामे के पास ले जा सकूँ और फिर वह उसके साथ जो चाहे करे।

मुझे नहीं लगता कि इस मामले में किसी और तरह का प्रायश्चित काम करेगा। इस तरीके से वह तुमको और तुम्हारे राज्य दोनों को बख्श देगा।"

सरदार कुछ तसल्ली सी महसूस करते हुए बोला — "अगर इसी से काम चल जाता है तो यही सही। तुम उसको अपने साथ ले जा सकते हो।"

सो सरदार ने अपनी दूसरी बेटी मकड़े को दे दी पर मकड़े ने उसको लेने से मना कर दिया। उसने कहा कि उसको यकीन था कि उसकी सबसे बड़ी बेटी ने ही न्यामे की बेटी को मारा था। वह क्यों कि साइज़ में बड़ी थी इसलिये वही न्यामे की बेटी को मार सकती थी।

सरदार ने अपनी दोनों बेटियॉ मकड़े को दे दीं अगर वह उन दोनों को ले जाना चाहे तो, पर मकड़े ने केवल उसकी बड़ी बेटी को ही लिया।

मकड़े ने सरदार की बड़ी बेटी को साथ में लिया और उस छोटी लड़की का शरीर उठाया और न्यामे के पास आ पहुँचा। वहॉ आ कर उसने न्यामे को अपनी यात्रा का पूरा हाल बताया।

सुन कर न्यामे मकड़े की अक्लमन्दी से बहुत खुश हुआ। न्यामे ने उस छोटी लड़की के नथुनों में अपनी फूँक मार कर उसको ज़िन्दा कर दिया और उसको उसके माता पिता को वापस कर दिया। उसने सरदार की बेटी को भी सरदार को वापस कर दिया।

न्यामे फिर मकड़े से बोला — "और तुम्हारे लिये ओ अनन्सी, तुमने मुझे यह साबित कर दिया है कि मेरी दुनियॉ के सब लोगों में केवल तुम ही सबसे ज़्यादा अक्लमन्द हो इसलिये मैं अपनी बात रखूँगा।"

सो न्यामे ने मकड़े को और बहुत सारी अक्लमन्दी दी। इसी लिये मकड़ा जानवरों के राज्य में आज भी सबसे ज़्यादा अक्लमन्द

जानवर माना जाता है। इसके अलावा न्यामे ने मकड़े को उसने जितना सोचा था उससे कहीं ज़्यादा खजाना भी दिया।

पर उस खजाने का हुआ क्या यह तो किसी को नहीं पता।

क्योंकि उतना खजाना पाने के बाद वह मकड़ा फिर बहुत गरीब हो गया और इतना गरीब हो गया कि वह केवल अपनी अक्लमन्दी से जाला बुनने पर ही ज़िन्दा रहा। जानवरों के पूरे राज्य में केवल वही एक ऐसा जानवर है जो जाला बुनना जानता है और उससे अपना खाना अपने आप ही पकड़ता है।

9 जानवरों की भाषा[43]

बहुत समय पहले की बात है कि एक बार एक आदमी अपनी पत्नी के साथ अकेला रहता था। वे दोनों इतने गरीब थे कि न तो उनके पास खाने के लिये काफी था न पहनने के लिये।

वे केवल गरीब ही नहीं थे बल्कि वे बेचारे किस्मत के भी मारे थे। वे इतने ज़्यादा बदकिस्मत थे कि वे कितनी भी कोशिश करें उनका कोई भी काम ठीक नहीं होता था।

अगर वे कभी कोई बकरी या कोई जानवर या सूअर अपने खाने या पैसे कमाने के लिये खरीदते तो वह मर जाता। और अगर वे खेती करते तो या तो उनकी खेती नष्ट हो जाती या फिर जानवर आ कर उसको खोद कर खा जाते।

एक दिन जब वे अपने टूटे फूटे घर में बैठे हुए थे जिसमें बारिश के मौसम में पानी टपकता रहता था और जब सूरज निकलता था तो धूप आती रहती थी तो पति अपनी पत्नी से बोला — "शायद मेरे पास मेरी गरीबी का जवाब है।"

उसकी पत्नी बोली — "कोफ़ी[44], मुझे चिढ़ाओ मत। कोई भी हमें हमारी इस गरीबी से बाहर नहीं निकाल सकता। हम लोगों ने

---

[43] Animal Language (Tale No 9) – a folktale from Ghana, West Africa, Africa.
Read a similar story of Arabian Nights on my Web Site
http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-3/51-bull-ass.htm

[44] Kofi – a very common name of a Ghanaian man

सब कुछ तो कर के देख लिया। हमें किसी से भी कुछ नहीं मिलता। अब तो मैंने इस बारे में सोचना भी छोड़ दिया है।"

पति बोला — "हमें इस तरह से हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठना चाहिये अरबा[45]। तुम्हीं ने तो मुझसे कहा था कि उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिये और अब तुम्हीं ऐसी बात कर रही हो?"

पत्नी बोली — "ठीक है ठीक है। तो अब बताओ तुम्हारे पास इस गरीबी का क्या जवाब है?"

पति बोला — "मैं सोचता हूँ, हालाँकि मुझे पता नहीं कि यह मेरा सोचना कुछ काम करेगा या नहीं पर फिर भी।

मैं सोच रहा हूँ कि मैं सरदार कूमा[46] के पास जाऊँ और उससे उन पाम[47] के पेड़ों में से उनका रस निकालने का काम माँग लूँ जिनसे उसके यहाँ शराब निकलती है। और तुम मेरी पत्नी उस शराब को बेचने के लिये बाजार ले जाओ।"

अरबा बोली — "यह तो बहुत ही अच्छा विचार है पर क्या वह तुमको यह काम देगा?"

पति बोला — "पता नहीं वह देगा भी या नहीं पर इसको भी मालूम करने का एक ही तरीका है कि वहाँ जाया जाये और कोशिश की जाये। और इसमें मेरा कुछ जाता भी नहीं है।

---

[45] Araba – a name of a Ghanaian woman

[46] Chief Kumah

[47] Palm trees – its sap is used to make palm wine which is known as Taadee in India.

इसके अलावा उसके खेत में तो इतने सारे पाम के पेड़ हैं कि मुझे नहीं लगता कि वह मुझे थोड़े से पाम के पेड़ का रस भी नहीं निकालने देगा।

लोगों का कहना है कि वह बड़ा अमीर और दयालु है और इसी लिये लोग उसको "पैसों का सरदार"[48] कहते हैं।"

इस बीच अरबा अपनी मुर्गियों के उन अंडों को गिन रही थी जिनमें से बच्चे निकलने वाले थे। उसने अपनी ऑखें बन्द की और सोचने लगी कि वह उस शराब से मिले पैसे को कैसे खर्च करेगी।

वह नये कपड़े खरीदेगी और अपने घर की टपकती हुई छत ठीक करायेगी। उसने सोचा कि कल मिसेज नैटी[49] जो पोशाक पहने हुई थी वह नीले रंग में बहुत अच्छी लगेगी। हॉ, नीला रंग। यही रंग तो उसको चाहिये।

अगले दिन बहुत सुबह ही कोफ़ी अपने उस पैसों वाले सरदार के पास उसके कुछ पाम के पेड़ मॉगने चल दिया।

जब वह वहॉ पहुँचा तो सरदार बोला — "मेरे बेटे, यह तो बताओ कि मेरे लिये उसमें क्या है? मैं तो एक व्यापारी हूँ और मैंने इतना सारा पैसा केवल अपना पैसा दे कर ही नहीं कमाया है। तो इसमें तुम मुझे यह बताओ कि मेरा हिस्सा कितना है।

[48] Money Chief
[49] Mrs Natie

जैसा कि हमारे लोग कहते हैं कि कोई मुर्गी अपने पड़ोसी के खाने पर नहीं जीती सो हमको आपस में एक व्यापार करना चाहिये। मैं तुम्हारे हाथ धोता हूँ और तुम मेरे हाथ धोओ।"

कोफ़ी बोला — "मैं जानता हूँ कि आप एक न्याय प्रिय आदमी हैं इसलिये जो भी आप कहेंगे मुझे मंजूर है।"

सरदार कूमा बोला — "तो ऐसा करो कि तुम मेरे दस पाम के पेड़ ले लो और उनका रस निकाल लो। फिर जितना भी पैसा तुम उसकी शराब बेच कर बनाओगे उसको हम लोग बराबर बराबर बॉट लेंगे।

मैं बल्कि तुमको रस इकट्ठा करने के लिये कैलेबाश[50] भी दूँगा जिनमें तुम शराब भर सकते हो। सो अब इन कैलेबाश में से जो कैलेबाश भी तुम्हें चाहिये तुम ले लो।" इतना कह कर उसने अपने पास रखे सब कैलेबाश उसको दिखा दिये।

कोफ़ी तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। उससे जितने भी कैलेबाश उठाये जा सकते थे उसने उठा लिये और अपने घर आ गया।

[50] Dry outer cover of a pumpkin-like fruit which can be used to keep both dry and wet things – mostly found in Africa – see its picture above.

घर आ कर उसने अपनी पत्नी को सरदार से हुई इस बात के बारे में बताया तो वह भी बहुत खुश हुई। उसको लगा कि वह जो कुछ भी सोच रही थी वह बस अब सब सच होने वाला है।

अगले दिन कोफ़ी गॉव के हर आदमी से पहले उठ गया। वह अपने नये काम पर जाने के लिये बहुत बेचैन था। वहॉ जा कर उसने पाम के पेड़ गिराये और उनमें से उनका रस निकाला।

वह सारा दिन बहुत मेहनत से काम करता रहा। यहॉ तक कि शाम को भी देर तक वह अपने काम में लगा रहा जब तक कि उसके पेट में खाने के लिये चूहे नहीं कूदने लगे।

उसने सोचा "एक बार शराब निकल आये और बिक जाये फिर मैं जितना खाना खाना चाहूँगा उतना खाऊँगा पर अभी तो मुझे काम करना चाहिये।"

सो उस रात कोफ़ी और उसकी पत्नी बहुत देर तक बात करते रहे। उन्होंने इतनी बातें की जितनी शायद उन्होंने पहले कभी नहीं की थीं। वे अचानक बहुत खुश थे और सुबह होने की राह देख रहे थे। उन्होंने खेल खेले और अगले दिन की तैयारी की कि वह कितने कैलेबाश भर कर शराब निकालेंगे।

अगले दिन सुबह बहुत जल्दी ही कोफ़ी शराब इकट्ठी करने के लिये जंगल चल दिया। जैसे ही वह अपने पहले पेड़ के पास पहुँचा वह चिल्लाया — "ओह नहीं।" उसने देखा कि उसका तो वहॉ कैलेबाश ही टूटा पड़ा था।

उसने पूछा — "किसने किया यह?"

पर उसको यकीन था कि दूसरे कैलेबाशों के साथ ऐसा नहीं हुआ होगा। ऐसा सोच कर उसने इस पहले पेड़ से निकाली शराब का ज़्यादा दुख नहीं मनाया।

फिर इस उम्मीद में कि दूसरे कैलेबाश तो ठीक ही होंगे वह दूसरे पेड़ की तरफ दौड़ा पर उसकी बदकिस्मती से वह कैलेबाश भी टूटा हुआ था।

इस तरह एक एक कर के वह अपने हर पाम के पेड़ के पास गया पर उसको अपना हर कैलेबाश टूटा मिला और उसकी सब शराब जा चुकी थी। अब वहाँ जो कुछ भी बचा था वह थे टूटे हुए कैलेबाश के टुकड़े और उस बिखरी हुई शराब के ऊपर मँडराते हुए मक्खियों और मधुमक्खियों के झुंड।

यह सब देख कर कोफ़ी बहुत परेशान सा अपनी पत्नी के पास अपने घर दौड़ा गया। उसकी पत्नी ने उसको इतना परेशान देख कर पूछा — "क्या हुआ कोफ़ी?"

कोफ़ी बोला — "अरबा, हमारे ऊपर एक बार बिजली फिर गिर पड़ी हैं। मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि मैं जो कुछ भी करने की कोशिश करता हूँ वह सब बेकार हो जाता है। जब मैं वहाँ शराब इकट्ठी करने गया तो वहाँ सारे कैलेबाश टूटे पड़े थे और कोई शराब नहीं थी।"

अरबा ने आश्चर्य और दुख से कहा — "ऐसी बात न करो कोफ़ी। तुम तो बहुत मेहनती हो और हमारे भगवान को हमारे ऊपर कभी तो दया करनी पड़ेगी। तुमको अपनी कोशिश करते रहना चाहिये।

मुझे यकीन है कि वहाँ उन पेड़ों में शराब थी तो जरूर पर मुझे यह लगता है कि कोई उसको चुरा कर ले गया है और अपनी चाल को छिपाने के लिये वे बर्तन तोड़ गया है।"

कोफ़ी धीरे से बोला — "तुम ठीक कहती हो शायद। मुझे ऐसे ही हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठ जाना चाहिये और अपनी कोशिश करते रहना चाहिये।"

अरबा मुस्कुरा कर बोली — "छोड़ देने की बात छोड़ो।"

कोफ़ी ने जब अरबा की मुस्कुराहट देखी तो अरबा फिर बोली — "यही तो वह आदमी है जिससे मैंने शादी की थी।"

इस तरह अपनी पत्नी के उत्साह भरे शब्द सुन कर कोफ़ी फिर से सरदार कूमा के पास और कैलेबाश उधार माँगने गया। उसने पाम के पेड़ों में से रस निकालने के लिये फिर से उनको काटा और उनके नीचे रस को इकट्ठा करने के लिये उनमें कैलेबाश बाँधा और घर आ गया।

पर अगली सुबह जब वह फिर से रस इकट्ठा करने के लिये उन पेड़ों के पास गया तो वे सारे कैलेबाश फिर से टूटे पड़े थे और फिर से मक्खियाँ और मधुमक्खियाँ उनके रस के ऊपर लड़ रहीं थीं।

इस बार कोफ़ी को विश्वास हो गया कि यह काम किसी चोर का ही था उसकी बदकिस्मती का नहीं।

सो कोफी सरदार कूमा के पास फिर से कुछ और कैलेबाश उधार मॉगने के लिये गया। इस बार उसने शराब इकट्ठा करने के लिये उनको लगा कर यह देखने के लिये वहीं बैठने का फैसला किया कि वह यह देखे कि उसके साथ ऐसा कौन करता है।

कैलेबाश लगा कर वह एक ऐसी जगह छिप कर बैठ गया जहॉ से वह अपने पेड़ों को ठीक से देख सकता था। वह बड़े धीरज से इन्तजार करता रहा। पर इन्तजार करते करते वह थक गया सो वह सोने ही वाला था कि मच्छरों के झुंड की भिनभिनाहट ने उसको जगा दिया।

अब बजाय इसके कि वह उनको अपनी ठोड़ी और कान पर हाथ मार कर मारता उसने उनको अपना हाथ हिला कर ही हटा दिया। उसको लगा कि अगर उसने मच्छरों को मारा तो शायद चोर को पता चल जाये कि वह वहॉ छिपा हुआ है।

फिर कई घंटों तक कोफ़ी फिर से इन्तजार करता रहा पर वे मच्छर उसको बहुत तंग कर रहे थे। तभी उसने अपने कुछ ही गज पीछे एक डंडी के टूटने की आवाज सुनी।

एक पल के लिये उसको यह सोच कर आश्चर्य हुआ कि वह वहॉ उस गहरे जंगल में था ही क्यों। क्या वे बर्तन उसकी ज़िन्दगी

से ज़्यादा कीमती थे? अगर वह चोर कोई जंगली जानवर हो जिससे वह नहीं लड़ सकता हो तो? या फिर... ?

तभी उसको एक बर्तन के टूटने की आवाज सुनायी दी। उसने चॉद की बहुत ही धुँधली रोशनी में देखने की कोशिश की तो उसको लगा कि एक हिरन उसके एक कैलेबाश के पास खड़ा था।

वह उस हिरन की तरफ देख ही रहा था कि उस हिरन ने एक पेड़ के नीचे से कोफ़ी का एक बर्तन खींच लिया और उस बर्तन का सारा रस अपने बर्तन में पलट लिया और कोफ़ी का बर्तन तोड़ कर जमीन पर फेंक दिया।

कोफ़ी उस हिरन के पीछे उसके सींगों को निशाना बनाते हुए भागा। हालॉकि हिरन तुरन्त ही कूद कर वहॉ से भाग लिया पर कोफ़ी उसका पीछा करता ही रहा। उसने सोच रखा था कि आज वह इस हिरन को अपने हाथ से जाने नहीं देगा।

यह दौड़ सुबह तब तक चलती रही जब तक सूरज निकला और इस तरह वे एक ऊॅची पहाड़ी पर जा पहुॅचे।

कि तभी पहाड़ी से नीचे उतरते समय कोफ़ी को जानवरों का एक झुंड अपनी मीटिंग करता मिल गया। उस मीटिंग के बीच में एक शेर बैठा था और कोफ़ी को लगा कि वह उनका राजा था।

भागते भागते कोफ़ी रुक गया। वह बोला — "अब मुझे पता चल गया कि यह जंगली जानवरों का काम है।"

वह हिरन भागते भागते जानवरों के उस झुंड में घुस गया और जा कर शेर के सामने अपने दोनों आगे वाले पैर फैला कर और अपना सिर उनके बीच में रख कर बैठ गया जैसे वह उसको सिर झुका कर प्रणाम कर रहा हो।

शेर बोला — "क्या बात है हिरन? क्या यह तुम्हारे लिये काफी नहीं था कि हमने तुम्हारे ऊपर खुले जंगल में ध्यान देना बन्द कर दिया था? और अब तुमने हमारे घरों में भी हमारा पीछा करना शुरू कर दिया?"

इससे पहले कि शेर अपनी बात खत्म करता हिरन ने हॉफते हुए अपनी कहानी सुना दी। बन्दर जो शेर का सहायक लगता था उसने कोफ़ी से शेर को यह बताने के लिये कहा कि वह शेर को यह बताये कि वह उनके दोस्त का पीछा क्यों कर रहा था।

कोफ़ी ने उनको अपनी कहानी बताने में ज़रा सा भी समय बर्बाद नहीं किया।

उसने उनको बताया कि किस तरह उसकी किस्मत उसका साथ नहीं दे रही थी और किस तरह फिर उसने यह सोचा कि ये पाम के पेड़ उसको अमीर बना देंगे। और फिर किस तरह उसको यह पता लगा कि वह हिरन उसकी शराब चुरा रहा था।

फिर उसने शेर से उसकी मीटिंग मे दखल देने के लिये माफी मॉगी और अपने घर अपनी पत्नी के पास वापस जाने की आज्ञा मॉगी।

शेर बोला — "मैं बहुत ही न्याय प्रिय जज हूँ। और तुम्हारे कहानी कहने से मुझे लग रहा है कि यह हिरन की गलती है कि उसने तुम्हारा पाम का रस चुराया। उसको हमारे दरबार के लिये शराब खरीदने के लिये काफी पैसे दिये गये थे पर उसने उसे तुमसे चुराना ज़्यादा अच्छा समझा।

उसने उस पैसे का क्या किया यह तो मुझे नहीं पता। इसके लिये तो मैं उससे बाद में निपटूँगा पर तुमको मैं एक बहुत ही खास भेंट देना चाहता हूँ। यह भेंट तुम्हारी मुश्किलों को दस गुना आसान बना देगी। और वह भेंट यह है आज के बाद तुम्हारे अन्दर सब जानवरों की भाषा समझने की ताकत आ जायेगी।"

कोफ़ी वहाँ इस इन्तजार में खड़ा रहा कि उसको वह भेंट कब मिलेगी जो उसकी मुश्किलों को दस गुना आसान बना देगी। क्योंकि उसको ऐसा लग ही नहीं रहा था कि यह भेंट कोई ऐसी भेंट थी जो उसकी मुश्किल आसान कर सकती थी।

शेर बोला — "अब तुम जा सकते हो। अब हम अपने दोस्त के बारे में बात करेंगे कि उसका हमें क्या करना है।"

कोफ़ी ने जानवरों को अपना सिर झुका कर वहाँ से जाते हुए सोचा यह तो बड़ी अजीब सी बात है। यह क्या भेंट हुई पर कहीं शेर नाराज न हो जाये इसलिये उसने शेर को धन्यवाद दिया और वहाँ से जाने के लिये मुड़ा कि शेर बोला — "तुम्हारी भेंट के बारे एक और बात।"

"क्या?" कोफ़ी ने कुछ परेशान सा होते हुए पूछा।

"तुम यह बात किसी को नहीं बताओगे कि तुमको जानवरों की भाषा आती है और अगर बताओगे तो तुम मर जाओगे।"

कोफ़ी ने शेर को एक बार फिर धन्यवाद दिया और वहाँ से लौट पड़ा। हालाँकि जब वह लौट रहा था तो वह बहुत ही नाउम्मीद सा लौट रहा था।

वह सोच रहा था — "यह क्या भेंट थी? जानवरों की भाषा समझ कर मैं अपने नुकसान को कैसे पूरा कर पाऊँगा? यह तो बहुत बड़ा मजाक था मेरे साथ।

और इसके बारे में बात न करना तो और भी बड़ा मजाक है। इससे तो मैं मर जाना ज़्यादा पसन्द करूँगा बजाय इसके कि मैं इसके बारे में चुप रहूँ।"

इतनी लम्बी दौड़ से थका हुआ और नाउम्मीद कोफ़ी अपने घर चला गया। उसको डर था कि उसकी पत्नी तो पागल ही हो जायेगी जब उसको लगेगा कि वह इतनी देर तक घर से बाहर रहा।

पर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने अपनी पत्नी को समझदार पाया कि उसने उससे उसके बाहर रहने को बारे में ज़्यादा कुछ खास नहीं पूछा। वह तो बस उसके वापस आने पर बहुत खुश थी।

वह बोली — "तुम इतनी देर तक थे कहॉ? तुम्हारा चेहरा तो बहुत ही खराब लग रहा है। तुम ठीक तो हो न? क्या तुम चोर को पकड़ सके?"

वह बोला — "वह चोर एक हिरन था जो हमारी बदकिस्मती बन कर आया था। मैं उसके पीछे भागा भी पर उसको पकड़ नहीं सका।"

उस रात कोफ़ी फिर से अपने पाम के पेड़ों को देखने के लिये गया कि हिरन कहीं फिर से तो उसकी पाम की शराब लेने के लिये न आया हो। पर अबकी बार हिरन वापस नहीं आया था। अगले दिन सुबह उसके सारे कैलेबाश पाम की शराब से भरे हुए थे।

यह देख कर कोफ़ी बहुत खुश हुआ और सारे कैलेबाश घर ले आया और उनको अपनी पत्नी के बाजार ले जाने के लिये तैयार कर दिये। अब वह रोज सुबह पाम की शराब घर ले आता और उसकी पत्नी उनको अच्छे दाम पर बाजार में बेच देती।

उस रात के बाद यानी जबसे कोफ़ी ने उस हिरन का पीछा किया था उसकी किस्मत अब कुछ कुछ जाग गयी थी। अब उसके पास कुछ पैसे जमा हो गये थे जिनसे वह अपनी जरूरत की कुछ चीजें खरीद सकता था जैसे जानवर, बकरियॉ, घोड़े।

उसकी पत्नी भी अब पहले से बहुत खुश थी क्योंकि उसने भी कुछ नये कपड़े बनवा लिये थे ताकि वह अब लोगों में ठीक से दिखायी दे सके।

इस बीच कोफ़ी भी अब जानवरों की भाषा समझने लगा था कि वे क्या कह रहे थे। अक्सर वह उनकी बातें समझ कर मुस्कुरा देता या फिर ज़ोर से हॅस पड़ता लेकिन फिर उसको अजीब लगता क्योंकि कोई यह नहीं जान पाता कि वह क्यों हॅस रहा है।

एक गर्म दिन को तीसरे पहर में अपने खेत को बोआई के लिये जोतने के बाद कोफ़ी नदी पर नहाने गया।

वहॉ उसने सुना कि एक मुर्गी अपने दस बच्चों से कह रही थी — "यह आदमी इतना बेवकूफ कैसे हो सकता है कि केवल पानी अपने शरीर के ऊपर डालने के लिये ही अपने सारे कपड़े उतार दे।

कोई आश्चर्य नहीं कि उसको तो यह पता ही नहीं होगा कि सोने से भरा एक बक्सा तो इसके अपने मकान के पीछे की तरफ ही गड़ा है।

मैंने पिछली बार उसको वहॉ तब देखा था जब मैं वहॉ कीड़ों के लिये उस जगह को खुरच रही थी। पर फिर मैंने उसको मिट्टी से ढक दिया क्योंकि एक कुत्ते ने मुझे वहॉ से भगा दिया था।"

"हा हा हा हा"। कोफ़ी यह सुन कर हॅसा तो वह मुर्गी उसकी इस हॅसी से चौंक गयी सो वह जल्दी ही चुप हो गया। फिर यह यकीन करने के लिये कि वह कहीं सपना तो नहीं देख रहा उसने अपनी हथेली अपने चेहरे पर कई बार फेरी। उसको लगा कि नहीं वह कोई सपना नहीं देख रहा था यह सब वाकई उसने सुना था।

उसने अपनी छोटी उँगली अपने कान में डाल कर कान भी साफ किये। उसने देखा कि उसके कान भी ठीक ही थे।

फिर उसने मुर्गी को अपने एक बच्चे को डाँटते हुए सुना — "उस कीड़े को अपने भाई के लिये छोड़ दे मैंने तुझे पहला कीड़ा दिया था न? तुझे बाँट कर खाना सीखना चाहिये।"

यह विश्वास करने के बाद कि उसने सब कुछ ठीक ही सुना था उसने अपना नहाना जारी रखा जैसे कुछ हुआ ही नहीं। नहा धो कर वह घर वापस आ गया।

रात हो जाने के बाद जब सब सो गये तो उसने अपना हल उठाया और अपने घर के पीछे गया और सोने से भरा बक्सा निकाल लिया।

अब क्या था अब तो उसके चारों तरफ सोना ही सोना हो गया था। और उस बक्से में तो इतना सारा सोना था कि वह और उसकी पत्नी दोनों अपनी सारी ज़िन्दगी बिना कुछ किये धरे गुजार सकते थे।

पर यह सब बात वह अपनी पत्नी को तो नहीं बता सकता था न कि उसको यह कहाँ से पता चला कि वह सोना वहाँ था और फिर उसे कहाँ खोदना था।

उसने वह बक्सा एक सुरक्षित जगह छिपा दिया और जैसे जैसे उसको उसकी जरूरत पड़ती जाती थी वह उसमें से एक एक टुकड़ा घर लाने लगा।

अब क्या था कोफ़ी और अरबा गॉव के ही नहीं बल्कि अपने देश के सबसे अमीर आदमी हो गये। अरबा गरीबों पर बहुत दयालु थी वह उनको अपने पैरों पर खड़ा होने में बहुत सहायता करती थी।

कोफ़ी भी बहुत दयालु था पर वह अपना ध्यान और ज़्यादा पैसा बनाने पर और और ज़्यादा मशहूर होने पर लगा रहा था। उन दोनों की ज़िन्दगी इससे अच्छी हो ही नहीं सकती थी। वे दोनों बहुत खुश थे। जल्दी ही उनके एक बेटा हुआ जिसको वे बहुत प्यार करते थे।

एक रात जब कोफ़ी और अरबा सोने के लिये लेटे तो कोफ़ी ने एक चुहिया दरवाजे पर कराहती हुई सुनी।

एक चूहा उससे बोला — "ये लोग अब बहुत अमीर हो गये हैं। अब इन्होंने अपने सारे दरवाजे लोहे के लगवा लिये हैं।

हम लोगों के लिये पहले अच्छा था जब ये लोग गरीब थे क्योंकि तब इनके लकड़ी के दरवाजे थे और तब तुम्हारी कराहट इन के दरवाजे से हो कर अन्दर जा सकती थी पर अब नहीं जा सकती।"

"हा हा हा हा।" कोफ़ी यह सुन कर हॅस पड़ा। वह भूल गया था कि इस समय वह अपनी पत्नी के साथ था।

सो अरबा ने जैसे ही उसको हॅसते हुए सुना तो वह सोते से जागी और उससे पूछा — "हॅसने की क्या बात है कोफ़ी? क्या तुम फिर से मेरे खर्राटों पर हॅस रहे हो?"

कोफ़ी ने बात टाली — "नहीं नहीं। कुछ नहीं। मैं तो केवल सपना देख रहा था। तुम सो जाओ।" पर उसका हॅसना इतनी ज़ोर का था कि उसने बच्चे को भी जगा दिया।

और अरबा को यह अच्छा नहीं लगा क्योंकि बड़ी मुश्किल से तो उसने बच्चे को सुलाया था।

वह बोली — "यह तुम्हारा हॅसना तुमको किसी दिन किसी मुश्किल में डालेगा। मैंने इसको कई बार टालने की कोशिश की है पर आजकल तो तुम किसी मरे हुए शरीर पर भी हॅसते हो जो रोने वालों की भीड़ में होता है और फिर अपने आप ही बेवकूफ बनते हो। अब मुझे इसे सुलाने के लिये फिर से दूध पिलाना पड़ेगा। काश तुम इसको दूध पिला सकते।"

"मुझे अफसोस है प्रिये कि मैं यह काम नहीं कर सकता। हा हा हा हा। पर तुम अब सो जाओ।"

जैसी कि एक बहुत पुरानी कहावत है कि जब कुत्ते की मौत आती है तो उसकी सूँघने की ताकत खत्म हो जाती है, खास कर के मॉस की जो कि उसका सबसे प्यारा खाना है।

हालॉकि कोफ़ी अब एक बहुत ही अमीर आदमी था पर वह अपनी एक पत्नी से सन्तुष्ट था पर क्योंकि कोफ़ी के गॉव में एक से

ज़्यादा पत्नी रखना अमीरी की एक निशानी थी सो उसने निश्चय किया कि वह एक और शादी करेगा।

कोफ़ी ने एक ऐसी सुन्दर लड़की से शादी की जिसको देख कर किसी को भी जलन हो सकती थी। वह लड़की कोफ़ी को अरबा के साथ बिल्कुल नहीं देख सकती थी।

जब वे साथ साथ हॅसते तो वह कहती कि वे उसके ऊपर हॅस रहे थे। जब वे आपस में बात करते तो वह कहती कि वे उसकी बुराई कर रहे थे। वह बस तभी खुश रहती जब वे आपस में लड़ रहे होते।

एक दिन जब वे अपने घर के पिछवाड़े खाना बना रहे थे तो कोफ़ी की दूसरी पत्नी वहॉ आयी तो कोफ़ी ने कुछ कुत्तों को उसके बारे में बात करते सुना।

एक कुत्ते ने दूसरे से कहा — "इसको देखो यह फिर यहॉ है। जबसे यह यहॉ आयी है तबसे हमारा तो खाने का हिस्सा ही कम हो गया है।"

दूसरा बोला — "वह सोचती है कि वह अगर हमारा हिस्सा खा लेती है तो वह बहुत बड़ी हो जायेगी।"

कोफ़ी फिर ज़ोर से हॅस पड़ा। अरबा ने पूछा — "तुम किस बात पर हॅस रहे हो? क्या तुम्हें पता नहीं कि अगर कोई आदमी अकेला हॅसता है तो उसके जबड़े में दर्द हो जाता है?"

कोफ़ी की दूसरी पत्नी बोली — "बहाने मत बनाओ कि तुम जानती नहीं हो कि मैं यहाँ क्यों हूँ। मैं तुमको सारी रात अपने बारे में बात करते और हँसते सुनती हूँ और अब तुम मेरे सामने भी यह सब करने लगे हो। भगवान जानता है कि जब मैं यहाँ नहीं होती हूँ तब न जाने तुम क्या करते होगे।"

अरबा ने उसको समझाने की कोशिश की — "मैं सच कहती हूँ कि मुझे यह नहीं मालूम कि यह क्यों हँस रहा है।"

पर कोफ़ी की दूसरी पत्नी कुछ सुनने को तैयार नहीं थी।

कोफ़ी ने अरबा को बचाने की कोशिश भी की पर इससे यह मामला और बिगड़ गया। उसकी दूसरी पत्नी ने यह सोच लिया था कि कोफ़ी अरबा को बहुत प्यार करता था और उसको किसी भी मुश्किल से बचाने के लिये कुछ भी कर सकता था।

इस तरह से कोफ़ी अपनी दो पत्नियों के साथ काफी समय तक रहता रहा पर एक दिन उसकी यह हँसी उसके लिये बहुत मँहगी पड़ गयी।

एक बार जब कोफ़ी का बेटा बड़ा हो गया तो इस खुशी में उसने दो दिन की दावत का इन्तजाम किया। उसने दो गाय, दो बकरे और कुछ मुर्गे चुने और उनको मारने के लिये बँधवा दिया।

वह भीड़ में बैठा हुआ था और अपनी पत्नियों की सहेलियों को एक खास नाच नाचते देख रहा था।

उस समय उसने एक गाय को यह कहते सुना — "यहाँ तो कुछ मजा नहीं आ रहा है। यह कब खत्म होगा। मैं तो यहाँ से बहुत जल्दी चले जाना चाहती हूँ।"

तो कोफ़ी का एक कुत्ता बोला — "जब तक तुम इसका आनन्द ले सकती हो अच्छा है कि तुम उसे ले लो क्योंकि कल को तो तुम्हारी हड्डियाँ भी मेरी हो जायेंगी।"

बदकिस्मती से इसी समय कोफ़ी की दूसरी पत्नी अकेले ही नाच रही थी। कुत्ते की बात सुन कर कोफ़ी को फिर एक बार हँसी का दौरा पड़ गया — "हा हा हा हा।"

उसको हँसता देख कर उसकी दूसरी पत्नी ने नाचना बन्द कर दिया और बोली — "बस, अब मैं और नहीं नाच सकती। सब लोग मेरे गवाह हैं कि तुम मेरे नाच पर हँस रहे हो क्योंकि मुझे नाचना नहीं आता न।"

कोफ़ी ने कहा — "नहीं नहीं। ऐसा नहीं है मुझे तो बस ऐसे ही कुछ याद आ गया था और मैं हँस पड़ा।"

उसने पूछा — "तो बताओ कि ऐसी कौन सी चीज़ तुमको इस समय याद आ गयी थी जो तुम इतनी ज़ोर से हँस पड़े।"

पर कोफ़ी तो इस डर से कि वह मर जायेगा उसको यह बता भी नहीं सकता था कि वह क्यों हँस रहा था। बिना किसी और अप्रिय घटना के यह सब खत्म हो जाये इसलिये कोफ़ी ने उसको

वायदा किया कि वह अपनी उस याद के बारे में उसको बाद में बता देगा।

कई दिन तक कोफ़ी की दूसरी पत्नी उससे पूछती रही कि उस दिन दावत के दिन वह क्या सोच कर हॅसा था पर उसने हमेशा ही उसे टाल दिया। जब उसकी पत्नी और नहीं सह सकी तो वह इस मामले को ले कर गॉव के सरदार के पास पहुॅची।

सरदार ने कोफ़ी से कहा — "कोफ़ी, अब यह मामला काफी दूर तक आ गया है मेरे दोस्त। अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैंने इस मामले को अब तक कब का खत्म कर दिया होता।"

कोफ़ी ने सरदार से कहा — "मुझे अफसोस है सरदार कि मैं यह नहीं बता सकता क्योंकि अगर मैंने बताया तो मैं मर जाऊॅगा।"

यह सुन कर सरदार बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — "यह तो एक और अजीब बात है कि तुम क्या सोच रहे हो यह बताने से तुम मर जाओगे। लगता है कि तुम मजाक कर रहे हो। ऐसा भला कौन है जो यह बता कर मर जायेगा कि वह क्या सोच रहा था?"

कोफ़ी वहॉ चुपचाप खड़ा था उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। अगर उसने अपने हॅसने की वजह बता दी तो वह यकीनन मर जायेगा। और अगर उसने नहीं बताया तो भी वह मर जायेगा, हालॉकि तब वह अपनी पत्नी की बातों से धीरे धीरे मरेगा।

सो उसने मरने का पहला तरीका चुना। उसने अगले दिन अपने सब दोस्तों को, परिवार वालों को और सरदार को अपने घर अपने मरने की दावत में बुलाया। उसने अब तक बहुत अच्छी ज़िन्दगी गुजारी थी सो वहॉ काफी लोग आये थे।

जब वे सब आ गये तो कोफ़ी बोला — "किसी को मेरे मरने पर रोने की जरूरत नहीं है क्योंकि मैं तुम सब लोगों की वजह से ही मर रहा हूॅ। अरबा, मैं तुमको अपना सारा सोना देता हूॅ। और मेरे बेटे, मैं तुमको अपनी सारी जायदाद देता हूॅ।"

फिर सरदार को सिर झुकाते हुए उसने अपनी हिरन और राजा शेर से मिलने की और शेर की उसके नुकसान भरने के बदले में भेंट देने की कहानी सुनायी।

तब उसने उनको बताया कि वह अपने बेटे की दावत वाले दिन क्यों हॅस रहा था। जैसे ही उसने अपनी बात खत्म की वह मर कर जमीन पर गिर पड़ा।

वह दावत तो रोने में बदल गयी। गॉव वाले तो इतने ज़्यादा दुखी और गुस्सा थे कि उनको यह पता ही नहीं था कि वे कर क्या रहे थे जब उन्होंने कोफ़ी की दूसरी पत्नी को पकड़ा और उसको मार दिया।

उसको उन लोगों ने जला दिया और उसकी राख एक थैले में भर कर कौए को दे दी ताकि वह उसको नदी में फेंक दे।

पर कौआ शायद यह जानने के लिये बहुत इच्छुक था कि उस थैले में क्या था सो जब वह उसको ले कर उड़ा तो उसने उस थैले को बीच में ही खोल कर देखा कि उसमें क्या था।

थैले के खुलते ही उसमें से कोफ़ी की पत्नी की राख उड़ कर चारों तरफ बिखर गयी। वह जहॉ भी गिरी लोगों के दिलों में एक दूसरे के लिये जलन पैदा हो गयी।

यहीं से बुरे आदमियों और बुरी चीज़ों की शुरूआत हुई। इस से पहले यहॉ हर जगह दया और प्यार था।

10 खोजने वाले और रखवाले[51]

एक नर गिलहरी बहुत ही अच्छा किसान था और खेती के मौसम में बहुत बड़ी बड़ी जमीनों में खेती करता था। जब फसल काटने का मौसम आता था वह अपनी फसल इकट्ठी करता और उसको अपने अनाजघर में सूखे के मौसम के लिये इकट्ठा कर लेता।

अगली बार भी वह ऐसा ही करता। जब उसके अनाजघर भर जाते तो बचा हुआ अनाज वह बेच देता।

कुछ समय बाद नर गिलहरी ने महसूस किया कि जो जमीनें वहॉ जानवरों के पास थीं वे कई बार जोती जा चुकी थीं और उनकी फसल अब बहुत कम हो गयी थी सो उसने किसी दूसरी नयी जगह जाने का विचार किया।

जैसा कि हम गिलहरियों को जानते हैं वे पेड़ पर चढ़ सकते हैं। वे एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद कर भी जा सकते हैं और बहुत दूर तक जा सकते हैं। पेड़ के ऊपर से वे दूर तक यह भी देख सकते हैं कि उनको किधर जाना है आदि आदि।

सो एक दिन वह नर गिलहरी एक बहुत ऊॅचे पेड़ पर चढ़ गया और वहॉ से इधर उधर देख कर अपनी खेती के लिये कोई अच्छी

[51] Finders Keepers (Tale No 10) – a folktale from Ghana, Africa.

सी जमीन देखने लगा। वहॉ से उसको जमीन का एक टुकड़ा दिखायी दे गया।

उसको लगा कि वह जमीन का टुकड़ा उसकी मक्का[52] बोने के लिये बहुत अच्छा रहेगा। बस वह पेड़ों पेड़ों होता हुआ उस जमीन तक पहुॅच गया और जैसा कि उसने सोचा था उस जमीन की मिट्टी बहुत काली और उपजाऊ थी। वह उसकी मक्का की खेती के लिये बहुत अच्छी थी।

वह नीचे उतर कर उस जमीन पर गया और यह देखने के लिये वहॉ की थोड़ी सी मिट्टी खोदी कि वह जमीन कैसी थी। वह मिट्टी अच्छी थी। वह उस जमीन से सन्तुष्ट था।

"बस यह ठीक है। इस बार मैं अपनी मक्का यहीं बोऊॅगा। मुझे पूरी उम्मीद है कि इस बार मेरी मक्का की फसल और सब मौसमों की मक्का की फसल से बहुत अच्छी होगी। पर इसमें से ये झाड़ियॉ साफ करना थोड़ा मुश्किल काम है।"

पर क्योंकि वह एक मेहनती जानवर था इसलिये वह तुरन्त ही अपने काम में लग गया। उसने वहॉ उगा हुआ सारा जंगल साफ कर दिया और झाड़ियॉ जला दीं।

इस काम को करते करते उसको कई दिन लग गये। काम खत्म कर के उसने उस जमीन को जोता और उसमें अपनी मक्का बो दी। जमीन बहुत अच्छी थी सो बहुत जल्दी ही मक्का निकल कर बढ़ने

[52] Translated from the word "Corn" (or Maize). See its picture above.

लगी। उसकी पत्तियॉ हरी भरी थीं। समय आने पर मक्का भी तैयार हो गयी और फिर जल्दी ही फसल काटने का समय भी आ गया।

अब क्योंकि नर गिलहरी पेड़ों के ऊपर से हो कर वहॉ आया था तो उसने तो यह सोचा ही नहीं कि उसके खेत को एक सड़क की भी जरूरत थी।

उसे इस बात से भी कोई मतलब भी नहीं था कि उसका खेत कहॉ था क्योंकि वह तो हमेशा ही अपने खेत पर पेड़ों पर चढ़ कर आ सकता था।

एक दिन अनन्सी मकड़ा शिकार के लिये निकला। उससे जितना हो सकता था उसने अपने आस पास का सारा इलाका छान मारा पर उस दिन उसे कोई शिकार ही नहीं मिला।

वह फिर जंगल में और भी अन्दर तक चला गया जहॉ उसको शाम के खाने के लिये कुछ पाने की उम्मीद थी पर वहॉ भी उसको कोई शिकार तो नहीं मिला, हॉ वहॉ उसको उस नर गिलहरी का खेत दिखायी दे गया।

मकड़े ने अपने आपसे कहा — "आहा, देखो तो कुदरत का कितना अच्छा खेल है कि अब तक जितने भी मक्का के खेत मैंने देखे हैं उन सबमें यह खेत सबसे अच्छा है। यह खेत किसका हो सकता है।"

फिर उसने उस खेत में घुसने के लिये उसके चारों तरफ चक्कर लगाया तो न तो उसमें उसे घुसने का कोई दरवाजा मिला और न ही उसके मालिक के घर को जाने वाली कोई सड़क ही मिली।

वह बोला — "यह तो बड़ी अजीब बात है कि इतना सुन्दर खेत और उसमें जाने के लिये कोई सड़क नहीं? यह कैसे हो सकता है?

कोई इतना लापरवाह कैसे हो सकता है कि जिसने इतने अच्छे खेत में अपना इतना समय लगाया वही थोड़ा सा समय निकाल कर सड़क नहीं बना पाया?"

तब मकड़े ने यह देखना शरू किया कि मक्का के उस खेत को वह कैसे ले सकता था। उसने कई तरीके सोचे जिससे वह उस खेत पर अपना दावा कर सके।

उस रात जब वह सोने गया तो वह सो नहीं सका। रात भर वह बिस्तर में इधर उधर करवटें बदलता रहा और दिन में सोचे हुए अपने तरीकों को तौलता रहा कि उस खेत को लेने का कौन सा तरीका उसके लिये सबसे अच्छा रहेगा।

यही सोचते सोचते पता नहीं कब उसे नींद आ गयी। पर सपने में भी वह कुछ कुछ बड़बड़ाता ही रहा।

वह बोल रहा था — "मैंने उसको रात को जोता। ठीक? नहीं नहीं। इस पर तो कोई विश्वास ही नहीं करेगा।"

सुबह को उसकी पत्नी ने उसे जगाया — "उठो? तुम तो सोते में भी बात कर रहे थे। क्या बात है किससे बात कर रहे थे?"

वह चिल्लाया — "अब मुझे पता चल गया। पर तुम मुझे ज़रा यह तो बताओ कि किस तरह कई महीनों की मेहनत का फायदा तुम एक दिन में ही उठा सकती हो?"

अनन्सी की पत्नी बोली — "तुम तो मुझे जानते ही हो। मैं तो सबसे आसान तरीका लेती हूँ। बताओ तुम क्या करना चाहते हो?"

तब अनन्सी ने अपने परिवार को बुलाया। पहले तो उसने उन सबको यह बताया कि उसको वह मक्का का खेत मिला कैसे।

फिर वह बोला — "यह सब भगवान की दया है। मैं जब सुबह उठा और शिकार के लिये तैयार हुआ तो मेरी दाहिनी ऑख इतनी ज़ोर से फड़की जैसे मानो निकल कर गिर ही पड़ेगी।

और जब मैं इस बात का पता न लगा सका कि ऐसा क्यों हो रहा है तो मैं एक पुजारी[53] के पास गया। उसने मुझे बताया कि मेरी ऑख इसलिये फड़क रही थी कि मुझे कहीं से कुछ बड़ी सी चीज़ मिलने वाली थी। मैंने दूर दूर तक देखा पर मुझे तो कहीं एक चूहा भी नजर नहीं आया।

[53] Translated for the word "Diviner" – they are like our Indian Pandit who tell the future by divine means.

पर तभी मुझे एक खेत दिखायी दे गया। भगवान के भी बस काम करने के अपने ही तरीके हैं। जब वह सारे मौकों के दरवाजे बन्द कर देता है तो फिर वह कहीं कोई खिड़की खोल देता है।

मुझे उसने वह खेत दे दिया। अब हमको देखना यह है कि हम वह खेत किसी दूसरे के ले लेने से पहले ही अपने कब्जे में कर लें।"

फिर उसने अपने परिवार को अपने प्लान के बारे में बताया कि वह क्या करना चाहता था। सुबह सुबह सबसे पहले हम सबको वहाँ जा कर उस खेत तक पहुँचने का एक रास्ता बनाना चाहिये और फिर बिना समय बरबाद किये उसकी फसल काट कर अपने अनाजघर में इकट्ठी कर लेनी चाहिये।

सो अगले दिन सुबह सुबह, मुर्गे के बाँग देने से भी पहले, अनन्सी और उसके परिवार के **100** मजबूत लोग अपने अपने बड़े बड़े चाकू[54] और हल ले कर उस खेत तक गये और उन सबने मिल कर अपने घर से ले कर उस खेत तक झाड़ियों में से हो कर सड़क बनायी।

इस सड़क को बनाने के लिये उन्होंने इतनी ज़्यादा मेहनत से काम किया जितना पहले कभी नहीं किया था। सड़क बना कर उन्होंने उस रास्ते के पास कुछ टूटे फूटे मिट्टी के बर्तन के टुकड़े और

[54] Translated for the word "Matchet" – it is very long blade knife, about 2 feet long, to cut the grass and bush – see its picture above.

सूखी झाड़ियॉ डाल दीं ताकि वह देखने में पुरानी और इस्तेमाल की हुई लगे।

इस सबको करने के तुरन्त बाद ही उन्होंने उसमें से कुछ मक्का भी काट ली और अपने अनाजघर में ले गये। अब वे रोज वहॉ आते और वहॉ से थोड़ी सी मक्का काट कर अपने घर ले जाते।

जैसे ही नर गिलहरी ने देखा कि कोई उसके खेत से उसकी फसल काट कर ले जा रहा है तो वह चिल्लाया — "मैं देखता हूँ इनको। कौन है जो यह सब कर रहा है?

मैंने इतनी मेहनत करके इस जमीन पर खेत बनाया, फिर उस पर मक्का बोयी और अब उसमें से कोई मेरी मक्का ले जा रहा है। मैं ऐसा नहीं होने दे सकता। मैं उसको ढूँढ कर ही रहूँगा।"

सो अगले दिन नर गिलहरी अपने खेत के एक तरफ जहॉ से मकड़ा उसकी मक्का चुरा रहा था जा कर झाड़ियों में छिप गया। उसके हाथ में उसका बड़ा चाकू तैयार था और वह खुद भी उसको चलाने के लिये तैयार था।

अनन्सी और उसके परिवार के सब लोग अपने समय से सुबह सुबह वहॉ आये और बिना समय बरबाद किये मक्का काट कर अपने अपने थैलों में भरने लगे।

तभी नर गिलहरी अनन्सी पर कूद पड़ा और चिल्लाया — "पकड़ लिया, पकड़ लिया। मैंने चोर पकड़ लिया। तो वह तुम हो जो मेरे भुट्टे चुरा रहे हो जो तुमने नहीं बोये?"

अनन्सी ने नर गिलहरी से अपने आपको छुड़ाते हुए कहा — "अरे यह तुम क्या कर रहे हो? मुझे जाने दो। और इसका क्या मतलब है कि मैं वह काट रहा हूँ जो मैंने नहीं बोया? यह मेरा खेत है और मैं अपना खेत काट रहा हूँ तुम बीच में कहाँ से आ गये?"

नर गिलहरी ने आश्चर्य से पूछा — "तुम्हारा खेत? अरे यह तुम्हारा खेत कैसे और कबसे हो गया? यह मेरा खेत है और तुम मेरे भुट्टे चुरा रहे हो। समझे।"

अनन्सी हँसा — "हा हा हा हा। तुम्हारा खेत? और तुम्हारे भुट्टे? क्या तुम मुझे वह रास्ता दिखा सकते हो जो इन भुट्टों और इस खेत की तरफ जाता हो या जिस रास्ते से तुम यहाँ आते जाते हो?"

नर गिलहरी ने पूछा — "रास्ते का क्या मतलब? तुम जानते हो कि मुझे रास्ते की जरूरत ही नहीं है। मैं तो अपने आने जाने के लिये पेड़ इस्तेमाल करता हूँ और उन्हीं के ऊपर से आता जाता हूँ।"

अनन्सी ने अपने परिवार से कहा — "अपनी फसल उठाओ और घर चलो। इस नर गिलहरी की चिन्ता मत करो। कोई किसी खेत को अपना कैसे कह सकता है जिस तक पहुँचने के लिये कोई सड़क ही न जाती हो।"

परेशान नर गिलहरी ने अनन्सी और उसके परिवार को वहीं छोड़ा और उन सबको गालियॉ देता हुआ अपने घर चला गया — "मैं तुमको राजा शेर की अदालत में देखूॅगा। तुमको मेरी मक्का वापस लौटानी ही पड़ेगी।"

कई दिन बाद अनन्सी को जंगल के राजा शेर की अदालत में बुलाया गया और उससे नर गिलहरी के खेत के बारे में पूछा गया।

अनन्सी बोला — "हुजूर, यह मेरा खेत है। यह नर गिलहरी इसे अपना खेत कैसे कह सकता है जब उसके पास उस खेत तक जाने के लिये कोई सड़क तक नहीं है। यह कैसे मुमकिन है कि बिना किसी सड़क के उसने यह खेत कई महीनों तक जोता हो और उसको पानी दिया हो?

आप अपने आदमियों को भेजें हुजूर और वे आपको बतायेंगे कि उस खेत तक जाने वाली केवल एक ही सड़क है जो मेरे घर से उस खेत तक जाती है। इसलिये वह खेत मेरा है।"

यह सुन कर शेर ने अपने कुछ जानवर उधर भेजे। उन्होंने वापस आ कर बताया कि अनन्सी ठीक कह रहा था सचमुच में वहॉ एक ही रास्ता था जो अनन्सी के घर से उस खेत तक आता था।

नर गिलहरी ने भी यह मान लिया कि हॉ वही एक रास्ता था जो उस खेत तक जाता था पर साथ में उसने यह भी कहा कि उसको तो रास्ते की जरूरत ही नहीं थी इसलिये वह रास्ता क्यों

बनाता। वह तो अपने आने जाने के लिये पेड़ों का इस्तेमाल करता था।

पर शेर के पास उस समय इसके अलावा और कोई चारा ही नहीं था कि वह अपना फैसला मकड़े की तरफ सुनाये। उसने नर गिलहरी से कहा — "मुझे मालूम है कि यह खेत तुम्हारा है पर मेरे पास और कोई चारा ही नहीं है कि मैं इस मुकदमे का फैसला मकड़े की तरफ सुनाऊँ।

अपनी सारी ज़िन्दगी में मैंने कोई ऐसा खेत नहीं देखा जिस तक सड़क न जाती हो, और खास करके वह वाला खेत जो खेत के मालिक घर से इतनी दूर हो।"

जैसे ही राजा शेर ने अनन्सी की तरफ अपना फैसला सुनाया अनन्सी और उसके परिवार वालों ने उस पूरे खेत को काटने का इरादा बना लिया।

अगले दिन वे सारा दिन उस खेत पर काम करते रहे। मक्का काटते रहे और उनको थैले में भर भर कर अपने अनाजघरों में ले जाते रहे। नर गिलहरी बेचारा कुछ नहीं कर सका सिवाय देखते रहने के और रोने के।

वह बेचारा चिल्लाता रहा — "क्या यही न्याय है? क्या यही न्याय है?"

जब अनन्सी और उसके परिवार ने सब भुट्टे काट लिये तो उन्होंने उनको बड़े बड़े गट्ठरों में बाँध लिया। एक दूसरे की सहायता

से उन्होंने वे गट्ठर अपने अपने सिरों पर रखे और अपने बनाये हुए उस लम्बे रास्ते से हो कर अपने घर को चल पड़े।

इतने में अनन्सी ने आसमान की तरफ देखा तो वहाँ तो काले काले बादल घिरे आ रहे थे। वह अपनी पत्नी से बोला — "ऐसा लगता है जैसे बारिश आने वाली हो।"

उसकी पत्नी बोली — "मुझे तो लगता है कि केवल बारिश ही नहीं बल्कि भारी बारिश आने वाली है। इससे पहले कि बारिश आये हम लोगों को अपना काम जल्दी ही खत्म कर लेना चाहिये।"

पर इससे पहले कि वह अपनी बात खत्म करती बारिश की एक बहुत ही बड़ी बूँद उसकी नाक पर आ कर पड़ी। वह तो उस बूँद के ज़ोर से हिल सी गयी।

अभी वे लोग कुछ और कदम चले थे कि बारिश बहुत ज़ोर से पड़ने लगी। उस तेज़ बारिश की वजह से वे लोग चल भी नहीं पा रहे थे और उनको कुछ दिखायी भी नहीं दे रहा था।

बारिश ने उनके बोझे को और भी ज़्यादा भारी बना दिया था सो उन्होंने अपने अपने भुट्टों के गट्ठर वहीं सड़क के किनारे छोड़े और पास की एक झोंपड़ी में जा कर शरण ली।

यह बारिश दोपहर से ले कर शाम सूरज डूबने तक चलती रही। खूब बिजली चमकती रही, बादल गरजते रहे, तूफान आता रहा।

जब बारिश और तूफान सब खत्म हो गया और सूरज फिर से निकल आया तो अनन्सी और उसके परिवार वाले सब अपने अपने गट्ठरों को उठाने के लिये उस झोंपड़ी में से बाहर निकल आये। इतनी भारी बारिश से उनको डर था कि कहीं उनके सारे भुट्टे ही न बह गये हों।

जब वे उस जगह आये जहॉ उन्होंने अपने गट्ठर छोड़े थे तो उन्होंने देखा कि उनके गट्ठरों की जगह कुछ काला काला सा पड़ा है। जब उन्होंने उसे पास से देखा तो उन्होंने देखा कि वह तो एक बहुत बड़ा काला कौआ था।

अनन्सी मक्का के भुट्टों के ऊपर पड़े हुए कौए से बोला — "तुम कितने अच्छे हो कौए भाई कि तुमने मेरी मक्का को पानी और बाढ़ से बचा लिया। अब मुझे उनको सुखाने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।"

कौआ बोला — "या तो तुम मजाक कर रहे हो या फिर तुम सपना देख रहे हो। यह तो मेरी मक्का है। मैंने अपनी मक्का बचायी है इसमें तुम्हें धन्यवाद देखने की कोई जरूरत नहीं है। तुम यहॉ से चले जाओ ताकि मैं अपनी मक्का अपने घर ले जा सकूँ।"

अनन्सी चिल्लाया — "क्या? यह तुम्हारी मक्का? यह तो मेरी मक्का है। मैंने उसको बारिश से बचने के लिये यहॉ छोड़ दिया था।"

कौआ बोला — "कोई कैसे अपनी मक्का के गट्ठर सड़क पर इस तरह छोड़ सकता है और उन पर निगाह भी नहीं रख सकता। मैंने इनको यहाँ पाया है और बारिश से बचाया है इसलिये अब यह मेरी मक्का है। चले जाओ यहाँ से।"

जब अनन्सी को महसूस हुआ कि वह तो एक हारती हुई लड़ाई लड़ रहा था तो वह पीछे की तरफ हट कर खड़ा हो गया और कौए को मक्का के गट्ठर अपने पंखों में उठाते हुए देखता रहा।

कौए ने उन गट्ठरों को अपने पंखों में ठीक से रखा और उड़ चला। अनन्सी और उसका परिवार वहाँ बिना किसी चीज़ के खड़े रह गये। उनकी मक्का तो कौआ ले कर उड़ गया था।

इस तरह नर गिलहरी ने मक्का बोयी, अनन्सी मकड़े ने मक्का काटी और कौआ उसको ले कर चला गया। भगवान के खेल भी निराले हैं।

बेचारा नर गिलहरी

11 आदमी और लोमड़ा दुश्मन क्यों?[55]

बहुत पुराने समय में आदमी और जानवर सब साथ साथ रहते थे। वे सब आपस में बहुत खुश थे और एक दूसरे का बहुत खयाल रखते थे।

जब किसी को किसी चीज़ की जरूरत पड़ती तो वह दूसरे से उधार मॉग लेता। जानवरों को आदमियों से डर नहीं लगता था और आदमी भी जानवरों से प्यार से बर्ताव करते थे।

इसी समय में एक लोमड़ा और अनन्सी मकड़ा बहुत अच्छे दोस्त थे। वे अक्सर आदमियों के पास खाना खाने के लिये जाया करते थे।

खाना खाने के बाद मकड़ा आदमियों के बच्चों को हॅसी की कहानियॉ सुनाया करता था और कहानियॉ सुनाने के बाद लोमड़ा और मकड़ा दोनों अपने अपने घर चले जाया करते थे।

उन दिनों आदमी लोग खेती बहुत किया करते थे। उनके पास मुर्गे मुर्गियॉ, सूअर, बकरे, बकरियॉ और गायें भी रहा करती थीं। कभी कभी वे लोग उन जानवरों में से कुछ जानवरों का मॉस भी खा

[55] Why Man and Fox Are Enemies? (Tale No 11) – a folktale from Ghana, Africa.

लिया करते थे, खास करके मुर्गे का, सो वह उसका सूप मकड़े को और उसके दोस्त लोमड़े को भी दे दिया करते थे।

जैसा कि हमारे बड़े कहते हैं कि "सारे कुत्ते मरा हुआ और सड़ा हुआ मॉस खाते हैं पर जो उसको अपने मुँह पर लगा छोड़ देता है वही लालची कहलाता है।" सो दोनों ही इस तरह का मॉस खाना पसन्द करते थे, खास करके मुर्गे का मॉस।

मकड़े को भी मुर्गे का मॉस उतना ही पसन्द था जितना कि उसके दोस्त लोमड़े को पर मकड़ा कभी इस बात को कहता नहीं था जितना कि लोमड़ा।

मकड़ा यह इसलिये नहीं कहता था कि कहीं ऐसा न हो कि उसकी कही बात उसी पर आ कर पड़ जाये पर वह अकेले में अक्सर सोचता कि काश कुछ मुर्गे केवल उसके अपने पास ही होते।

दूसरी तरफ लोमड़ा जब भी मुर्गा देखता तो उसके मुँह में पानी आ जाता और अपने मुँह में पानी लिये लिये वह वहीं का वहीं खड़ा रह जाता और उसको घूरता रहता।

उसके मुँह से पानी निकलता भी रहता तो फिर वह ज़ोर से बोल पड़ता — "काश ये मुर्गे मेरे अपने पास होते।"

एक दिन मकड़ा आदमी से मिलने गया पर जब वह वहॉ पहुँचा तो घर में कोई भी नहीं था सो वह वहॉ से वापस लौटने लगा। पर जैसे ही वह अपने घर जाने के लिये लौटने लगा कि उसने मकान के

पीछे मुर्गों की क्लक क्लक की आवाज सुनी। तुरन्त ही उसके मुँह में पानी आ गया।

उसने सोचा — "अगर घर में कोई नहीं है तो मैं..." उसने फिर एक बार दरवाजे की तरफ देखा और उसका दिमाग जल्दी जल्दी इधर उधर घूमने लगा।

उसने दरवाजा एक बार और खटखटाया ताकि उसको यकीन हो जाये कि घर में वाकई कोई नहीं है। यह पक्का करने के बाद कि घर में वाकई कोई नहीं था वह वापस जाने के लिये मुड़ा पर उसकी मुर्गा खाने की इच्छा बहुत तेज़ थी।

सो वह मकान के पीछे की तरफ चल दिया जहाँ वे मुर्गे थे। कभी वह पीछे की तरफ जाता और कभी रुक जाता पर जितना वह अपने आपको वह वहाँ जाने से रोकता उतनी ही उसकी मुर्गा खाने की इच्छा और ज़्यादा तेज़ होती जाती।

आखिर उसकी मुर्गा खाने की इच्छा जीत गयी और वह मकान के पीछे की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने देखा कि वहाँ तो मुर्गे सैंकड़ों में थे और कई साइज़ में थे।

एक लाल मुर्गे की तरफ देखते हुए उसने सोचा कि उस लाल वाले मुर्गे का सूप बहुत अच्छा बनेगा सो मकड़े ने जितने भी मुर्गे वह पकड़ सकता था उतने मुर्गे पकड़ लिये और आदमी के घर की चहारदीवारी से बाहर निकल आया।

उसने फिर इधर उधर देखा कि उसको कहीं कोई देख तो नहीं रहा था। यह पक्का करने पर कि कोई उसको नहीं देख रहा था वह झाड़ियों वाले रास्ते से अपने घर आ गया।

जब वह घर आ गया तो उसने कई बर्तन भर कर मुर्गों का सूप बनाया और उस शाम बहुत बढ़िया खाना खाया। खाना खा कर उसने पाम की शराब[56] पी और शराब पी कर वह सो गया।

जब मकड़ा जागा तो वह चिल्लाया — "ओह मेरे भगवान, लगता है कि मैं तो सो गया था। मुझे तो अभी यह भी सोचना है कि मैं इतने सारे पंखों का क्या करूँ क्योंकि ये ही तो हैं वे जो मुझे मुर्गों की चोरी के जुर्म में पकड़वायेंगे।"

तुरन्त ही मकड़ा अपनी आराम कुरसी से उठा और उसने सारे पंख समेट कर एक बड़े से थैले में डाले और उनको फेंकने के लिये बाहर चल दिया।

वह उसी रास्ते से गया जिस रास्ते पर लोमड़े का घर पड़ता था। मकड़े को पता था कि लोमड़ा जब उसे वह थैला ले जाते देखेगा तो अपनी उत्सुकता की वजह से उसके बारे में जरूर पूछेगा कि उस थैले में क्या है और यही वह चाहता भी था।

सो जैसे ही मकड़ा लोमड़े के घर के पास पहुँचा उसने लोमड़े के घर पर निगाह डाली और जब उसने उसको वहाँ नहीं देखा तो उसने

[56] Palm wine, also known as "palm toddy" or "toddy" is a fermented drink made from the sap collected from virtually any species of palm tree. Palm wine is well liked throughout West Africa.

ज़ोर ज़ोर से गाना शुरू किया ताकि अगर लोमड़ा कहीं पास में हो तो उसको पता चल जाये कि वह वहॉ था।

मकड़े का गाना सुन कर लोमड़ा अपने घर के पिछवाड़े से बाहर निकल कर आया और बोला — "हलो मेरे दोस्त, यह गाना तो तुम चिड़ियों के लिये छोड़ दो। पर ज़रा यह तो बताओ कि इतना भारी बोझ जो तुम्हारी गर्दन खींच रही है उसको ले जाते हुए भी तुम इतने खुश क्यों हो?"

मकड़ा बोला — "ओह, यह बोझ तो कुछ भी नहीं है।"

लोमड़ा बोला — "छोड़ो भी। तुमने कबसे आपस में चीज़ों को छिपाना शुरू कर दिया? हम लोग तो दोस्त हैं।"

मकड़ा बोला — "हॉ वह तो हैं पर यह दूसरी बात है। सचमुच में यह कुछ खास नहीं है।"

मकड़ा जितना ज़्यादा उस थैले को लोमड़े से छिपाता जा रहा था उतनी ही लोमड़े की उस थैले को देखने की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी कि उस थैले में क्या था।

लोमड़े की उत्सुकता और भी ज़्यादा बढ़ गयी जब उसने मकड़े से कहा कि वह उस बोझ को ले जाने में उसकी सहायता कर देगा और मकड़े ने उसकी सहायता लेने से साफ मना कर दिया।

आखीर में जब मकड़े ने देखा कि लोमड़े की उत्सुकता वहॉ तक बढ़ गयी थी जहॉ तक वह चाहता था तो वह बोला — "ठीक है

ठीक है। मुझे मालूम होना चाहिये था कि मैं तुमको बताये बिना नहीं रह सकता पर तुमने भी मेरे मुँह से बस कहलवा ही लिया।

इस थैले में असल में मक्का का आटा है और मैं इसको केक बनाने के लिये ले जा रहा हूँ। इसके अलावा इसमें कुछ मॉस भी है मूँगफली का सूप बनाने के लिये। इतने अच्छा खाना खाने के बाद मैं पाम की ताजा शराब पियूँगा जिसको पानी मिला कर पीते हैं और बस फिर मैं सो जाऊँगा।"

यह सुन कर लोमड़े के मुँह में भी पानी आ गया। जो कुछ मकड़े ने उससे अभी अभी कहा था उसको वह बार बार सोच कर ही मुस्कुरा रहा था।

वह बोला — "इसका मतलब है कि अगर मैं तुमको न मिला होता तब तो तुम मुझे यह सब बताते ही नहीं।"

मकड़ा ऑखें नचाता हुआ बोला — "मेरे बताने की तो छोड़ो। अब यह बताओ कि खाने के साथ साथ तुम मेरे साथ काम कराने भी आ रहे हो या केवल बातें ही करते रहोगे?"

लोमड़ा खुशी से बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

मकड़ा बोला — "तो लो यह बोझा मुझसे तुम ले लो और मेरे घर तक ले चलो। मैं इनमें से कुछ केक तुमको भी दे दूँगा।"

लोमड़े ने वह बोझ मकड़े से इतने उत्साह से लिया कि वह भारी बोझ भी उसको हल्का ही लग रहा था। उस बोझे को ले कर वह

मकड़े के घर की तरफ चल दिया और मकड़े के अपने पीछे आने का इन्तजार करने लगा।

मकड़ा बोला — "तुम चलो, मैं ज़रा थोड़ी सॉस ले लूँ। मैं इस बोझ को बहुत देर से ढो रहा हूँ।" यह सुन कर लोमड़ा उसके घर की तरफ चल दिया और मकड़े ने चैन की सॉस ली।

पीछे से वह फिर बोला — "तुम चलो मैं भी बस अभी आता हूँ।" लोमड़ा बहुत खुश था और उसने मकड़े को आराम से आने को कहा और आगे चल दिया।

लोमड़े के जाने के बाद जल्दी ही उधर वह आदमी भी आ गया जिसके घर ये मकड़ा और लोमड़ा जाया करते थे।

उसने देखा कि मकड़ा हॉफता सा वहॉ खड़ा है तो उसने हॉफते हुए मकड़े से पूछा — "अरे तुमको क्या हुआ? ऐसा लगता है कि तुम सारा दिन खेत पर काम करते रहे हो।"

मकड़ा बोला — "नहीं नहीं, कुछ नहीं, मुझे कुछ नहीं हुआ। मैं तो बस अपने ही ख्यालों में खोया हुआ हूँ।"

आदमी ने पूछा — "क्या सोच रहे हो?"

मकड़ा बोला — "अभी अभी लोमड़ा यहॉ से जा रहा था और एक बहुत भारी थैला ले कर जा रहा था। ऐसा लगता था जैसे उसमें पंख भरे हों।"

आदमी आश्चर्य से बोला — "पंख?"

मकड़ा बोला — "हॉ पंख। यह सवाल मैंने भी अपने आपसे किया था कि उस थैले में पंख क्यों होने चाहिये पर मेरी कुछ समझ में नहीं आया।"

आदमी ने मकड़े से कहा कि वह ठीक से आराम करे और लोमड़े के पीछे दौड़ गया। यह विचार ही कि लोमड़े के पास पंखों का एक भारी थैला था उसके दिल को धड़का देने के लिये काफी था जबकि उसका दिमाग उससे कुछ ज़्यादा ही बुरा सोच रहा था।

उस थैले में इतने सारे पंख होने का केवल एक ही मतलब था और वह था कि जब वह अपने घर में नहीं था तो किसी ने उसके घर में घुस कर उसके मुर्गों को चुरा लिया था।

जल्दी ही उसने लोमड़े को पकड़ लिया और उससे पूछा कि वह अपने थैले में क्या ले जा रहा था।

लोमड़े ने भोलेपन से जवाब दिया — "इसमें मक्का है और मॉस है।"

आदमी ने पूछा — "मक्का और मॉस?"

लोमड़ा बोला — "हॉ हॉ मक्का और मॉस। मक्का केक बनाने के लिये और मॉस मूँगफली का सूप बनाने के लिये। मुझे यह थैला मेरे दोस्त ने दिया है कि मैं इस थैले को उसके घर तक ले जाऊँ।"

आदमी बोला — "तब तो तुमको इसे मुझे खोल कर दिखाने में कोई ऐतराज नहीं होना चाहिये।"

लोमड़ा बोला — "नहीं, बिल्कुल नहीं। भला मुझे ऐतराज क्यों होगा। क्योंकि यह थैला तो मेरा है ही नहीं।"

जब तक लोमड़े ने अपना वह थैला नीचे रखा वहॉ आस पास के कुछ और लोग भी जमा हो गये। आदमी ने अपना चाकू निकाला और उससे वह थैला काट कर खोल दिया। थैले के खुलते ही थैले के सारे पंख हवा में बिखर कर फैल गये।

लोमड़े को यह देख कर बड़ी शर्म आयी कि उस थैले में मॉस और मक्का की बजाय पंख भरे थे। और उन पंखों को देख कर तो उसका मुॅह खुला का खुला रह गया।

उसने सफाई भी देने की कोशिश की पर तभी आदमी ने गुस्से में आ कर अपने चाकू निकाला और उससे वह उस लोमड़े को मारने दौड़ा।

"झूठे, बदमाश।" चिल्ला कर उसने उसको कोसा — "तूने मेरे विश्वास और दोस्ती को धोखा दिया है इसका बदला तुझे अपनी जान दे कर देना पड़ेगा। मैं जानता था कि तू ऐसा करेगा क्योंकि मैंने तुझे कई बार अपने मुर्गों की तरफ लालची निगाहों से देखते देखा था।"

लोमड़ा वहॉ से जितनी तेज़ भाग सकता था भाग लिया। और आज तक भी आदमी लोमड़े को मारने के लिये उसके पीछे भाग रहा है।

दूसरी तरफ लोमड़ा आदमी के मुर्गों की तरफ भागता रहता है। वह कहता है — "अगर मुझे उस काम के लिये मरना है जो मैंने किया ही नहीं तो मैं उस काम को कर के ही क्यों न मरूँ।

12 मौत का जन्म[57]

यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के गिनी देश में कही सुनी जाती है। यह कथा संसार की रचना के बारे में है।

शुरू शुरू में जब तक कुछ भी पैदा नहीं हुआ था तो दुनियॉ में केवल अँधेरा ही अँधेरा था। लेकिन उस समय "सा"[58] यानी मौत अपनी पत्नी और अपनी बेटी के साथ मौजूद था।

सा एक बहुत बड़ा जादूगर भी था और जब भी वह चाहता तो अजीब अजीब चीज़ें बना देता था। एक दिन सा ने कीचड़ का समुद्र बनाने का निश्चय किया और उसे बना भी दिया।

उसी समय अलटन्गाना[59] भगवान उससे मिलने के लिये आये तो उन्होंने सा से कहा — "यह तुमने कितनी गन्दी जगह बना रखी है। इतनी गन्दी जगह में तुम रहते कैसे हो? यहॉ कोई रोशनी नहीं है, तुम्हारे पास कोई पौधा नहीं है, तुम्हें मालूम है कि तुम इस कीचड़ में डूब भी सकते हो?"

पर सा ने अलटन्गाना से कहा कि वह जो कुछ कर सकता था उसने किया। वह इससे अच्छा कुछ बना ही नहीं सकता था। सो अलटन्गाना ने उसको उससे अच्छी दुनियॉ बनाने में सहायता की।

---

[57] The Origin of Death (Tale No 12) – a Kono folktale from Guinea (pronounced as Ginee), West Africa
[58] Sa – Death
[59] Alatangana – God

भगवान ने उस कीचड़ को और मजबूत बनाया ताकि उसके ऊपर पैर रखा जा सके। पर अकेले कीचड़ में तो कोई ज़िन्दगी नहीं थी सो उसने तारे बनाये, पौधे बनाये और सब तरह के जानवर बनाये।

तब सा ने कहा — "यह तो बड़ा सुन्दर है। अब दुनियॉ पहले से ज़्यादा हरी है और ज़िन्दगी से भरी हुई दिखायी देती है। मुझे इस में यह तरक्की अच्छी लगी। हमें और तुम्हें दोस्त हो जाना चाहिये।"

सो सा और अलटन्गाना की दोस्ती हो गयी। सा ने उसकी खूब खातिरदारी की, खिलाया पिलाया और फिर दोनों ने बहुत सारी बातें की। अब दोनों अक्सर मिलने लगे थे और उनकी दोस्ती भी बढ़ने लगी थी।

अलटन्गाना कुॅआरा था। समय गुजरता गया। अलटन्गाना ने एक दिन सा से शादी करने के लिये उसकी बेटी का हाथ मॉगा। पर सा अपनी बेटी की शादी नहीं करना चाहता था क्योंकि वह अपनी अकेली बेटी से अलग नहीं होना चाहता था।

सा ने बहुत तरीके के बहाने किये कि अलटन्गाना को उसकी बेटी से शादी क्यों नहीं करनी चाहिये पर अलटन्गाना और सा की बेटी एक दूसरे को प्यार करते थे सो अलटन्गाना नहीं माना।

आखीर में जब सा इस शादी पर राजी नहीं हुआ तो अलटन्गाना ने उसकी बेटी से चोरी छिपे शादी कर ली।

अलटन्गाना और सा की बेटी आपस में बहुत खुश थे। उनके **14** बच्चे हुए – **7** लड़के और **7** लड़कियॉ। उनमें से **4** लड़के और **4** लड़कियॉ एक जाति के थे पर दूसरे **3** लड़के और **3** लड़कियॉ उनसे अलग थे।

माता पिता यह देख कर बहुत ही हैरान थे कि दोनों कितने अलग थे। इसके अलावा वे आपस में भी अलग अलग भाषा बोलते थे। उनके माता पिता उनकी भाषा नहीं समझते थे। अलटन्गाना इस बात से बहुत नाराज था और वह सा से पूछने गया कि ऐसा क्यों था।

उसने सा से पूछा — "ऐसा क्यों है कि मेरे तुम्हारी बेटी के साथ जो बच्चे पैदा हुए हैं वे सब अलग अलग हैं। वे अलग अलग भाषा बोलते हैं जो हम नहीं समझ सकते। क्या तुमने उनको ऐसा बनाया है?"

सा बोला — "हॉ। मैंने ही उनको ऐसा बनाया है कि वे देखने में भी अलग अलग हैं और भाषा भी अलग अलग बोलते हैं। यह मेरी एकलौती बेटी को बिना मेरी इच्छा के और बिना दहेज दे कर ले लेने की तुम्हारी सजा है। तुम कभी नहीं समझोगे कि वे क्या बोलते हैं।"

अलटन्गाना बोला — "तुमको अपना यह शाप मेरे बच्चों के ऊपर से हटाना पड़ेगा।"

सा ने जवाब दिया — "मुझे अफसोस है अलटन्गाना, अब बहुत देर हो चुकी है। पर क्योंकि वे मेरे भी बच्चे हैं इसलिये मैं उनको ऐसी भेंटें दूँगा ताकि वे अपनी ज़िन्दगी खुशी से गुजार सकें।

कुछ को मैंने कागज, स्याही और अक्लमन्दी दी है। इस तरह से वे जो कुछ भी सोचते हैं अपने भाइयों, बहिनों और बच्चों के लिये लिख पायेंगे। अब तुम जाओ और उनके एक जैसे लड़के और लड़की के जोड़े बनाओ और उनको दुनियॉ बसाने के लिये भेज दो।"

अलटन्गाना यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि सा ने कम से कम इतनी धीरज से उससे बात तो की हालॉकि उसने तो उसकी बेटी को उड़ा ही लिया था। इसलिये सा ने उससे जो कुछ कहा वह उसने मान लिया।

वह तुरन्त ही अपने घर गया, सा के बताये अनुसार बच्चों के जोड़े बनाये और उनको दुनियॉ के सारे हिस्सों में भेज दिया। वहॉ जा कर उन्होंने अलग अलग जातियों के बहुत सारे बच्चे पैदा किये।

इतना सब कुछ होने के बाद भी दुनियॉ में अभी भी अँधेरा था। सो अलटन्गाना ने एक मुर्गा सा के पास भेजा और उस मुर्गे से कहा — "जब तुम सा के पास पहुँचो तो उससे पूछना कि हमको और ज़्यादा रोशनी के लिये क्या करना चहिये क्योंकि इन तारों की

रोशनी दुनियॉ के लिये काफी नहीं है और यह दुनियॉ अभी भी अॅधेरे में है।"

जब सा ने अलटन्गाना का दूत देखा तो उसको अपनी बेटी की याद फिर से आ गयी। वह अलटन्गाना से तो अभी तक गुस्सा था पर अपनी बेटी के प्यार की वजह से उसका गुस्सा कुछ कम था।

सा उस मुर्गे से बोला — "तुम बहुत लम्बी यात्रा करके आये हो थोड़ा आराम कर लो तब तक मैं सोचता हूॅ कि अलटन्गाना के अॅधेरे के बारे में क्या करना चाहिये।"

मुर्गे ने जब आराम कर लिया तो सा ने उसको अलटन्गाना के पास यह कहते हुए वापस भेज दिया — "जब तुम वहॉ पहुॅचो तो तुम पूर्व की तरफ अपना मुॅह करना और यह गाना गाना "कोको रो ओको ओ"[60]। यह सुन कर तारों का राजा जाग जायेगा और दिन हो जायेगा और लोग अपना काम पूरी रोशनी में कर पायेंगे।"

मुर्गा यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि उसके पास तारों के राजा को जगाने की ताकत थी। उसने सा को धन्यवाद दिया और इस खबर के साथ अलटन्गाना के पास जल्दी जल्दी वापस गया।

जब उसने अपनी लम्बी यात्रा से आराम कर लिया तो उसने पूर्व की तरफ अपना मुॅह किया और सा का बताया गीत गाया – "कोको रो ओको ओ"।

[60] Koko Ro Oko O – if spoken it sounds like Indian "Kukadoo Koo"

उसी समय आसमान में हल्की सी रोशनी दिखायी दी। कुछ पल के बाद मुर्गे ने वह गीत फिर से गाया तो उसको लगा कि किसी का हाथ फैला हुआ है और बस तारों का राजा सूरज जाग गया।

इस तरह पहला दिन शुरू हुआ। सूरज मुर्गे की पुकार का जवाब दे रहा था। मुर्गा सारा दिन उसको पुकारता रहा और वह सारा दिन उसकी पुकार का जवाब देता हुआ सारा आसमान पार कर गया।

जब मुर्गा सूरज को पुकारते पुकारते थक गया और उसने उसको पुकारना बन्द कर दिया तो सूरज भी धरती के दूसरी तरफ सोने चला गया और फिर से अँधेरा छा गया।

उसी समय लोगों की उनके देखने में सहायता करने के लिये चाँद और तारे निकल आये क्योंकि सूरज सोने चला गया था।

एक दिन सा अलटन्गाना से मिलने गया और बोला — "इसके बावजूद कि तुमने मेरी बेटी को मुझसे दूर कर दिया है मैंने तुमको रोशनी दी पर तुमने मुझे मेरी मेहरबानियों के बदले में कुछ नहीं दिया। तुमने तो मेरी बेटी के बदले में दहेज भी नहीं दिया। मेरे इन कामों के बदले में तुमको मेरी एक सेवा करनी पड़ेगी।"

अलटन्गाना सा से बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। तुम जो कुछ भी तुम चाहो मैं वह तुम्हारे लिये करूँगा।"

सा बोला — "ठीक है। क्योंकि तुमने मेरी बेटी बिना दहेज दिये ही ले ली है और अब मेरे पास कोई बच्चा नहीं है सो उसके

बदले में तुमको मुझे मेरा एक पोता या पोती देनी होगी जिसको मैं जब चाहूँ बुला सकूँ।

जब भी मैं किसी को बुलाना चाहूँगा तो मैं उसको अपने कैलेबाश[61] की एक आवाज पर बुला लूँगा। जो भी मेरे कैलेबाश के बजने की आवाज अपने सपने में सुनेगा उसको तुरन्त मेरे पास मेरी उस पुकार का जवाब देने के लिये आना पड़ेगा।"

अपना वायदा पूरा करने के लिये अलटन्गाना के पास और कोई चारा नहीं था कि वह अपने बच्चों को सा की पुकार पर उसके पास भेजे, जब भी वह पुकारे।

सो आज भी अलटन्गाना के बच्चे सा की पुकार का जवाब देते हैं। वे जब भी सपने में कैलेबाश के बजने की आवाज सुनते हैं उनको सा के पास जाना पड़ता है चाहे वे चाहें या न चाहें।
यह सब इसलिये हो रहा है क्योंकि अलटन्गाना ने जब सा की बेटी से शादी की थी तो उसको दहेज नहीं दिया था।

[61] Dry outer cover of a pumpkin-like fruit which can be used to keep both dry and wet things – mostly found in Africa. See its picture above.

13 सबसे ठीक नाम[62]

यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के गिनी बिसाऔ नाम के देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक गॉव में तीन आदमी रहते थे जो यह समझते थे कि वे ही सबसे अच्छे हैं। उनको अपने सबसे अच्छा होने के बारे में इतना ज़्यादा यकीन था कि उन्होंने तीनों ने अपने गुणों के मुताबिक ही अपना नाम रखा हुआ था।

उनमें से एक का नाम था कंजूस। वह समझता था कि दुनियॉ में उससे बड़ा कंजूस कोई और है ही नहीं।

दूसरे का नाम था लालची। वह भी यही समझता था कि वह सबसे ज़्यादा भूखे को भी बीमार बना सकता था।

और तीसरे आदमी का नाम था नाक अड़ाने वाला। वह समझता था कि वह अपनी नाक अपने सिर के पीछे भी लगा सकता था यह देखने के लिये कि उसके पीठ पीछे भी वह किसी के ऊपर हॅस सकती थी या नहीं।

अपने इन अजीब से गुणों की वजह से वे तीनों दोस्त बन गये और हमेशा इस बहस में लगे रहते कि कौन किसको हरा सकता है।

---

[62] The Most Suitable Name (Tale No 13) – a Fulani folktale from Guinea-Bissau (pronounced as Ginee-Bissaaoo), West Africa.

एक दिन ऐसी ही एक बहस के बीच कंजूस लालची से बोला — "मुझे वाकई नहीं मालूम कि हम इस बात पर हमेशा बहस क्यों करते रहते हैं। तुम ऐसा कैसे सोचते हो कि तुम मुझसे ज़्यादा लालची हो जितना कि मैं कंजूस हूँ।"

लालची बोला — "क्योंकि मैं हूँ इसलिये।"

कंजूस बोला — "तो साबित कर के दिखाओ।"

लालची बोला — "ठीक है। यह गॉव तो बहुत छोटा है। इसके अलावा क्योंकि इस गॉव के लोग तुमको जानते हैं तो तुम मेरे वोट कम कर दोगे इसलिये हमें और तुम्हें यहॉ से कहीं और जाना चाहिये और वहॉ जा कर यह देखना चाहिये कि कौन अपने नाम के अनुसार रह पाता है।

तुमको इससे ज़्यादा अच्छी शर्त और कहीं नहीं मिलेगी। दूसरे लोग सब बिना किसी की तरफदारी के अपना फैसला देंगे और हम लोग एक बार में ही यह जान लेंगे कि कौन अपनी तारीफ अपने आप कर रहा है और किसकी तारीफ दूसरे लोग कर रहे हैं।"

सो जब वे यह बहस कर रहे थे और उन्होंने अपनी शर्त रखी तो नाक अड़ाने वाला छिप कर उनकी ये बातें सुन रहा था।

जब वे अपनी अपनी यात्रा पर जाने के लिये तैयार हुए तो वह नाक अड़ाने वाला अपने घर भाग गया और उनके बिना बुलाये खुद ही उनके मामले में अपनी नाक अड़ाने के लिये तैयार हो गया।

घर जा कर उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह उसकी लम्बी यात्रा के लिये काफी खाना बॉध दे।

उसकी पत्नी ने पूछा — "लेकिन तुम जा कहॉ रहे हो?"

उसने अपनी पत्नी को बताया कि कंजूस और लालची ने एक शर्त लगायी है और मैं उनकी पहरेदारी करने जा रहा हूँ। उनके ऊपर एक ऐसा आदमी भी तो चाहिये न जो उनके ऊपर बिना किसी तरफदारी के जॉच रख सके।

उसकी पत्नी ने उसको छेड़ा — "अपनी नाक अड़ाना तो तुम्हारा काम है। अगर उस शर्त मे तुम भी शामिल होते तो मुझे पूरा यकीन है कि तुम जीत जाते। कोई भी तुम्हारी तरह दूसरों के कामों में अपनी नाक नहीं अड़ा सकता।"

सो अगली सुबह बहुत जल्दी ही वह कंजूस और लालची की तय की हुई उस जगह पर पहुँच गया जहॉ से वे अपनी यात्रा शुरू करने वाले थे।

कंजूस ने उसको देखा तो उससे पूछा — "तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

नाक अड़ाने वाला बोला — "मुझे लगा कि तुमको शर्त जीतने के लिये कोई तो चाहिये जो तुम्हारा फैसला कर सके।"

अब तुमको तो मालूम है कि लालची को भीख मॉगना बहुत अच्छा लगता है सो उसने कोई खाना अपने साथ अपनी यात्रा के लिये नहीं बॉधा था।

उसने सोचा कि कंजूस के पास तो हम दोनों के लिये काफी खाना होगा ही और अगर वह उसे अपना खाना न भी देना चाहे तो भी मुझे यकीन है कि मैं उससे उसका इतना खाना तो ले ही लूँगा जो मैं अपना पेट भर सकूँ क्योंकि मैं उस कंजूस से ज़्यादा लालची हूँ।

सो तीनों आदमी एक तंग रास्ते से मोड़ खाती हुई सड़क से अपनी साहसी यात्रा पर चले। जल्दी ही सूरज निकल आया और फिर दोपहर भी हो गयी।

सबको भूख और प्यास लग आयी। कंजूस को बहुत ज़ोर से भूख लगी थी पर वह लालची के सामने अपना खाना खाने से हिचकिचा रहा था।

कंजूस बोला — "ओह, मुझे तो ज़रा अभी जाना पड़ेगा। तुम मेरा यहीं इन्तजार करो। मैं बस अभी एक मिनट में आया। मुझे ज़रा लघुशंका के लिये जाना है।"

लालची को कंजूस के ऊपर बिल्कुल भी विश्वास नहीं था। उसको कुछ शक हुआ कि जरूर कुछ गड़बड़ है सो वह कंजूस से बोला — "तुमने मेरे मुँह के शब्द छीन लिये। मुझे भी जाना है। मुझको तो बहुत ज़ोर से आ रहा है। चलो दोनों एक साथ ही चलते हैं।"

सो वे दोनों वहाँ से जंगल में गायब हो गये। नाक अड़ाने वाला भी यह सोच कर उनके पीछे पीछे चला गया कि देखूँ तो वे दोनों क्या वाकई लघुशंका के लिये गये हैं या कुछ और बात है।

जब तीनों ने लघुशंका कर ली तो वे आराम करने बैठ गये। क्योंकि लालची कंजूस को बराबर देख रहा था इसलिये कंजूस अपना खाना नहीं खा पा रहा था।

सो धीरे से उसने अपनी एक बाजरे की रोटी निकाली और उसको अपने पीछे रख ली। फिर वह लालची की तरफ मुँह कर के उससे बातें करने लगा जैसे कि कुछ हुआ ही न हो।

कंजूस ने लालची से पूछा — "यहाँ से अगला गाँव कितनी दूर है?"

जैसे ही लालची ने दूसरे गाँव के लिये एक दिशा में इशारा किया वैसे ही कंजूस ने अपनी रोटी में से एक टुकड़ा ले कर खाने की कोशिश की।

पर जैसे ही उसने ऐसा किया उसके इस काम से एक हिरन चौंक गया। असल में उस हिरन को भी उसकी रोटी की खुशबू आ गयी थी। वह हिरन भी उसकी रोटी खाने की कोशिश कर रहा था।

जैसे ही कंजूस ने अपना मुँह घुमा कर देखा तो हिरन उसकी बची हुई रोटी ले कर भाग गया। कंजूस इस उम्मीद में हिरन के पीछे भागा कि वह उससे अपनी रोटी वापस ले लेगा।

अब तक लालची को यह पता चल गया था कि क्या हुआ था। उसको हिरन के जमीन पर छोड़े हुए रोटी के टुकड़ों को चाटने

के लिये काफी देर तक इन्तजार करना पड़ा। वह कंजूस और हिरन के पीछे भागा।

"यम यम। यह बाजरे की रोटी तो बहुत ही स्वाददार है। मुझे तो बहुत ज़ोर की भूख लगी है। इससे पहले कि मैं भूख से मरूँ मुझे तो यह बाजरे की रोटी और चाहिये।"

नाक अड़ाने वाला जो यह सब देख रहा था वह भी उन लोगों के पीछे यह कहते हुए भागा — "यह देखने में तो बड़ा मजा आयेगा कि कंजूस किस तरह से हिरन से अपनी रोटी वापस लेता है।

मैं जानता हूँ कि वह कंजूस है फिर भी उसके लिये हिरन को पकड़ना मुश्किल काम है। क्योंकि वह इतनी तेज़ तो भाग नहीं सकता।"

चकम, चकम, चकम। हिरन का पीछा करते करते वे सब झाड़ियों में गये, मैदानों में गये। ऐसा काफी देर तक चलता रहा कि कंजूस को लगा कि बस उसने हिरन को अब पकड़ा और अब पकड़ा।

तभी हिरन लड़खड़ाया और उसके मुँह से रोटी का एक छोटा सा टुकड़ा गिर गया जो वह खा नहीं पाया था।

कंजूस ने वह टुकड़ा उठा लिया और इतने में ही नाक अड़ाने वाले ने कंजूस को पकड़ लिया ताकि वह यह देख सके कि अभी कितनी रोटी और रह गयी थी।

उधर लालची ने हिरन को पकड़ लिया और उसके गले में हाथ डाल कर जो कुछ भी उसके मुँह के अन्दर था निकाल लिया।

अब यह बताओ कि इनमें से कौन सा आदमी अपने नाम के अनुसार था – कंजूस, या लालची, या नाक अड़ाने वाला?

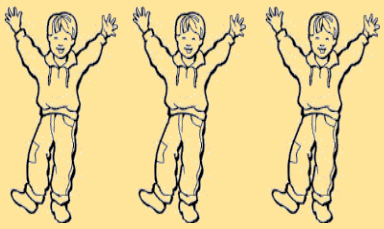

14 लड़ाई का जन्म[63]

यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के लाइबेरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत पुरानी बात है जब धरती पर कोई लड़ाई नहीं थी। लोग एक दूसरे के साथ मिल जुल कर रहा करते थे। जब दो लोगों की राय आपस में एक दूसरे से नहीं मिलती थी तब वे आपस में मिल जुल कर ही उसको निपटा लिया करते थे।

कोई किसी को कड़े शब्द नहीं बोलता था जिससे आपस में लड़ाई शुरू हो जाये। जब कभी किसी के पड़ोसी का खून बहता तो वह हमेशा किसी न किसी दुर्घटना से बहता था लड़ाई से नहीं। उस समय लोग भगवान की प्रार्थना करते कि वह उनको माफ कर दे।

ऐसे समय में दुनियॉ में आदमी ज़्यादा थे और उनके मुकाबले में औरतें बहुत कम थीं। इसलिये शादी लायक लड़कियों की सबकी शादी बहुत जल्दी ही हो गयी होती थी।

एक जवान आदमी को तो केवल इस बात का इन्तजार करना होता था कि फिर कब कोई दूसरी छोटी लड़की शादी लायक होगी ताकि वह उससे शादी कर सके।

[63] The Origin of War (Tale No 14) – a Kono folktale from Liberia, West Africa.

ऐसे समय में एक गॉव में एक आदमी अपनी पत्नी और बेटे साम्बा[64] के साथ रहता था। उस आदमी की पत्नी जल्दी ही मर गयी थी सो साम्बा को उसने अकेले ही पाला। जल्दी ही साम्बा भी बड़ा हो गया।

हालॅकि साम्बा के पिता ताम्बा[65] की उम्र काफी हो चुकी थी फिर भी उसको लगता था कि उसको किसी औरत के साथ की जरूरत थी सो उसने एक जवान और सुन्दर लड़की से शादी कर ली।

जब वह लड़की ताम्बा के घर आयी तो साम्बा को वह लड़की बहुत अच्छी लगी। ताम्बा इस बात पर साम्बा पर बहुत गुस्सा हुआ और उसने उसको बहुत पीटा।

साम्बा बोला — "मुझे एक पत्नी की जरूरत है। मेरे लिये एक पत्नी ढूँढो।"

उसके पिता ताम्बा ने कहा — "नहीं, तुम्हारी शादी तभी होगी जब मैं यह देखूँगा कि तुम शादी के लिये तैयार हो।"

साम्बा बोला — "पर मैं तो तैयार हूँ। मेरी उम्र के मेरे सारे साथियों ने अपनी अपनी पत्नियॉ चुन ली हैं।"

ताम्बा ने कहा — "वह तो ठीक है पर वे अपने माता पिता के साथ नहीं रहते। तुम शादी तब करना जब तुम उसको रख सको।"

---

[64] Samba – a West African name for a man – Tamba's son's name

[65] Tamba – a West African name for a man – Samba's father's name

इस तरह ताम्बा ने साम्बा को उसकी शादी करने से मना कर दिया। इस बात से साम्बा बहुत नाराज और नाउम्मीद हो गया। कभी कभी वह अपने पिता के पास जाता और अपनी शादी कराने के लिये कहता पर उसका पिता हमेशा उसे मना कर देता।

उसका पिता जितना उसको शादी के लिये मना करता साम्बा के दिल में शादी की इच्छा उतनी ही बढ़ती जाती।

तब साम्बा ने एक दिन निश्चय कर लिया कि कुछ भी हो जाये वह अब शादी कर के ही रहेगा। उसने खूब मेहनत की ताकि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके। वह अपने भगवान से रोज प्रार्थना करता कि वह उसकी इस काम में सहायता करे।

एक दिन उसका पिता अपनी पत्नी को साथ ले कर एक लम्बी यात्रा पर गया और साम्बा को अकेला ही घर में छोड़ गया। बहुत मेहनत करने के बाद एक रात साम्बा ने रोज की तरह अपने भगवान से अपने लिये एक पत्नी देने की पार्थना की।

उस दिन भगवान उसके सामने प्रगट हुए और बोले — "जाओ, साम्बा थोड़ी लकड़ी काट कर लाओ और मेरे लिये आग जलाओ।"

साम्बा ने वैसा ही किया। वह जंगल से थोड़ी सी लकड़ी काट कर लाया और आग जलायी। भगवान उसके साथ कई दिन तक रहे। साम्बा ने भगवान से बार बार पत्नी देने की प्रार्थना की ताकि वह रोज किसी के पास घर आ सके, किसी को अपना कह सके।

साम्बा ने भगवान से पत्नी देने के लिये जितनी ज़्यादा प्रार्थना की भगवान को भी उसके ऊपर उतनी ज़्यादा दया आने लगी। एक दिन भगवान ने साम्बा को गहरी नींद में सुला दिया और कहा कि जब तक वह उससे न कहें तब तक वह न तो जागे और न ही कुछ बोले।

जब साम्बा सो रहा था तो भगवान ने एक आदमी के नाप का एक केले के पेड़ का तना लिया और उसको साम्बा की बगल में लिटा दिया। फिर उन्होंने साम्बा और उस तने को एक कपड़े से ढक दिया और वहाँ से चले गये।

अगले दिन सुबह सवेरे ही भगवान वापस आये और बोले — "लैंगो[66] लैंगो। जागो।" तुरन्त ही उस केले के तने से एक लड़की पैदा हुई और उठ गयी। वह लड़की इतनी सुन्दर थी कि वैसी सुन्दरता गाँव वालों में से किसी ने न कभी पहले देखी थी न सुनी थी।

साम्बा भी इस पुकार से जाग गया था तो उसने भी जब उस लड़की को देखा तो उसका मुँह तो खुला का खुला रह गया। उसने कुछ बोलने की कोशिश की पर उसके मुँह से कोई शब्द ही नहीं निकला।

भगवान बोले — "साम्बा, यह तुम्हारी पत्नी लैंगो है। तुमको हमेशा उसको सहारा देना चाहिये और उसकी रक्षा करनी चाहिये।"

---

[66] Lango – a name of a female

साम्बा बोला — "ऐसा ही होगा। हे मेरे भगवान, मेरी प्रार्थना सुनने के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।"

कुछ दिनों बाद साम्बा का पिता ताम्बा वापस आ गया तो उसने घर में लैंगो को देखा तो उसको देख कर उसके मन में भी उसके लिये प्यार जाग उठा।

उसने साम्बा को अपने घर से भगाने की सारी कोशिशें की ताकि वह लैंगो को अपने लिये रख सके पर साम्बा नहीं भागा। इस पर उसने साम्बा को अपने घर से ही निकाल दिया।

जब साम्बा ने देखा कि उसका पिता उसके साथ यह सब क्या कर रहा है तो वह बहुत गुस्सा हुआ और उस पर चिल्ला पड़ा — "अगर मैंने तुमको मेरे और मेरी पत्नी के बीच में आते देखा तो मैं तुमको मार दूँगा।"

यह सुन कर, खास कर अपने बेटे के मुँह से, तो ताम्बा तो भौंचक्का रह गया क्योंकि उसके बेटे ने न तो इससे पहिले कभी ऐसा कहा था और न ही इससे पहिले कभी उससे ऐसा बर्ताव ही किया था।

अपने बेटे की धमकी से गुस्सा हो कर ताम्बा को यह मौका मिल गया कि वह साम्बा को अपने घर से बाहर निकाल दे। उसने ऐसा ही किया और उसने साम्बा को बाहर निकाल दिया। लैंगो ताम्बा के पास ही रही।

पर साम्बा लैंगो को भूल नहीं पाया क्योंकि वह उसको बहुत प्यार करता था। पहले तो वह बहुत दिनों तक इधर उधर घूमता रहा फिर एक गॉव में आ गया और वहॉ आ कर वह ठहर गया।

उसको लैंगो की कमी बहुत महसूस हो रही थी सो वह उस गॉव के सरदार मोमोडु[67] के पास गया और उससे अपनी पत्नी को वापस लेने में उसकी सहायता मॉगी।

सरदार मोमोडु ने साम्बा की पत्नी को वापस करने के लिये ताम्बा के पास अपने दूतों को भेजा पर ताम्बा ने उसकी प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया। बल्कि उसने उन दूतों को मार दिया ताकि वे सरदार मोमोडु के पास ही न पहुॅच सकें।

इस तरह दुनियॉ में यह पहला कत्ल हुआ।

जब मोमोडु के पास उसके दूत नहीं पहुॅचे तो वह खुद और ज़्यादा दूतों को ले कर ताम्बा के पास गया। जब ताम्बा ने उसे भी लैंगो को देने से मना कर दिया मोमोडु वहॉ से उसको जबरदस्ती ले गया और ताम्बा से लड़ाई की घोषणा कर दी। लड़ाई में मोमोडु ने ताम्बा को हरा दिया और मार दिया।

मोमोडु ने जब लैंगो को देखा तो वह खुद भी उसके प्यार में पड़ गया। वह उसको अपनी पत्नी के पास ले गया और साम्बा को यह धमकी देते हुए अपने गॉव से निकाल दिया कि अगर वह वहॉ रहा तो वह उसको भी मार देगा।

---

[67] Chief Momodu

साम्बा डर के मारे उस गॉव से भाग कर दूसरे गॉव चला गया। इस दूसरे गॉव के सरदार का नाम फ़ामाम्बा[68] था। वहॉ जा कर उसने अपनी कहानी इस सरदार को भी सुनायी और उससे प्रार्थना की कि वह उसकी पत्नी को सरदार मोमोडु से वापस दिलवाने में उसकी सहायता करे।

जब सरदार फ़ामाम्बा सरदार मोमोडु के पास गया तो सरदार मोमोडु ने भी लैंगो को देने से इनकार कर दिया। इससे उन दोनों में लड़ाई छिड़ गयी। सरदार फ़ामाम्बा ने सरदार मोमोडु को हरा दिया और उसे मार दिया।

सरदार फ़ामाम्बा भी लैंगो की सुन्दरता का दीवाना हो गया था सो वह उसको अपने लिये रखना चाहता था। उसने भी कोई तरकीब निकाल कर साम्बा को अपने गॉव से बाहर निकाल दिया।

फिर उसने अपने आपसे कहा — "इस सबकी वजह तो केवल साम्बा है अगर मैंने उसको गॉव से निकालने की बजाय उसको मार दिया होता तो सारा किस्सा ही खत्म हो जाता और ये लड़ाइयॉ भी न होतीं।"

यह सोच कर फ़ामाम्बा ने साम्बा को एक दूर जंगल में भेज दिया और वहॉ ले जा कर उसको मार दिया।

लैंगो फ़ामाम्बा के पास कुछ ही समय रही क्योंकि जब और ज़्यादा ताकतवर सरदारों ने उसको देखा तो उन्होंने फ़ामाम्बा से

[68] Famamba – the name of the Chief

लड़ाई छेड़ दी और फ़ामाम्बा को हरा कर और उसको मार कर लैंगो को वहॉ से ले गये।

यह सब अब तक चल रहा है क्योंकि दुनियॉ में जहॉ जहॉ जब तक लैंगो रहेंगी तब तक वहॉ वहॉ लड़ाइयॉ चलती ही रहेंगीं।

भारत में एक कहावत है कि सारी लड़ाइयों की जड़ तीन चीज़ें होती हैं – ज़र, ज़मीन और जोरू। यानी पैसा या ज़मीन या औरत। लाइबेरिया में कही सुनी जाने वाली यह लोक कथा बताती है कि उनके समाज में भी लड़ाई की जड़ एक औरत ही थी।

15 नदी के राक्षस[69]

यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के लाइबेरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि बहुत दूर के एक गॉव में एक स्त्री अपनी दो बेटियों के साथ रहती थी। वे दोनों बहिनें परिवार के लिये बारी बारी से खाना बनाती थीं।

जब उनकी मॉ खेत पर चली जाती तब उनमें से एक बहिन खाना बनाती और उसको एक कैलेबाश[70] में रख लेती और एक मिट्टी के ढेर पर रख देती। वह खाना तब तक वहीं रखा रहता जब तक उनकी मॉ खेत पर से वापस आती थी।

उसके बाद वे लड़कियॉ खेलने चली जातीं और तब तक खेलती रहतीं जब तक उनकी मॉ खेत से वापस आती। फिर सब लोग एक साथ खाना खाते।

यह गॉव एक टापू पर था जो चारों तरफ पानी से घिरा हुआ था। वह पानी भी इतना सारा था कि उस टापू से पानी के उस पार कोई जमीन दिखायी नहीं देती थी।

---

[69] The River Demons (Tale No 15) – a Kpelle folktale from Liberia, West Africa.

[70] Dry outer cover of a pumpkin-like fruit which can be used to keep both dry and wet things – mostly found in Africa. See its picture above.

उस पानी में एक राक्षस रहता था जो केवल उन लोगों को खाता था जो गलत काम करते थे।

जब भी कभी किसी पर किसी गलत काम करने का इलजाम लगता तो वह उस नदी के बीच में ले जाया जाता और उस नदी की कसम खाता।

अगर उसने कोई गलत काम नहीं किया होता तो नदी उसको छोड़ देती नहीं तो वह नदी वाला राक्षस अपना बड़ा सा मुँह खोलता और उसको निगल जाता।

उस स्त्री के घर में कभी कभी कुछ ऐसा होता कि जब भी यह स्त्री जहॉ अपना खाना रखवाती थी वहॉ से उसकी एक बेटी वह खाना खा लेती थी। मॉ जब भी पूछती कि खाना किसने खाया तो वे दोनों ही मना कर देतीं कि हमने खाना नहीं खाया।

एक दिन वह स्त्री खेत से एक खरगोश ले कर आयी जो उसने वहॉ मारा था। उसने खरगोश को साफ किया और काटा। उसमें से उसका कुछ मॉस उसने अपनी बड़ी बेटी को उसका सूप बनाने को दे दिया और बाकी बचा हुआ मॉस उसने आग पर रख दिया।

उस रात सबने इतना अच्छा खाना खाया जितना पहले कभी नहीं खाया था। सब बहुत खुश थे और सबका पेट खूब भरा हुआ था। अगले दिन उन लड़कियों की मॉ बेटियों को घर छोड़ कर खेत पर चली गयी।

जब माँ शाम को खेत से वापस आयी तो उसने देखा कि उसका खरगोश का बचा हुआ माँस तो गायब था। वह बहुत गुस्सा हुई।

उसने सोचा — "खाना खाना तो मेरी समझ में आता है कि लड़कियों ने खा लिया होगा क्योंकि वे भूखी थीं पर माँस खाना? यह तो सीधे सीधे लालच है। और जो भी बच्चा इस तरह के स्वाद से बड़ा होता है वह अच्छा बच्चा नहीं होता। अगर उसका ऐसा ही स्वाद रहा तो वह तो घर में एक बीमारी बन जायेगा।"

यही सोच कर उसने लड़कियों से पूछताछ करने का निश्चय किया। उसने अपनी बेटियों को बुलाया और उनसे पूछा — "खरगोश का माँस किसने खाया?"

पर दोनों ने मना कर दिया कि उनको इस बात की कोई जानकारी नहीं थी कि खरगोश का माँस किसने खाया।

उसकी बड़ी बेटी बोली — "मुझे तो यह भी नहीं पता था कि वह माँस आग पर रखा था।"

छोटी बेटी बोली — "न ही मुझे इस बात का पता था। मैंने सोचा कि हम लोगों ने कल रात ही उसे खत्म कर लिया था।"

माँ उनके इन जवाबों से खुश नहीं थी। उसने उनसे कई बार सच बताने को कहा — "मैं तुम लोगों को कोई सजा नहीं दूँगी, बस तुम लोग मुझे सच सच बता दो कि खरगोश का माँस किसने खाया।

तुम लोगों को तो मालूम है कि मुझे चोरी करने वाले लोगों से कितनी नफरत हैं। तुम लोगों को कोई चीज़ लेने से पहले पूछना

चाहिये। पर अगर तुमने कोई चीज़ बिना पूछे ले भी ली है तो फिर तुमको मान लेना चाहिये कि वह चीज़ तुमने ही ली है।"

बड़ी बेटी बोली — "पर मॉ मैंने सच में मॉस नहीं लिया।"

छोटी बेटी बोली — "और मैं तो सारा दिन खेल रही थी। मुझे तो पता ही नहीं था कि हमारे घर में खरगोश का मॉस और भी रखा है।"

वह बेचारी स्त्री बोली — "और मैं सोच रही थी कि मैं अपने बच्चों को बहुत अच्छे तरीके से पाल रही हूॅ। पर अब मुझे लग रहा है कि मैं तो न केवल चोरों को पाल रही हूॅ बल्कि झूठ बोलने वालों को भी पाल रही हूॅ।"

कई दिनों तक वह सोचती रही कि वह क्या करे क्या करे। क्या मुझे उनसे सच उगलवाना चाहिये? या फिर मुझे उनका खाना बन्द कर देना चाहिये?

पर उसको लगा कि उन दोनों में से कोई भी तरीका ठीक नहीं है क्योंकि इस तरह से तो वह उन भोली भाली लड़कियों को केवल सजा ही देगी। फिर उसने सोचा कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि उन्होंने दोनों ने एक साथ मिल कर मॉस खाया हो।

बहुत सोचने के बाद उसने अपनी बेटियों को एक साथ बुलाया और उनको अपना प्लान बताया।

उसने कहा — "क्योंकि मैं तुम लोगों से सच नहीं निकलवा सकी इसलिये मैं तुम लोगों को नदी वाले राक्षस के पास ले जाऊॅगी।

पर मैं तुम लोगों को एक आखिरी मौका और देती हूँ कि अगर तुम लोगों ने वह मॉस चुराया हो तो मुझे अभी बता दो।

तुम लोगों के लिये यह आसान बनाने के लिये मैं एक काम कर सकती हूँ कि तुम मेरे पास आ कर मुझे अकेले में बता सकती हो कि वह मॉस तुमने खाया है और मैं दूसरी को नहीं बताऊँगी कि वह मॉस तुमने खाया है।

पर अगर कल सुबह तक तुमने मुझ से कुछ नहीं कहा तो मैं तुम को उस नदी वाले राक्षस को खाने के लिये दे दूँगी।" यह कह कर वह अपने कमरे में सोने चली गयी।

उसकी दोनों बेटियाँ भी अपने कमरे में सोने चली गयीं। वहाँ जा कर वे सीधी लेट गयीं और रात भर अपने छप्पर की छत पर बैठी रात में आने वाली मौथ[71] को देखती रहीं।

बड़ी बेटी ने कहा — "तुम इस बात को मान क्यों नहीं लेतीं? क्यों कल तुम सबको शर्मिन्दा करना चाहती हो?"

छोटी बेटी बोली — "और तुम? तुम ही इस बात को क्यों नहीं मान लेतीं?"

काफी रात गये तक वे एक दूसरे से ऐसे ही बहस करती रहीं फिर पता नहीं कब उनको नींद आ गयी। जब वे सुबह सो कर उठीं

[71] Moth – a kind of butterfly which is very dull in color, mostly of brown color, comes out in night and sleeps in daytime. Sometimes it is beautiful also and makes good pattern when she sits down – see the picture of its one kind above.

तो उनकी मॉ खेत पर जा चुकी थी। यह देख कर उन दोनों को कम से कम दिन भर के लिये तसल्ली मिली।

मॉ के घर लौट कर आने से पहले छोटी बेटी ने सोचा कि नदी पर जाने के लिये काफी देर हो जायेगी।

दोपहर बाद उन्होंने देखा कि उनकी मॉ खेत पर से वापस आ रही थी। उसको देखते ही दोनों बेटियों के मुँह लटक गये और उनके दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगे।

वे अपने में इतनी खोयी हुई थीं कि उनको पता ही नहीं चला कि कब उनकी मॉ उनके सामने आ कर खड़ी हो गयी।

उसने पूछा — "क्या तुम लोग मेरा स्वागत नहीं करोगी।"

वे कुछ परेशान सी बोलीं — "हॉ हॉ आओ मॉ।" और उन्होंने अपनी मॉ के हाथ में पकड़ा बोझा ले कर जमीन पर रख दिया।

उन्होंने अपनी मॉ को खाना परोसा और जब वह खाना खा चुकी तो उसने उनसे फिर पूछा कि क्या वे लोग यह बात मानने के लिये तैयार थीं कि खरगोश का मॉस उन्होंने ही खाया था? पर उनमें से कोई कुछ नहीं बोला।

सो उनकी मॉ उन दोनों को ले कर नदी पर गयी। वहॉ पहुँच कर उसने अपनी छोटी बेटी को एक बड़े से कैलेबाश के कटोरे में रखा और यह कहते हुए नदी में बहा दिया।

"बेटी, अगर तुम सच्ची हो तो वह तुमको छोड़ देगा, और अगर तुम सच्ची नहीं हो तो अलविदा मेरी बेटी। मैं तुमको आखिरी बार देख रही हूँ।"

कैलेबाश का कटोरा बहता बहता नदी के बीच में चल दिया तो लड़की ने गाया —

नदी के राक्षस, ओ नदी के राक्षस, अगर मैंने खरगोश का मॉस खाया है
तो मैं तुम्हारे पास आ रही हूँ और मैं तुम्हारी हूँ
अपना मुँह खोलो ताकि मैं उसमें घुस सकूँ
पर अगर मॉस किसी और ने खाया है
तो हमेशा के लिये तुम अपना मुँह बन्द कर लो ताकि मैं यहाँ से वापस जा सकूँ

दो या तीन लाइनें गाने के बाद उसको कुछ नहीं हुआ। नदी का बहाव बदल गया और लड़की अपनी मॉ के पास किनारे पर आ कर लग गयी। उसकी मॉ ने उसको कैलेबाश के कटोरे में से निकाल लिया और फिर उसकी बड़ी बहिन को उसमें रख कर बहा दिया।

जब बड़ी बहिन उस कैलेबाश में बैठ कर नदी के बीच में पहुँची तो उसने भी गाना शुरू किया —

नदी के राक्षस, ओ नदी के राक्षस, अगर मैंने खरगोश का मॉस खाया है
तो मैं तुम्हारे पास आ रही हूँ और मैं तुम्हारी हूँ
अपना मुँह खोलो....

इतना गाते ही नदी के पानी ने भँवर खाना शुरू किया और उसको अपने भँवर में निगलना शुरू कर दिया। उसकी मॉ ने उससे

बहुत कहा कि वह अपनी गलती मान ले पर उसने अपनी गलती नहीं मानी।

जल्दी ही पानी उसकी गर्दन तक आ गया। उसकी मॉ ने एक बार फिर उससे कहा कि वह अपनी गलती मान ले परन्तु वह मना ही करती रही कि उसने खरगोश का मॉस नहीं खाया।

वह धीरे धीरे नदी के पानी में डूबती चली गयी और नदी के पानी ने उसको पूरी तरह से ढक लिया।

इसके बाद मॉ अपनी बेटी के लिये बहुत रोती रही। जब वह रोते थक गयी तो वह अपनी छोटी बेटी को ले कर घर वापस चली गयी।

वे दोनों मॉ बेटी बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहीं पर जब भी वे नदी की तरफ जातीं तो वे अपनी बेटी और बहिन के लिये बहुत रोतीं।

16 दुनियॉ का जन्म[72]

यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के माली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

शुरू शुरू में यह सारी दुनियॉ दूध का एक समुद्र थी और भगवान अपनी बनायी चीज़ से सन्तुष्ट था। सो दुनियॉ में केवल दूध का समुद्र था और बादल थे।

पर क्योंकि स्वर्ग और धरती में कोई अन्तर नहीं था सो भगवान ने चाहा कि वह अपनी इस दुनियॉ में कुछ रंगीनी लाये। वह बोला — "दूध से पौधे और पत्थर पैदा हो जायें।" और दूध से पौधे और पत्थर पैदा हो गये।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।

पर पत्थर दूध और पौधों के लिये बहुत ही सख्त थे सो उसने उनको दबा कर चौरस कर दिया। भगवान अब पत्थर के मुकाबले कुछ और ज़्यादा मजबूत चीज़ बनाना चाहता था।

सो वह बोला — "पत्थर से लोहा पैदा हो जाये।"

और पत्थर से लोहा पैदा हो गया।

---

[72] The Origin of Creation (Tale No 16) – a Fulani folktale from Mali, West Africa.
[My Note: This is strange that this folktale is from Fulani people. Fulani people are Muslims and they say in this tale that "God gave us His son." – means that "He gave us Jesus Christ". How could they say this?]

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया

लोहा जैसा कि तुम जानते हो पत्थर के लिये बहुत ही ज़्यादा सख्त हो गया था। अब उसको किसी और ज़्यादा ताकतवर चीज़ की जरूरत थी जो उसको काबू में रख सके सो उसने आग बनायी।

वह बोला — "आग बन जा।" और आग बन गयी।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
. पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी

बहुत जल्दी ही आग चारों तरफ फैलने लगी और रुक ही नहीं पायी। जो कुछ भी उसके रास्ते में आता गुस्से में आ कर वह उस सबको जला देती।

सो भगवान ने उसको रोकने के लिये पानी बनाया, उसने कहा — "पानी बन जा।" और पानी प्रगट हो गया जिसने आग के गुस्से को रोका —

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी
और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया

"पानी पानी, तुमने बरसने से क्यों मना कर दिया? क्योंकि मैंने तुमको आग को रोकने के लिये ही बनाया है इसलिये तुम बस लगातार पड़ते ही रहो।"

पर उससे तो बाढ़ आने लगी सो पानी को रोकने के लिये भगवान ने फिर सूरज बनाया।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी

और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया
और फिर आया सूरज पानी को रोकने के लिये

फिर भगवान ने सोचा — "मैंने बहुत सारी चीज़ें बनायीं अब मुझे आराम की जरूरत है। पर उससे पहले मुझे एक चौकीदार की जरूरत है जो मेरी बनायी हुई इन सब चीज़ों पर निगाह रख सके।"

भगवान ने यह सोचते हुए आदमी बनाया और यह भी सोचा कि उसको मेरी ही शक्ल का होना चाहिये ताकि वे सब उसकी सुन सकें।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी

और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया
और फिर आया सूरज पानी को रोकने के लिये
और फिर उसने दिया आदमी जो उसकी दुनियॉ पर राज कर सके

पर आदमी को घमंड हो गया और उसने दुनियॉ पर बड़े बेरहम ढंग से राज करना शुरू कर दिया।

सो आदमी को झुकाने के लिये भगवान ने बहुत सारे दुख बनाये। आदमी तब से ही उनसे लड़ने की कोशिश कर रहा है – बीमारियॉ, भूख, चिन्ता, जलन से लड़ते लड़ते वह बहुत कमजोर हो गया है।

पर बाद में ये दुख भी अपने आप में बहुत घमंडी हो गये कि हम तो आदमी को भी अपने कब्जे में रखते हैं।

सो भगवान ने फिर मौत बनायी जिसने उन दुखों को जीता और उसके साथ ही जीता आदमी को भी।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी

और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया
और फिर आया सूरज पानी को रोकने के लिये

फिर उसने आदमी दिया अपनी बनायी हुई चीज़ों के ऊपर राज करने के लिये
पर आदमी घमंडी हो गया और बेरहमी से राज करने लगा

सो भगवान ने आदमी को नम्र बनाने के लिये दुख बनाये
और आखीर में बनायी मौत दुखों को और आदमी को काबू में रखने के लिये
पर मौत ने तो उन सारे आदमियों को मार डाला जो भी उसके रास्ते में आया
और इस तरह उसने आदमी को भी दुनियॉ से हटा दिया

हालॉकि भगवान यह नहीं चाहता था कि वह आदमी को अपनी दुनियॉ से बिल्कुल ही हटा दे क्योंकि उसको तो उसने अपनी शक्ल का बनाया था सो वह बोला — "मुझे अब कुछ खास बनाना चाहिये। एक ऐसा आदमी जो मौत को जीत सके सो उसने अपना बेटा इस दुनियॉ में भेजा —

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।

फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी
और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया
और फिर आया सूरज पानी को रोकने के लिये

फिर उसने आदमी दिया अपनी बनायी हुई चीज़ों के ऊपर राज करने के लिये
पर आदमी घमंडी हो गया और बेरहमी से राज करने लगा
सो भगवान ने आदमी को नम्र बनाने के लिये दुख बनाये
और आखीर में बनायी मौत दुखों को और आदमी को काबू में रखने के लिये

पर मौत ने तो उन सारे आदमियों को मार डाला जो भी उसके रास्ते में आया
और इस तरह उसने आदमी को भी दुनियॉ से हटा दिया
सो भगवान ने इस दुनियॉ में अपना बेटा भेजा जिसने मौत को भी जीत लिया

17 जादुई सेमल का पेड़[73]

यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के मौरिटैनिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक आदमी अपनी दो पत्नियों के साथ रहता था। उसकी पहली पत्नी के कोई बच्चा नहीं था और दूसरी पत्नी के दो बच्चे थे और तीसरे बच्चे की उसको आशा थी।

हालॉकि उसकी पहली पत्नी अपनी सौत से बहुत जलती थी पर उसको यकीन था कि एक दिन उसके भी अपना बच्चा होगा।

वह सोचती थी कि अभी तो मैं जवान हूँ और क्योंकि उसकी सौत के दो लड़कियॉ ही थीं उसकी बहुत इच्छा थी कि उसके पहला बच्चा लड़का हो। पर उसकी बदकिस्मती से जब उसकी सौत के तीसरा बच्चा हुआ तो वह लड़का था।

एक दिन उसने सोचा — "मेरी क्या इच्छा थी और क्या हो गया। मेरे लिये तो यही बहुत बुरी बात थी कि उसके बच्चे हैं पर यह तो और भी बुरा हो गया कि उसके लड़का पहले हो गया और मैं ऐसे ही रह गयी। अब मेरा पति उसको और ज़्यादा प्यार करेगा।"

[73] The Magic Silk Cotton Tree (Tale No 17) – a Wolof folktale from Mauritania, West Africa.

इस बच्चे के जन्म के बाद पहली पत्नी अपनी सौत को नीचा दिखाने का तरीका सोचने लगी। हालॉकि उसने कई तरीके सोचे पर उसका कोई तरीका काम नहीं कर रहा था।

उसने सोचा — "क्योंकि केवल इस लड़के की ही वजह से वह मेरे पति का प्यार पायेगी इसलिये मुझे उस लड़के को ही मार देना चाहिये।"

एक दिन जब वह दूसरी पत्नी अपने बच्चे की तरफ नहीं देख रही थी तो पहली पत्नी ने उसके बच्चे को वहॉ से चुराया और उसको एक उथली कब्र में ज़िन्दा ही गाड़ दिया।

जब वह बच्चे को गाड़ रही थी एक जंगली बतख खाने की खोज में ऊपर उड़ रही थी। उस बतख ने देख लिया कि वह औरत क्या कर रही थी।

जैसे ही वह औरत वहॉ से गयी तो वह बतख नीचे उतरी उसने बच्चे को कब्र में से निकाला और वह उस बच्चे को अपने घोंसले में ले गयी जो एक नदी के किनारे एक सेमल के पेड़[74] के ऊपर था।

बतख उस बच्चे को जंगली बेर खिलाती, उसके लिये नदी से पानी लाती और लोगों के घरों के ऑगन से खाना ले कर आती।

---

[74] Translated for the words "Silk Cotton Tree". Silk Cotton tree gives silk cotton type cottonwool that is why it is called as silk cotton tree. It is a kind of cottonwool except that it is very soft. See its picture above.

दो साल बाद वह बच्चा बहुत ही सुन्दर घुटनों चलने वाला बच्चा हो गया।

बतख और बच्चा दोनों ही उस सेमल के पेड़ पर रहते हुए बहुत खुश थे। यह पेड़ गॉव से काफी दूर पर था सो इस लड़के ने दो साल तक किसी आदमी की शक्ल ही नहीं देखी थी।

एक दिन एक शिकारी शिकार खेलता खेलता उधर आ निकला और उस सेमल के पेड़ तक आ पहुॅचा।

उसने देखा कि उस सेमल के पेड़ पर एक बन्दर जैसा कोई बैठा हुआ था सो उसने अपना तीर कमान निकाला और उसकी तरफ निशाना साधा और तीर चलाने ही वाला था कि उसको अपने शिकार में कुछ अजीब सा दिखायी दिया।

उसने अपना हाथ रोक लिया और उस शिकार को ध्यान से देखा। उसको बहुत ही आश्चर्य हुआ जब उसने उसको ध्यान से देखा – कि वह कोई बन्दर नहीं था वह तो एक छोटा सा लड़का था।

उसने अपनी ऑखें छोटी करके उसको और ज़्यादा अच्छी तरह से देखने की कोशिश की। उसने अपनी ऑखों पर हाथ रख कर भी देखने की कोशिश की पर यह सब करने के बाद भी वह एक ही नतीजे पर पहुॅचा कि वह बन्दर नहीं बल्कि एक आदमी का बच्चा था।

वह बोला — "भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि मैं एक आदमी का खून करने से बच गया। मेरा कौन विश्वास करेगा कि इसके जितना एक छोटा बच्चा इस जंगल में इतने ऊँचे पेड़ पर अकेला चढ़ा हुआ था।"

एक पल को तो उसने सोचा कि वह क्या करे। यह तो बहुत ही बुरा होता अगर वह किसी आदमी को मार देता पर यह तो उससे भी बुरा होता अगर वह किसी ऐसे बच्चे को मार देता जो अपनी रक्षा अपने आप न कर सकता हो।

उसने एक बार फिर से ऐसे आदमी की सजा के बारे में विचार किया जिसने किसी ऐसे आदमी को मारा हो जो अपनी रक्षा न कर सकता हो, जैसे किसी परदेस में देश निकाला मिलने की उम्मीद वाला आदमी, शर्म वाला आदमी, आदि आदि।

जंगली बतख अपने घोंसले की रक्षा करने के लिये उस शिकारी की तरफ कूद लगाते हुई बोली — "क्वैक, क्वैक, क्वैक।" बतख से बचने के लिये शिकारी नीचे झुक गया।

जब वह अपने तीर कमान के साथ सँभल गया और बतख भी वहाँ से चली गयी तो उसने उस बच्चे को बचाने के लिये उस पेड़ पर चढ़ना शुरू किया। पर उस पेड़ का तना केवल उस तने को पकड़ कर पेड़ पर चढ़ने के लिये बहुत लम्बा था।

फिर उसने पेड़ के नीचे से खड़े खड़े ही बच्चे से बात करनी चाही पर वह तो शिकारी की कोई बात समझ ही नहीं पा रहा था।

इसलिये वह शिकारी तुरन्त ही गॉव के सरदार को यह बताने के लिये भागा कि उसने जंगल में क्या देखा।

सरदार बोला — "तुरन्त ही बोलने वाले ढोलों[75] को हुक्म दो कि कल सुबह सब लोग बाजार के मैदान में जमा हों।"

अगली सुबह बहुत जल्दी ही सारे गॉव वाले बाजार वाले मैदान में जमा हो गये। गॉव वाले समझ गये कि मामला जरूर बहुत ही संगीन होगा तभी सरदार ने उनको इतनी जल्दी में और बिना किसी चेतावनी के बुलाया है।

एक गॉव वाले ने अपने पड़ोसी से पूछा — "क्या बात है?"

पड़ोसी बोला — "सुना है कि एक शिकारी सरदार के पास आया था और कोई खबर ले कर आया था।"

उसी गॉव वाले ने फिर पूछा — "कैसी खबर?"

पड़ोसी बोला — "यह तो पता नहीं। पर जो लोग वहॉ थे वे कह रहे थे कि जैसे ही उस सरदार को वह खबर मिली वह चिल्लाया — "हे भगवान, मेरी ऑखों को मेरे कान मत देखने दो जब तक कि मैं उनको अपनी परछाईं में न देखूँ।"

गॉव वाला बोला — "तब तो मामला कुछ संगीन सा ही लगता है।"

---

[75] Talking drums - one of a set of West African drums, each having a different pitch, that are beaten to transmit a tonal language in African societies.

अगले दिन गॉव के लोग जब वहॉ इकट्ठा हो गये, तो पहले तो सरदार ने उस शिकारी को गॉव वालों से मिलवाया जिसको उसने जबसे वह वह खबर ले कर आया था अपने महल में ही बन्द कर रखा था।

फिर वह सबसे बोला — "तुम सब लोग मूसा शिकारी[76] को तो जानते ही हो। वह कहता है कि उसने एक छोटा लड़का सेमल के एक पेड़ के ऊपर एक घोंसले में बैठा देखा है।

वह यह तो नहीं जानता कि वह वहॉ कैसे पहुॅचा। उसने उससे बात भी करने की कोशिश की पर एक बहुत बड़ी बतख ने उसको वहॉ से भगा दिया। क्या तुममें से किसी ने उस बच्चे को वहॉ उस पेड़ के ऊपर रखा है?"

यह सुन कर सब गॉव वालों कानाफूसी की एक लहर सी दौड़ गयी। हर आदमी अपने पास खड़े आदमी से पूछ रहा था कि क्या वह उस बारे में कुछ जानता था। कुछ पल बाद सरदार बोला कि वह इस भेद तक जरूर जायेगा कि किसने ऐसा किया है।

फिर उसने एक छोटी सी मीटिंग के लिये गॉव के बड़े लोगों को बुलाया और उस मीटिंग के बाद उसने फिर गॉव वालों से कहा — "जैसा कि मैं कह रहा था कि मैंने यह पक्का कर लिया है कि मैं यह जान कर ही रहूॅगा कि ऐसा किसने किया।

[76] Musa hunter – Musa is a Muslim name of a man

क्योंकि वह सेमल का पेड़ किसी भी आदमी के चढ़ने के लिये बहुत ऊँचा और बड़ा है इसलिये हम उसको काट देंगे।"

एक आदमी ने अपने पास खड़े आदमी से कहा — "यह तो नामुमकिन है। मैंने सुना है कि वह पेड़ इतना बड़ा है उसको काटने के लिये चार बाजार हफ्ते[77] लग जायेंगे।"

उस पास खड़े आदमी ने उसको समझाया — "चिन्ता न करो, कोई पेड़ इतना बड़ा नहीं होता जिसको काटने में इतना समय लग जाये। अल्हाजी बैलो[78] को बुलाओ और उसको उसके पैसे दो। वह उस पेड़ को दोपहर से पहले ही काट कर गिरा देगा।

मैंने सुना है कि उसके पास एक जादू की कुल्हाड़ी है और बहुत तेज़ बड़े चाकू[79] हैं जिनसे वह अपनी दाढ़ी बनाता है।"

पहले आदमी ने कहा — "यही नहीं। मैंने तो सुना है कि उसको तो अपने वे कुल्हाड़ी और बड़े चाकू को चलाने की भी जरूरत नहीं पड़ती, वे अपने आप ही काटते रहते हैं।"

जैसे ये दो आदमी बैलो के बारे में बात कर रहे थे, सरदार ने अल्हाजी बैलो को बुलाया और उसको नौ अच्छे मजबूत आदमी

---

[77] Four market weeks – in villages markets are organized daily or weekly, so four market weeks means just four weeks.

[78] Alhaji Bello – In West African countries Muslims who had completed Haj successfully are called Alhaji, and Bello is his name

[79] Translated for the word "Matchet" – Matchets are the big large knives, with about 2-2 1/2 feet long blade which Africans use to cut grass – see its picture above.

दिये। फिर उसने उनको खूब अच्छे पैसे दिये और उनको उस सेमल के पेड़ को काटने के लिये और उस बच्चे को वहाँ से लाने के लिये कहा।

उसने अल्हाजी बैलो और उसके आदमियों से यह भी कहा — "तुम लोग शान्ति से जाओ। हम तुम लोगों से मिल कर सेमल के पेड़ पर बैठे उस लड़के के वहाँ होने के राज़ को हल कर लेंगे।

हम पता कर लेंगे कि उसके माता पिता कौन हैं जिन्होंने उस लड़के को उस पेड़ पर रख कर अल्लाह को बदनाम किया है।"

सो अगली सुबह जल्दी ही अल्हाजी बैलो और उसके नौ आदमी नदी की तरफ चल दिये। वे जब उस पेड़ के पास पहुँचे तो उन्होंने देखा कि जैसा कि शिकारी ने सरदार को बताया था वह लड़का उसी तरह से उस सेमल के पेड़ पर बैठा हुआ है।

वे सब तुरन्त ही अपने काम पर लग गये और उन्होंने पेड़ काटना शुरू कर दिया। उन्होंने वह पेड़ उतना काट दिया जब तक कि बहुत ही छोटा सा हिस्सा उस पेड़ को खड़ा रखने के लिये जरूरी रह गया था। अल्हाजी बैलो को यकीन था कि जैसे ही उसने अपनी तेज़ कुल्हाड़ी एक बार और मारी तो वह पेड़ गिर पड़ेगा।

उसने पेड़ को इधर उधर से जाँचा कि अब वह पेड़ किधर की तरफ गिरेगा। फिर उसने अपने आदमियों को सुरक्षित खड़ा किया और उसके बाद सारी सावधानी बर्तने के बाद उसने अपनी आखिरी कुल्हाड़ी मारी। तभी उस लड़के ने गाया —

क्वैक क्वैक, ओ मॉ बतख, यह तुम्हारा बच्चा है
क्वैक, यह सेमल का पेड़ पतला होता जा रहा है
क्वैक, यह गिरने वाला है
क्वैक, यह पतला है और अब गिरने वाला है

यह सुन कर अल्हाजी बैलो ने बड़े आश्चर्य से ऊपर देखा कि इतने में इस गीत के जवाब में एक आवाज नदी की तरफ से आयी —

क्वैक, ओ सिल्क के पेड़
क्वैक, ओ पेड़ के तने बड़े हो जाओ
क्वैक, ओ सिल्क के पेड़ खड़े रहना
क्वैक, ओ पेड़ के तने बड़े हो जाओ

यह एक जंगली बतख थी जिसने यह गीत गाया था। जैसे ही उसने यह गीत गाया पेड़ का तना अपने पुराने साइज़ जितना मोटा हो गया। वे आदमी जिन्होंने इतना समय लगा कर उसको काटा था उसको फिर से वैसा ही देख कर आश्चर्य में पड़ गये।

इस बार उन्होंने पहले से ज़्यादा पक्के इरादे से उस पेड़ को काटना शुरू कर दिया। पर जब वह पेड़ फिर से गिरने वाला था तो उस लड़के ने फिर से वही गीत गाया।

उस बतख ने भी जवाब में फिर से वही गीत गाया जो उसने पहले गाया था और वह पेड़ फिर से अपने पहले रूप में आ गया।

जब आदमियों ने कई बार कोशिश कर ली और वह पेड़ बार बार अपने पुराने साइज में आ जाता तो उन लोगों को विश्वास हो गया कि वे उस पेड़ को नहीं काट सकेंगे और उन्होंने उसको काटने की अपनी कोशिश छोड़ दी। उन्होंने यह सब जा कर सरदार को बताया।

अल्हाजी बैलो सरदार के सामने झुकते हुए बोला — "सरदार अमर रहे। हम लोग उस पेड़ को नहीं काट सके। जब भी हम उसको गिराने के करीब होते हैं तो वह लड़का कुछ गाता है और उसके जवाब में नदी में से एक बतख कुछ गाती है और बस वह पेड़ फिर से अपने पुराने रूप में आ जाता है।

हमने कई बार कोशिश कर ली पर हम उसको गिरा नहीं सके। और जैसा कि हमारे लोग कहते हैं कि "वह तो कोई पागल आदमी ही होगा जो वही काम बार बार करेगा जिसका नतीजा बार बार एक ही होता हो।"

यह सुन कर सरदार ने अपने डाक्टर को बुलाया और उसको उन आदमियों को कोई जादुई पाउडर देने को कहा। सरदार ने उनको आपस में भी दो हिस्सों में बॅट जाने को कहा।

उसने कहा कि जबकि एक समूह पेड़ को काटेगा तो दूसरा समूह नदी के ऊपर की तरफ जायेगा और नदी के पानी में वह जादू का पाउडर छिड़क देगा।

सो अगले दिन सुबह बहुत जल्दी ही उठ कर लोग अपना काम करने चल दिये। जब वे वहॉ पहुँचे तो उन्होंने ऐसा ही किया जैसा कि सरदार ने उनसे करने के लिये कहा था।

पॉच आदमी पेड़ काटने में लग गये और दूसरे पॉच आदमी नदी के ऊपर की तरफ नदी के पानी को जहरीला बनाने के लिये चले गये। जैसे ही वह पेड़ गिरने को था कि उस लड़के ने फिर गाना शुरू किया —

क्वैक क्वैक, ओ मॉ बतख, यह तुम्हारा बच्चा है
क्वैक, यह सिल्क का पेड़ पतला होता जा रहा है
क्वैक, यह गिरने वाला है
क्वैक, यह पतला है और अब गिरने वाला है

यह गाना सुनते ही नदी के पास खड़े आदमियों ने वह पाउडर नदी के पानी में डाल दिया और बड़ी उत्सुकता से देखने लगे कि उस जादुई पाउडर का क्या असर होता है। तभी उस जंगली बतख ने बड़ी धीमी आवाज में धीरे से गाया —

क्वैक, ओ सिल्क के पेड़
क्वैक, ओ पेड़ के तने बड़े हो जाओ
क्वैक, ओ सिल्क के पेड़ खड़े रहना
क्वैक,....

अल्हाजी बैलो खुशी से चिल्लाता हुआ बोला — "लगता है कि वह बतख मर गयी है क्योंकि अबकी बार उस पेड़ का थोड़ा सा ही

हिस्सा अपने पुराने रूप में आया है। बस कुछ ही कुल्हाड़ी के वार और और फिर वह पेड़ नीचे गिर जायेगा।"

उन्होंने कुछ ही बार कुल्हाड़ी उस पेड़ में और मारी कि वह पेड़ गिर पड़ा और वहाँ खड़े लोगों ने उस लड़के को पकड़ लिया और उसे सरदार के पास ले गये।

सरदार ने फिर से गाँव वालों को बुलाया। बातें करने वाला ढोल फिर से बजाया गया।

जब वे सब वहाँ आ गये तो सरदार उनसे बोला — "हमारे गाँव की हर एक स्त्री यहाँ आये और बच्चे को देख कर यह बताये कि यह बच्चा उसका तो नहीं है। और देवता और खून की ताकत हमको उसकी असली माँ की पहचान करायेगी।"

एक एक कर के गाँव की सारी स्त्रियाँ बच्चे को देखने के लिये आयीं पर वह बच्चा किसी के पास नहीं गया। आखीर में बच्चे की असली माँ की बारी आयी तो वह तुरन्त ही उसके पास दौड़ कर चला गया।

उसी समय वे बातें करने वाले ढोल भी बजने लगे। सारे गाँव वाले बहुत खुश थे कि बच्चे की असली माँ मिल गयी थी।

सरदार बोला — "यह कैसी माँ है कि इसने अपने बच्चे को फेंक दिया था।"

वह स्त्री बोली — "सरदार अमर रहे। मैंने अपने बच्चे को नहीं फेंका। मेरा बच्चा खो गया था पर अब वह मुझे मिल गया है। वह मर गया था पर अब वह ज़िन्दा है।"

क्योंकि यह किसी को पता नहीं चला कि वह बच्चा बतख के पास कैसे पहुँचा तो यह जानने के लिये पुजारी[80] बुलाये गये। उन्होंने अपनी कौड़ियाँ[81] और समुद्र में से निकली सीपियाँ फेंक कर बताया कि उस स्त्री की सौत ने उस बच्चे को चोरी किया था और उसको ज़िन्दा ही गाड़ दिया था।

सरदार ने उस स्त्री की सौत को तुरन्त ही बन्दी बनाने का हुक्म दे दिया और उसके इस बुरे बर्ताव के लिये उसको सजा दी।

जहाँ तक उस बतख का सवाल है जब उस डाक्टर के उस जादुई पाउडर का असर खत्म हो गया तो वह अगले दिन ही अपने पैरों पर खड़ी हो गयी। वह उस लड़के के लिये और अपने सेमल के पेड़ के लिये पूरा दिन और पूरी रात रोयी।

पर लगता है कि उसके रोने ने उस पेड़ का जादू टूट चुका था। क्योंकि उस दिन के बाद से बतखों को पेड़ अच्छे नहीं लगते और वे अपने घोंसले जमीन पर ही बनाती हैं या फिर पानी पर तैरती हैं।

[80] Translated for the word "Diviners" – people who predict through divine means.
[81] Translated for the word "Cowries" – cowries are the sea shells. See their picture above.

18 केवल तुम्हारे कानों के लिये[82]

यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के नाइजर देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि पश्चिमी अफ्रीका के नाइजर देश के एक गॉव में एक शिकारी रहता था। एक दिन उसने अपने तीर कमान से एक हिरन मारा।

यह लम्बी दौड़ उसको कई जंगलों और नदियों के पार ले गयी और इससे उसके तीर के जहर को असर करने में काफी समय लगा पर फिर भी वह अपना हिरन मार कर ले आया।

जब वह हिरन ले कर अपने घर वापस आ रहा था तो उसने रास्ते में एक बहुत ही मीठा गाना सुना जो नदी के पास के किसी जंगल में से आ रहा था —

आदमी तो जानवरों का राजा है
आदमी अपनी इच्छा उनके ऊपर थोपता है
वह आदमी नहीं है जिसके ऊपर जानवर राज करते हैं
जानवर अपनी इच्छा उसके ऊपर नहीं लाद सकते

[82] For Your Ears Only (Tale No 18) – a Fulani folktale from Niger, West Africa.
[My Note: A similar folktale is told and heard in a West African country Ghana also. It is given in my book "Ghana Ki Lok Kathayen" under the title "Gane Valee Maada Kachhua". The only difference is that in that folktale the female tortoise sings instead of a chameleon.]

यह सुन कर उसके मुँह से निकला — "ओह कितनी मीठी आवाज है। कितने अच्छे तौर तरीके हैं। मैं ऐसी लड़की से शादी करने के लिये कुछ भी दे सकता हूँ।"

जब यह गाना बन्द हो गया तो वह जंगल के उस कोने की तरफ चल दिया जहाँ से वह आवाज आ रही थी पर फिर रुक गया।

उसने सोचा अगर कहीं वह मत्स्यकन्या[83] हुई तो? इस जंगल में मत्स्यकन्याओं की ऐसी बहुत सी कहानियाँ सुनने को मिलती हैं। अच्छा तो यह है कि मैं अपने शिकार के साथ अपने घर ही चला जाऊँ।

पर जैसे ही वह अपने घर जाने के लिये मुड़ा वह मीठी आवाज उसको फिर सुनायी दी।

आदमी तो जानवरों का राजा है
आदमी अपनी इच्छा उनके ऊपर थोपता है
वह आदमी नहीं है जिसके ऊपर जानवर राज करते हैं
जानवर अपनी इच्छा उसके ऊपर नहीं लाद सकते

अब उसका डर कुछ कम होता जा रहा था सो वह जंगल के किनारे की तरफ बढ़ा। फिर उसने जंगल के अन्दर की तरफ झाँका जिधर से गाने की आवाज आ रही थी।

[83] Translated for the word "Mermaid" – half fish and half woman – see her picture above.

शिकारी का आश्चर्य तब और बढ़ गया जब उसने वहाँ एक नर गिरगिट को अपने गले में हार्प बाजा[84] लटकाये हुए देखा। गिरगिट ने शिकारी से प्रार्थना की — "किसी से मेरे बारे में कुछ कहना नहीं। मैं यह संगीत केवल तुम्हारे लिये ही बजाऊँगा।"

यह सुन कर शिकारी तो चौंक गया क्योंकि उसने पहले कभी किसी गिरगिट को बोलते भी नहीं सुना था और इतना सुन्दर संगीत बजाते हुए सुनने का तो तो सवाल ही पैदा नहीं होता।

"एक गिरगिट? और वह भी मेरा अपना गिरगिट जो केवल मेरे लिये ही संगीत बजायेगा।" यह विचार ही उस शिकारी को खुश करने के लिये काफी था।

वह वहीं बैठ गया और गिरगिट से कहा कि वह उसके लिये कुछ और संगीत बजाये। जब गिरगिट अपना संगीत बजा चुका तो शिकारी ने अपना हिरन उठाया और अपने घर चला गया।

अब वह शिकारी उस जंगल में उस गिरगिट का गाना सुनने रोज जाता था। जिस दिन उसको कोई अच्छा शिकार मिलता तो गिरगिट का गाना उसको और भी ज़्यादा अच्छा लगता पर जब उसको शिकार नहीं मिलता तो उसको लगता कि उसका दिन पूरा बेकार नहीं गया। कम से कम उसने गिरगिट का गाना तो सुना।

[84] Harp is a western musical string instrument. See its picture above

कई बाजार हफ्तों[85] के बाद वह शिकारी उस भेद को न छिपा सका। उसको तो वह किसी न किसी को बताना ही था।

सो एक दिन उसने यह सब अपनी पत्नी से कहा तो वह बोली — "जाओ जी, कैसी बात करते हो? भला कोई गिरगिट भी संगीत बजा सकता है और गा सकता है?"

जब उसने अपने दोस्तों से कहा तो उनमें से एक बोला — "तुम पागल हो गये हो क्या? ऐसा गिरगिट कहाँ है?"

उसने जवाब दिया — "जंगल में।"

उसके दोस्तों ने कहा — "हम तुमसे शर्त लगाते हैं कि वह तो इतनी तेज़ भागता है कि तुम उसको पकड़ ही नहीं सकते। तुम उसका गाना कैसे सुनोगे? हा हा हा हा।" और वे सब इतनी ज़ोर से हँस पड़े कि उसको शर्म महसूस होने लगी।

एक दूसरा दोस्त बोला — "तुम यह बात राजा से क्यों नहीं कहते। जब लोगों के पास कोई अजीब सी कहानी होती है तो वे उसे उसी के पास तो सुनाने के लिये जाते हैं। इस तरह केवल एक राजा ही ऐसी कहानियों को पक्का कर सकता है।"

उसका एक दूसरा दोस्त बोला — "पर अगर तुम झूठ बोल रहे होगे तो फिर तुमको अपनी जान भी गँवानी पड़ सकती है। देख लो।"

---

[85] Market weeks – in villages markets are normally organized daily or weekly, so market week may mean just a week.

शिकारी तो जानता था कि वह सच बोल रहा था और क्योंकि गिरगिट उसको बहुत प्यार करता था सो उसने सोचा कि वह उसको अपने आपको राजा को भी दिखाने देगा।

सो वह राजा को वह बताने चला जो गिरगिट ने उससे मना किया था और उसने देखा था। जब वह राजा के पास जा रहा था तो उसने सोचा कि वह कितना बड़ा आदमी था जो ऐसे गिरगिट का अकेला ही दोस्त था।

राजा के चौकीदार ने पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये?"

शिकारी बोला — " मुझे राजा से एक बहुत जरूरी बात कहनी है।"

चौकीदार बोला — "राजा अपने दरबार में है और इस समय उनके दरबार के बीच में कोई दखल नहीं दे सकता। तुम मुझे बताओ मैं उनसे बाद में कह दूँगा।"

शिकारी बोला — "मैं एक ऐसी जगह जानता हूँ जहाँ राजा को एक ऐसा गिरगिट मिलेगा जो गाता भी है और हार्प भी बजाता है। वह अपने गाने में आदमी की बहुत बड़ाई करता है।"

चौकीदार बोला — "तुम या तो पागल हो गये हो और या फिर मजाक कर रहे हो। दोनों ही मामलों में तुमने मजाक के लिये एक गलत आदमी को चुना है। जाओ भाग जाओ यहाँ से।"

शिकारी बोला — "मगर मैं ठीक बोल रहा हूँ। मैं मजाक नहीं कर रहा।"

"तो फिर तुम यह बात राजा से अपने आप ही कह लेना।" कह कर वह चौकीदार उस शिकारी को राजा के दरबार में ले गया जहॉ वह अपने सलाहकारों के साथ कुछ सलाह कर रहा था।

"राजा अमर रहे। सरकार यहॉ एक आदमी है जो आपसे मिलने की जिद कर रहा है।" चौकीदार ने राजा से कहा।

राजा बोला "ठीक है उसको अन्दर भेजो।"

चौकीदार शिकारी को अन्दर ले कर आया तो शिकारी बोला — "राजा अमर रहे।"

राजा बोला — "मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूॅ मेरे बेटे?"

शिकारी बोला — "कई बाजार हफ्ते पहले मुझे एक गिरगिट मिला जो बहुत ही मीठा गाना गा रहा था। तबसे मैं उसको रोज गाते सुनता चला आ रहा हूॅ। तो मैंने सोचा कि मैं आपको भी बता दूॅ क्योंकि मैं यह बात अब बहुत दिनों तक छिपा कर नहीं रख सकता।"

राजा बोला — "क्या इसी वजह से तुमने मेरे दरबार में दखल डाला?"

शिकारी बोला — "नहीं सरकार। गिरगिट सचमुच में गाता है और उसने मुझसे बात भी की। क्या यह आपको आश्चर्यजनक नहीं लगा?"

राजा बोला — "हॉ सचमुच में ही यह बड़े आश्चर्य की बात है कि एक गिरगिट गाता है और बात भी करता है। कहॉ है यह गिरगिट?"

शिकारी बोला — "वह एक जंगल में बहुत अन्दर की तरफ जा कर है जहॉ मैं शिकार करने जाता हूॅ। मैं उसको आपके दरबार में कल ले कर आऊॅगा।"

राजा बोला — "नहीं, इसकी कोई जरूरत नहीं। मैं तुम्हारे साथ अपने चार बहुत अच्छे आदमी भेज दूॅगा जो उस गिरगिट को ले आयेंगे। अगर ऐसा कोई गिरगिट है तो मैं तुमको बहुत मालामाल कर दूॅगा। पर अगर वह नहीं है तो तुमको इस झूठ के लिये अपनी जान देनी पड़ेगी।"

शिकारी बोला — "मेरे सरकार, ऐसा ही हो।"

अगले दिन राजा ने अपने चार चौकीदार उसके साथ कर दिये। उसने अपने चौकीदारों को यह भी कह दिया कि अगर वह शिकारी झूठ बोल रहा हो तो वे उसको वहीं मार दें।

काफी चलने के बाद, यानी मुर्गे की पहली बॉग से ले कर जब तक सूरज सिर पर चढ़ आया तब तक, वह शिकारी और राजा के वे चार चौकीदार जंगल की उस जगह तक आ गये जहॉ वह गिरगिट रहता था।

शिकारी उन चौकीदारों को जंगल के उस कोने तक ले गया जहॉ गिरगिट रहता था। फिर उसने उस गिरगिट को उन चौकीदारों

को दिखाने के लिये वहाँ की शाखाऐं आदि साफ कीं। यकीनन गिरगिट वहीं बैठा था और उसकी गरदन से वह हार्प भी लटक रहा था।

शिकारी खुशी से उन चौकीदारों से बोला — "देखा? मैंने तुमसे कहा था न?"

चौकीदार बोले — "वह तो हम भी देख रहे हैं कि यह गिरगिट यहाँ बैठा है पर न तो यह हार्प बजा रहा है, न ही यह गा रहा है और न ही यह बात कर रहा है।"

इस पर वह शिकारी गिरगिट से बोला — "ओ मेरे दोस्त, ये लोग राजा के पास से आये हैं और इस बात की जाँच करने के लिये आये हैं कि मैं तुम्हारे बारे में सच बोल रहा था या नहीं।

तुम हार्प पर कुछ बजाओ और इनके लिये कुछ गाओ ताकि ये लोग राजा से जा कर यह कह सकें कि मैं तुम्हारे बारे में सच बोल रहा था।"

गिरगिट वहीं चुपचाप बैठा रहा और इधर उधर देखता रहा। उसके गले से या उसके हार्प से कोई गीत नहीं निकला। यहाँ तक कि उसने अपने शरीर का कोई हिस्सा भी नहीं हिलाया।

चौकीदार शिकारी को समय देने के लिये बहुत धीरज से इन्तजार करते रहे कि वह शिकारी उससे या तो कोई गीत गवा सके या हार्प बजवा सके या कुछ बात करवा सके।

बहुत देर तक इन्तजार करने के बाद भी जब गिरगिट ने कुछ नहीं किया तो चौकीदारों का धीरज छूट गया। उनमें से एक बोला — "ऐसा लगता है कि यह इन्तजार अब काफी हो गया।"

यह सुन कर शिकारी ने गिरगिट से प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के मेरे दोस्त तुम गीत वीत को भूल जाओ, कम से कम कुछ बोल ही दो, चाहे कुछ भी बोलो।"

इस पर भी वह गिरगिट कुछ नहीं बोला। वह एक डाल पर बैठा था और क्रिसमस की सजावट की तरह से वहीं बैठा रहा। शिकारी ने बड़ी नाउम्मीदी से गिरगिट की तरफ देखा। ऐसा लग रहा था कि जैसे उसकी दोस्ती की निगाह गिरगिट के लिये बिल्कुल ही अनजानी सी हो।

चौकीदारों का धीरज अब बिल्कुल ही छूट चुका था सो उन्होंने राजा का हुक्म मानते हुए उस शिकारी को मार दिया।

शिकारी को मार कर जैसे ही वे पलट कर घर जाने के लिये घूमे कि एक आवाज उनके पीछे से आयी।

गिरगिट बोला — "मैंने इसको यह सब किसी से न कहने के लिये कहा था पर यह नहीं माना।"

चौकीदार तो वहीं के वहीं जम गये। जैसे ही उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि गिरगिट अपना हार्प ठीक कर रहा था।

उनमें से एक चौकीदार बोला — "इसका मतलब यह है कि यह शिकारी ठीक कह रहा था।"

दूसरा बोला — "पर हमने तो अब उसको मार दिया।"

गिरगिट बोला — "वह अपनी मौत अपने आप ले कर आया था। उसने लालच में आ कर मेरा एक छोटा सा भेद खोल दिया। मैंने उसको मना किया था कि वह मेरे बारे में किसी और से कुछ न कहे।

वह केवल इस बात से सन्तुष्ट नहीं था कि वह यहाँ आये और मुझे सुने। वह इस बात को दुनियाँ को बताना चाहता था ताकि वह अमीर और मशहूर हो जाये।"

चौकीदार तो यह सब देख सुन कर आश्चर्य में पड़ गये और घर भागे। जब वे भाग रहे थे उन्होंने गिरगिट को गाते सुना –

आदमी तो जानवरों का राजा है
आदमी अपनी इच्छा उनके ऊपर थोपता है
वह आदमी नहीं है जिसके ऊपर जानवर राज करते हैं
जानवर अपनी इच्छा उसके ऊपर नहीं लाद सकते

सोचो ज़रा कि जब वे घर पहुँचे होंगे तो उन्होंने राजा से क्या कहा होगा?

यह कहानी हमको यह शिक्षा देती है कि अपने दोस्त के भेदों को कभी किसी पर खोलना नहीं चाहिये, खास कर के जब जबकि उन्होंने मना किया हो।

19 अपूनन्वू[86]

एक बार की बात है कि पश्चिमी अफ्रीका के एक गॉव में एक बहुत ही लोकप्रिय सरदार रहता था। वह बहुत सारे नामों से पुकारा जाता था जिनमें से उसका एक नाम था – इफ़ेमैलूनमा[87]। पर यह सरदार सरदार मा[88] के नाम से ज़्यादा जाना जाता था।

इसके कई पत्नियॉ थीं पर किसी के कोई बच्चा नहीं था। वह अक्सर दिन रात एक बच्चे के लिये भगवान की प्रार्थना किया करता था पर फिर भी उसके अब तक कोई बच्चा नहीं था।

सरदार मा बहुत ही मेहनती था और बहुत से दूसरे सरदारों की तरह उसके पास भी बहुत सारे खेत थे, बहुत सारे जानवर थे और बहुत सारे नौकर भी।

एक दिन बहुत सारी पाम की गिरी[89] तोड़ने के बाद सरदार मा अपनी इस पैदावार से बहुत खुश था। उसके नौकरों ने तभी तभी पाम की गिरी का तेल निकाला था और सरदार अपनी पैदावार देखने के लिये वहॉ आया हुआ था।

---

[86] Apunanwu (Tale No 19) – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa

[87] Chief Ifemelunma

[88] Chief Nma

[89] Palm Nuts – a kind of edible oil is extracted from these nuts which is called Palm oil. See its picture above.

उसके नौकरों के सरदार ने उसे उसका पूरा नाम ले कर नमस्ते की — "इफ़ेमैलूनमा[90]।"

इस नाम का मतलब था "कुछ जो ठीक से किया गया"। बहुत सारे ख़िताब[91] नाम किसी वाक्य का छोटा रूप होते हैं जिनका मतलब होता है कि वह ख़िताब जिसको दिया गया है उसमें वे गुण हैं।

सरदार मा ने पूछा — "सो ऐसा क्यों है कि मेरे कोई बच्चा नहीं है जो मेरे बाद मेरी गद्दी पर बैठेगा। मैंने अपने पुरखों के लिये सब कुछ ठीक ही किया है। मैंने उनके लिये बलि दी है, मैंने अपने देश के नियमों का पालन किया है फिर भी अपने अच्छे कामों के बदले में मेरे कोई बच्चा नहीं है।"

सरदार मा जब अपने तेल के डिब्बे देख रहा था तो वह उस की खुशबू और मात्रा देख कर बहुत खुश था। तेल और बार के तेलों से ज़्यादा लाल रंग का था और उसको यकीन था कि वह तेल कभी नहीं जमेगा।

सरदार मा ने उस तेल की क्वालिटी देखने के लिये तेल के बर्तनों को झुका कर भी देखा तो तेल उन बर्तनों में पानी की तरह बह रहा था। वह उससे सन्तुष्ट था।

---

[90] Ifemelunma, means "something done right"

[91] Title – for example Sir is a Title. In India these titles were very common in British times, although they did not have any special meaning.

गॉव वाले इसी तरह के तेल को नये याम के त्यौहार[92] पर छोटे याम को भूनने में इस्तेमाल करते थे।

हालॉकि सारे तेल की क्वालिटी इस साल बहुत अच्छी थी पर सरदार को एक बर्तन का तेल दूसरे बर्तन के तेलों से कुछ अलग सा लगा। उसमें कुछ ज़्यादा ही चमक थी और वह कुछ ज़रा ज़्यादा ही ज़िन्दा सा लग रहा था।

सरदार मा ने उसको फिर से देखा तो वह तेल उसको बहुत ही अच्छा लगा और फिर जब उसने उसकी तरफ और ध्यान से देखा तो उसकी तरफ देखते हुए उसने उससे एक बच्चे के लिये प्रार्थना की, जैसी कि फिर रीति बन गयी।

उसने अपने भगवान को पुकारा — "ओ चिनेके[93], तूने मुझे फिर से इतनी अच्छी पैदावार दी है और तू हर बार देता है। मैं तेरे गुण गाता हूँ कि तेरी शान हमेशा बनी रहे।"

वह फिर बोला — "अगर तेरी इच्छा है तो तू मुझे एक दिन बच्चा भी देगा। और अगर तेरी इच्छा है तो यह तेल का बर्तन मेरे लिये एक बच्चे में बदल जायेगा।"

---

[92] New Yam Festival – yam is kind of root vegetable which is a very popular food of Nigeria. Before sowing new yam a kind of festival is celebrated for three days and three nights. Nobody eats new yam before this festival. See its picture above.

[93] Chineke – God

जैसे ही उसने अपनी प्रार्थना खत्म की कि वह बर्तन एक आदमी की शक्ल में बदलने लगा। सरदार उस तेल को इस तरह आदमी की शक्ल में बदलते देख कर आश्चर्य में पड़ गया। धीरे धीरे उसमें से एक बहुत ही सन्दर लड़की निकल कर आयी।

उसकी तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी थी और वह सुबह के सूरज की तरह से चमक रही थी। गॉव वालों ने अब तक जितनी लड़कियों को देखा था वह उनमें सबसे ज़्यादा सुन्दर लड़की थी।

लड़की बोली — "पिता जी, मैंने आपका रोना सुना तो मैं यहॉ आपको दिलासा देने चली आयी।"

सरदार मा तो कुछ बोल ही न सका। जब वह कुछ सॅभला तो उसने अपने हाथ बढ़ा कर अपनी बेटी को गले से लगाया। वह आज बहुत खुश था कि भगवान ने उसकी प्रार्थना आज सुन ली थी।

हालॉकि वह लड़की बच्ची नहीं थी पर फिर भी सरदार मा उस को एक बच्ची की तरह से ही मान रहा था इसलिये उसने उसका नाम तभी नहीं रखा।

उसने अपने रीति रिवाजों के अनुसार सात बाजार हफ्ते[94] तक उसके नाम रखने का इन्तजार किया। इस बीच उसने उस लड़की

[94] Seven Market weeks – traditionally markets are organized daily or weekly in villages, so seven market weeks might mean seven weeks,

को घर के अन्दर उसी तरह से रखा जैसे किसी छोटे बच्चे को रखते हैं।

सात बाजार हफ्ते बाद सरदार मा ने बच्ची का नाम रखने की रस्म की। गॉव में खूब नाच गाना हुआ, दावत हुई। उसकी सुन्दरता के चर्चे आस पास सब जगह फैल गये और बहुत जगह से सरदार की नयी बेटी को देखने के लिये लोग आने लगे।

सरदार मा का हर रिश्तेदार, उसके भाई बहिन और पत्नी से ले कर सभी को उस लड़की की नाम की रस्म में बुलाया गया था और उनमें से हर एक को उसको नाम रखने का मौका दिया गया था। सो उनमें से हर एक आगे आया और उसने अपनी अपनी इच्छा के अनुसार उसका नाम बताया।

सरदार मा की आखिरी पत्नी और लड़की की मॉ ने उसको ओगेचुकवुकन्मा[95] नाम से पुकारा जिसका मतलब होता है "भगवान का समय सबसे अच्छा है"।

सरदार मा के भाई ने कहा चिन्येरे[96] जिसका मतलब होता है "यह तो भगवान की भेंट है"। वह तो सचमुच ही भगवान की भेंट थी।

जब सब लोगों ने उस लड़की के नाम अपने अपने अनुसार बता दिये तो सरदार मा का नम्बर आया। जब वह उसका नाम बताने

[95] Ogechuckwukanma
[96] Chinyere

लगा तो उसने ऊपर आसमान में देखा, भगवान और अपने गॉव वालों को धन्यवाद दिया और बोला अपूनन्वू[97]।

अपूनन्वू की पिछली बातों को ध्यान में रखते हुए उसने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि वे उसको कभी बाहर धूप में न ले जायें।

सचमुच में ही उसके नाम का मतलब था "गर्मी के खिलाफ" पर उसका मतलब सुन्दरता भी था। इस तरह वह या तो सुबह के समय बाहर निकलती थी जब तक सूरज बहुत तेज़ नहीं होता था और या फिर शाम के समय सूरज डूबने के बाद।

इस सबके लिये सरदार मा ने उसको उसके अपने नौकर दे रखे थे जो उसका हर समय ख्याल रखते थे।

कई महीनों बाद सरदार मा की एक पत्नी ने एक लड़की को जन्म दिया। उसकी मॉ ने उसका नाम रखा अडॉमा[98] जिसका मतलब होता था "मा की पहली बेटी"। उसका असली नाम था न्वॉमा[99] जिसका मतलब होता है "मा की बेटी"।

अपूनन्वू और न्वॉमा दोनों बहिनें होने के नाते बहुत सारे काम एक से करतीं थीं और एक साथ ही पलीं बढ़ीं।

पर न्वॉमा की मॉ खुश नहीं थी क्योंकि अपूनन्वू ही सरदार मा की पहली बेटी मानी जाती थी। हर आदमी अपूनन्वा की सुन्दरता

---

[97] Apunanwu
[98] Ada-Nma
[99] Nwa-Nma

की चर्चा करता रहता जब कि उसकी अपनी बेटी की कोई बात ही नहीं करता था।

एक दिन न्वॉमा की मॉ ने बहुत सुबह ही सारे नौकरों को खेत पर भेज दिया। उसने उनको बोला कि वे जा कर याम बोने के लिये के मिट्टी के बड़े बड़े ढेर बनायें और जितनी जमीन उसने उनको बतायी है उसको तैयार करें। उसके बाद ही वे घर वापस आयें।

जब सब नौकर चले गये तो न्वॉमा की मॉ ने अपनी बच्ची को तो एक तरफ ले जा कर उसको खिला पिला दिया और अपूनन्वा बिना खाने और पानी के ही रह गयी। जब वह अपनी भूख सहन नहीं कर सकी तो वह न्वॉमा की मॉ के घर कुछ खाना लेने के लिये गयी।

न्वॉमा की मॉ ने उसको डॉट लगायी — "तुम कितनी आलसी हो। मैं तो बस तुम्हारी सुन्दरता के बारे में ही सुनती रहती हूॅ जैसे कि कोई सुन्दरता खा कर अपना पेट भर लेता है। तुम अपना खाना खुद क्यों नहीं बनातीं?

तुम तो फर्श साफ करने के लिये झाड़ू भी नहीं उठा सकतीं खाना बनाना तो दूर की बात है। क्या तुम किसी आदमी के साथ रहने और उसके लिये खाना बनाने के लायक हो?"

अपूनन्वा यह सुन कर बहुत परेशान और दुखी हो गयी। पर वह जानती थी कि वह घर का काम कर सकती थी। सो वह अपना खाना बनाने के लिये रसोई में चली गयी।

अपूनन्वा ने चूल्हा ठीक किया और उसमें आग जलायी। उसने कुछ याम छीले और पकाने के लिये धोये। जैसे ही उसने याम तैयार कर के उनको पकने के लिये आग के ऊपर उबलते पानी में रखे उसका शरीर तो पिघलने लगा।

पहले उसका वह हाथ पिघला जिस हाथ से उसने याम गर्म पानी में डाले थे। फिर उसकी वह टॉग पिघली जो आग के पास थी। फिर आग की गर्मी जल्दी ही उसकी दोनों टॉगें पिघलाने लगी। और बहुत जल्दी ही रसोई का सारा फर्श पाम के तेल के लाल रंग से लाल होने लगा।

इसी बीच एक काली बया चिड़िया[100] वहीं पाम के एक पेड़ पर अपना घोंसला बना रही थी। उसने अपूनन्वा को पिघलते हुए और साइज़ में सिकुड़ते हुए देख लिया।

वह तुरन्त ही वहॉ से उड़ कर रसोई के फर्श पर आयी और अपनी गर्दन उस बिखरे हुए पाम के तेल में डुबोयी। फिर वह गॉव के मैदान में उड़ गयी।

वहॉ सरदार एक मीटिंग में बैठा हुआ था। उसका ध्यान अपनी तरफ खींचने के लिये वह उसके ऊपर से उड़ी और उसके ऊपर बीट कर दी।

[100] Bayaa bird (Weaver bird) is famous for buiding its most elaborated nest. It is found in India too in abundance. See its picture above.

सरदार बोला — "ओह मेरे भगवान, जिस चिड़िया ने भी मेरे ऊपर बीट की है मैं उसको आज खाने में खा जाऊँगा।"

चिड़िया बोली — "अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं तुमको वह बात नहीं बताऊँगी जो मैं तुमको बताने आयी हूँ।"

इस पर सरदार ने उससे प्रार्थना की कि वह उसको मेहरबानी कर के वह बताये जो वह बताने आयी थी।

इस पर चिड़िया ने गाना गाया —

सरदार के घर में सुन्दर तेल पिघल गया, सरदार के घर में सुन्दर तेल पिघल गया
जो भी अपना बर्तन ले कर आयेगा वह अपना हिस्सा पा सकता है
जो भी अपना बर्तन ले कर आयेगा वह अपना हिस्सा पा सकता है
मैंने अपना हिस्सा ले लिया है तुम इसको मेरी गर्दन के चारों तरफ देख सकते हो

सरदार तुरन्त इस गाने में छिपी खबर समझ गया। उसने अपनी मीटिंग वहीं छोड़ी और घर की तरफ भागा। पर जब तक वह घर पहुँचा तब तक तो अपूनन्वा कमर से नीचे तक पिघल चुकी थी।

जब सरदार ने उसे देखा तो वह तो गुस्से और दुख से आग बबूला हो गया। वह तो कुछ कर ही नहीं सका। बेटी ने उसकी तरफ अपने हाथ बढ़ाये पर वह उनको कैसे पकड़ती, उसके अपने हाथ तो पहले ही पिघल चुके थे।

फिर सरदार को एक तरकीब सूझी। उसने अपनी बेटी को वहाँ से उठाने की कोशिश की पर वह उसके हाथ से फिसल गयी। अब

तो सरदार मा बहुत ही परेशान हो गया। वह तो बस खड़ा खड़ा अपनी बेटी को पिघलते हुए देखता रहा।

उसका दिल बिल्कुल टूट चुका था। वह अकेला रहने लगा और अपूनन्वू के लिये रोता रहा।

तब भगवान ने यह सोचा कि कोई भी अब किसी भी चीज़ को बच्चे में बदलने के लिये नहीं कहेगा।

उस दिन से आज तक किसी को आज तक कोई बच्चा किसी चीज़ से नहीं मिलता बल्कि प्राकृतिक रूप से ही मिलता है। दूसरे उस पाम के लाल तेल में अपनी गर्दन डुबोने की वजह से हर काली बया चिड़िया की गर्दन में एक लाल धारी होती है।

20 हर एक[101]

कछुए के टूटे हुए खोल की एक लोक कथा... यह कथा अफ्रीका के नाइजीरिया देश की है।

एक बार की बात है कि सब जगह अकाल पड़ा हुआ था। जानवर वाकई में बहुत ही दुबले पतले हो गये थे क्योंकि उनके खाने के लिये कुछ था ही नहीं। उन्होंने सोचा शायद देवता लोग गुस्सा थे और उनको उनकी बेवकूफियों की सजा दे रहे थे।

जानवरों के देश में एक तरह की हड़बड़ तड़बड़ मची हुई थी। हर जानवर एक दूसरे जानवर से सवाल पूछ रहा था और उसका जवाब चाहता था पर जवाब किसी के पास नहीं था।

शेर ने पूछा — "हम लोगों ने क्या गलती की है जिसकी वजह से हमको यह सब भुगतना पड़ रहा है?"

हाथी बोला — "हॉ यही तो मैं भी जानना चाहता हूॅ। यही तो सवाल है।"

कूगर[102] बोला — "हमने क्या नहीं किया है, यह पूछने की बात है।"

---

[101] Everyone (Tale No 20) – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa.
[My Note: This tale may be read in English at http://westafrikanoralliterature.weebly.com/everyone.html too.

[102] The cougar, also known as the mountain lion, puma, panther, painter, mountain cat, or catamount, is a large cat.

हालॉकि सारे ही जानवर भूखों मर रहे थे पर चिड़ियें बिल्कुल ठीक और ताजा दिखायी दे रही थीं। जबकि उनको अपने शरीर के लिये ज़्यादा खाने की जरूरत थी फिर भी ऐसा लग रहा था कि जैसे उनके ऊपर इस अकाल का कोई असर ही नहीं पड़ रहा था।

हालॉकि उनमें से कुछ का, खास कर के नर चिड़ियों का तो वजन भी बढ़ गया था और उनके पंखों का रंग भी नया हो गया था। इतना ही नहीं कछुए के पड़ोसी कौवी के तो बच्चे भी ज़्यादा थे।

कुछ जानवरों ने यह सोचा कि "हमको ये चिड़ियें इतनी ताजा और तन्दुरुस्त शायद इसलिये लगती हैं क्योंकि हम इनकी तरफ इतनी दया की नजर से देख रहे हैं, क्योंकि हमको दूसरी सब चीज़ें अच्छी ही दिखायी दे रही हैं।"

पर कछुए ने इस बात को नहीं माना। उसको तो यह मालूम करना था कि वह कौवी इतनी तन्दुरुस्त क्यों थी जबकि दूसरे जानवरों के पास ठीक से खाने के लिये भी नहीं था।

सो कछुआ कौवी के पास गया और बोला — "हलो मेरी दोस्त ऐबोनी[103]।" कछुआ हर एक को एक प्यार के नाम[104] से बुलाया करता था खास कर के तब जबकि उसको उससे कुछ काम लेना होता था।

---

[103] Ebony – the black one

[104] Nickname

कौवी बोली — "ऐबोनी? तुमने मुझे क्या कहा ऐबोनी? और अपनी दोस्त भी? भला मैं कबसे तुम्हारी दोस्त हो गयी?"

कछुआ बोला — "अरे ऐसी भी क्या बात है ऐबोनी। नाराज क्यों होती हो? मैं तो तुमको तुम्हारे घर में बच्चे पैदा होने की बधाई देने आया था। कैसे हैं नये बच्चे कौए?"

कौवी बोली — "ठीक है ठीक है। बधाई के लिये बहुत बहुत धन्यवाद। और तुम्हारे बच्चे कछुए कैसे हैं?"

कछुए ने कहा — "क्या तुमने सुना नहीं कि मेरे परिवार में से बहुत सारे कछुए तो मर गये हैं क्योंकि मेरे पास खाना नहीं है। पर तुम नहीं, ऐबोनी तुम नहीं। तुम तो बहुत अच्छी लग रही हो।

मैं जब भी तुम्हें देखता हूँ तो तुम्हारे पंख देखने के लायक होते हैं और मैं अपने आपसे कहता हूँ कि यह तो मेरी बहुत ही मेहनती दोस्त है।

पर वह भर पेट खाना खा कर रात भर कैसे सो सकती है जिसके पड़ोसियों के परिवार इस तरह अकाल में जी रहे हों। क्या उसको खराब नहीं लगता?"

कौवी अपने बचाव में बोली — "पर मैं तो यह अकाल ले कर आयी नहीं तो मुझे बुरा क्यों लगे?"

पर कछुए ने एक पल भी बरबाद किये बिना अपना कहना जारी रखा — "यहाँ तक कि शेर भी जो अपना वह सब कुछ जो

भी उसके पास है दूसरों से बॉटता है, आज उसको भी अपने खाने के लिये दूसरों के सामने हाथ फैलाना पड़ रहा है। अगर दुनियॉ का यही अन्त नहीं है तो पता नहीं इसका अन्त क्या है।"

कछुए की ये सब बातें सुन कर कौवी को कुछ कुछ खराब लगने लगा और यही वह कछुआ चाहता भी था।

कौवी ने एक बार फिर से कछुए की तरफ देखा तो उसको लगा कि ठीक से खाना न मिलने की वजह से कछुए के ऊपरी खोल की चमक बहुत ही कम हो गयी है।

सो कौवी ने मान लिया कि आसमान में एक जगह थी जहॉ चिड़ियों ने खाना ढूँढ लिया था। कछुए ने आश्चर्य से पूछा — "और तुम वहॉ अकेली ही जाती रहीं? बिना अपने चार पैर वाले दोस्त के?"

अपनी गलती को सुधारने के लिये कौवी और दूसरी चिड़ियों ने सोचा कि अगले दिन उनको जानवरों को भी वहॉ ले कर जाना चाहिये। उस दिन आसमान के देश में नये याम के त्यौहार[105] की दावत थी।

पर इस सब में एक परेशानी थी और वह यह कि जानवर उड़ नहीं सकते थे। सो सब चिड़ियों ने मिल कर एक तरकीब सोची।

---

[105] New Yam Festival – yam is a kind of root vegetable which is a very popular food of Nigeria. Before sowing new yam a kind of festival is celebrated for three days and three nights. Nobody eats new yam before this festival. See the picture of yam above.

उन्होंने सबने अपने कुछ पंख जानवरों के पंख बनाने के लिये दे दिये।

हाथी, चीता, बन्दर, मगर, सूअर और जानवरों के देश के सारे जानवरों के पास अब पंख थे और अब वे सब उड़ सकते थे।

हाथी ने अपने पंखों की जॉच करने के बाद अपना बिगुल बजाया — "वाह। मैं तो अब सचमुच में उड़ सकता हूँ।"

बन्दर ने चिपमंक[106] को सावधान करते हुए कहा — "ज़रा ध्यान से, चिप। हमारे ये पंख तूफान भी ला सकते हैं और ज़रा बताओ तो, सबसे पहले वे किसको उड़ायेंगे?"

शुतुरमुर्ग बोला — "मैं जानता हूँ वे किसको उड़ायेंगे। और क्योंकि मैं ही एक अकेला ऐसा चिड़ा हूँ जो उसके साइज़ जैसा हूँ तो मुझे अपने बहुत सारे पंख उसको देने पड़े और अब तो मैं उड़ भी नहीं सकता हूँ।"

शेर बोला — "यह दिन तो बड़े यादगार का दिन है। हम लोगों को एक दूसरे को चिढ़ाना नहीं चाहिये।"

गाय बोली — "मूऊऊऊ, अब तो मैं भी उड़ सकती हूँ।

सूअर बोला — "ओयिंक ओयिंक, और मैं भी।"

चीता दहाड़ा — "और मैं भी।"

---

[106] Chipmunk is a type of squirrel with stripes mostly found in North America. See its picture above.

सब जानवरों ने अपने अपने पंख जॉच लिये और अब वे सब आसमान देश के लिये उड़ने के लिये तैयार थे। कछुआ सबसे आगे खड़ा था जैसे वही सबको ले कर जा रहा हो।

हिप्पो ने पूछा — "क्या तुम लोगों को मालूम है कि तुम लोग कहॉ जा रहे हो? क्या तुम लोगों को कौवी को इस झुंड का नेता नहीं बना लेना चाहिये?"

कछुआ बोला — "नहीं नहीं, मैं इस झुंड का नेता नहीं हूॅ। जब शेर जी ने कहा कि आज का दिन एक खास दिन है तो मेरे दिमाग में एक विचार आया कि क्यों न हम आज के लिये, केवल आज के लिये, अपने अपने खास नाम रख लें।"

कौवी आश्चर्य से बोली — "खास नाम?"

कछुए ने समझाया — "हॉ हॉ, प्यार का नाम।"

न तो जानवरों ने और न चिड़ियों ने ही इसमें कोई बुराई देखी बल्कि उन सबको लगा कि इसमें तो बड़ा मजा रहेगा। सो सबने कछुए की सलाह मान ली और इस उड़ान के लिये अपना अपना एक छोटा सा नाम चुन लिया।

शेर बोला — "मैं तो हमेशा से ही फायरमैन बनना चाहता था इसलिये मेरा नाम होगा फायर चीफ।"

गोरिल्ला बोला — "मेरा नाम होगा बोगीमैन[107]।"

---

[107] Bogeyman - is a mythical creature in many cultures used by adults or older children to frighten bad children. This monster has no specific appearance. It can take any shape which is good enough to frighten others.

जब सब जानवरों और चिड़ियों ने अपने अपने नाम रख लिये तो कछुआ बोला — "मेरा नाम होगा "हर एक"[108]।"

सारे जानवर बहुत ज़ोर से हॅस पड़े — "हा हा हा हा।"

हिप्पो ने पूछा — "यह कैसा नाम है?"

कछुआ बोला — "हॉ हर एक। बस इस यात्रा के लिये।"

अब क्योंकि वह एक प्यार का नाम था सो किसी भी जानवर या चिड़िया ने इस नाम पर शक भी नहीं किया और उससे आगे कुछ पूछा भी नहीं।

बस वे सब खाने की उम्मीद में आसमान देश की तरफ उड़ चले। जैसे जैसे वे ऊपर और और ऊपर उड़ते जाते थे उनको स्वादिष्ट खाने की खुशबू आती जाती थी। ऐसी खुशबू उन्होंने बहुत दिनों से धरती पर नहीं सूँघी थी।

जब वे सब आसमान देश में पहुँच गये तो वह देश तो उनको चिड़ियों ने जैसा बताया था उससे भी ज़्यादा सुन्दर लगा। वहॉ के बाग बागीचे खाने से भरे हुए थे। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली थी और सारा देश ज़िन्दादिल लग रहा था।

उनके मेजबान तो खास कर के उनके साथ बहुत ही दोस्ती का बर्ताव कर रहे थे। उनको शाही तरीके से बिठाया गया। यह सब देख कर सारे जानवर तो कुछ बोल ही नहीं सके।

---

[108] Everyone

कछुए को आश्चर्य हुआ — "दो दुनियॉ इतनी अलग कैसे हो सकती हैं? यहॉ तो कितना सारा खाना है जबकि धरती पर खाना ही नहीं है और वहॉ के लोग भूख से मर रहे हैं। अगर मैं यहॉ पर रह सकता तो मैं तो यहॉ हमेशा के लिये रह जाता।"

उसने वहॉ एक घूमने वाले से पूछा — "क्या यह जगह हमेशा ही ऐसी दिखायी देती है या तुम लोगों ने इसको हमको प्रभावित करने के लिये ऐसा बनाया है?"

उसने जवाब दिया — "नहीं, यह जगह तो हमेशा ही ऐसी रहती है।"

यह सब देख कर कछुए का मन ललचा रहा था और वह यह सोच रहा था कि वह यहीं आसमान देश में रहने लग जाये कि उसने पाया कि वह दूसरे जानवरों और चिड़ियों के साथ एक शाही जगह बैठा हुआ है।

अब वहॉ पर खाना परोसा जा रहा था तो उसकी तो खुशबू से ही कछुए के मुँह में पानी आ रहा था। पूरी मेज खाने से भरी हुई थी।

तभी चार नौकर आसमान के देवता को उसकी गाड़ी में ले कर आये। आसमान का देवता वहॉ आ कर बोला — "मेहमानों, आप सबका हमारे इस छोटे से देश में स्वागत है।"

कछुए ने सोचा "अगर यह देश छोटा है तो पता नहीं फिर बड़ा क्या होता है?"

राजा आगे बोला — "आप सबको यहाँ इस नये याम के त्यौहार पर आने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद। यह रीति शुरू हुई थी....।"

कछुआ बड़ी मुश्किल से राजा का स्वागत भाषण समझ पा रहा था क्योंकि उसका ध्यान तो केवल उस स्वादिष्ट खाने और शराब के गिलासों की खनखनाहट ही की तरफ लगा हुआ था जैसा उसने पहले कभी देखा नहीं था।

तिरछी निगाहों से वह मेज पर लगी खाने की वे सारी चीज़ें गिन रहा था जो उन सबके लिये वहाँ मेज पर लगायी गयी थीं। जितना ज़्यादा वह राजा बोल रहा था कछुए को उतनी ही ज़्यादा भूख लगती जा रही थी — "उफ़, यह खाना कितना अच्छा है मुझसे तो इन्तजार भी नहीं हो पा रहा और यह राजा है कि बोलता ही जा रहा है।"

राजा आखीर में बोला — "आखीर में बस आप सबका यहाँ स्वागत है।" फिर वह खुद भी खड़ा हो गया और उसके नौकरों ने और सबको खड़े होने के लिये कहा।

वह बोला — "आइये, हमारी दावत में खाना खाने के लिये हर एक का स्वागत है।"

जानवर और चिड़ियों को खाने के लिये इन्तजार करना मुश्किल हो रहा था पर कछुआ वहाँ उनसे भी पहले पहुँच गया।

वह अपने दोनों हाथों को फैला कर उनको खाने की तरफ जाने से रोकता हुआ बोला — "ए, तुम सबको याद है न? मैं "हर एक" हूँ। राजा ने पहले मुझे अपने साथ दावत खाने के लिये कहा है। इसलिये तुम लोग अपनी बारी का इन्तजार करो शायद राजा तुम लोगों को भी बुला ले।"

जानवर और चिड़ियें वापस बैठ गये और कछुए को खाना खाते देखते रहे। कछुए ने सबसे ज़्यादा स्वादिष्ट खाने से शुरू किया और इतना खाया कि वह बड़ी मुश्किल से उठ पाया।

जब उसको खाना रखने की और कोई जगह नहीं मिली तो उसने बाकी बचे हुए खाने को खाने के लिये और लोगों को बुला लिया। खाने के बाद आसमान के राजा ने मेहमानों के लिये बहुत ही स्वादिष्ट शराब मँगवायी।

शेर छत की तरफ देखते हुए बोला — "ओह, इस शराब की खुशबू।" कहते हुए और शराब की खुशबू सूँघते हुए अपना सिर इधर उधर हिलाया जैसे वह सारी खुशबू अपने अन्दर भर लेगा।

बन्दर बोला — "खाली पेट शराब? यह तो बड़ा अच्छा है।"

कौवी बोली — "मैं तो बहुत भूखी हूँ मुझे तो कुछ भी चाहिये। मैं इस शराब से ही काम चला लूँगी।"

वह आगे बोली — "अगर वह हमको उसको चखने दे तब न।"

"अब वह ऐसा नहीं करेगा, नहीं न?"

राजा फिर बोला — "हर एक का हमारे साथ पीने के लिये स्वागत है। ये शरावें बहुत खास हैं। ये सब मेरे बगीचे के फलों से बनायी गयी हैं। मुझे यकीन कि ये हर एक को अच्छी लगेगी।"

यह सुन कर जानवरों और चिड़ियों ने शराब के प्याले उठाने की कोशिश की पर कछुए ने उन सबको यह कहते हुए फिर रोक दिया — "याद है न, मैं हर एक हूँ। राजा ने मुझे अपने साथ शराब पीने के लिये बुलाया है। तुम लोग अपनी बारी का इन्तजार करो।"

बेचारे जानवर और चिड़ियें फिर रुक गये। उनकी भूख बढ़ती जा रही थी। बचा हुआ खाना और शराब उन सबके पेट को चिढ़ा रहे थे।

इस सबसे परेशान हो कर कि यह मजाक अब बहुत हो गया कौवी और दूसरी चिड़ियों ने यह निश्चय किया कि वे कछुए से अपने पंख वापस ले लेंगी।

दावत खत्म होने के बाद एक एक कर के सब चिड़ियों ने जिन्होंने भी कछुए को अपने अपने पंख इस यात्रा के लिये दिये थे वे सब पंख उसके शरीर पर से नोच लिये।

पहले तो कछुए को इस बात का बुरा नहीं लगा क्योंकि वह तो आसमान देश में हमेशा के लिये रहना चाहता था पर आसमान के देवता ने कहा कि वह किसी दूसरे को वहाँ रहने की इजाज़त नहीं दे सकता था। वहाँ हर एक का स्वागत तो था पर वहाँ रहने की इजाज़त किसी को नहीं थी।

अब कछुए ने सोचा कि वह बिना पंख के धरती पर कैसे जायेगा – कूद कर? पर उसको तो किसी गद्देदार चीज़ पर गिरना चाहिये नहीं तो वह तो मर जायेगा।

इसलिये उसने दूसरे जानवरों से प्रार्थना की कि वह उसकी पत्नी को जा कर बोलें कि वह उसके कूदने के लिये पत्तियों का एक ढेर बना दे ताकि वह उस पर कूद जाये। पर उन सबने उसको मना कर दिया कि वे उसका यह काम नहीं कर सकतीं।

आखीर में उसने कौवी से ही प्रार्थना की — "ऐबोनी, मेरी प्यारी दोस्त, तुम भी मुझे यहाँ छोड़ कर जा रही हो? तुमने मेरे पंख तो ले लिये अब कम से कम मेरी इतनी सहायता कर दो कि जब तुम नीचे पहुँचो तो मेरी पत्नी को बोलना कि वह मेरे लिये पत्तों का एक बड़ा सा बिछौना बना दे ताकि जब मैं नीचे गिरूँ तो मुझे कोई चोट न पहुँचे।"

कौवी को कछुए के ऊपर दया आ गयी पर वह उसको उसके लालच के लिये सजा भी देना चाहती थी। इसलिये वह कछुए की बात उसकी पत्नी तक पहुँचाने पर राजी हो गयी।

धरती पर जा कर वह कछुए के घर गयी और बोली — "मिसेज कछुआ, तुम्हारे लिये तुम्हारे पति ने कुछ कहलवाया है।"

कछुए की पत्नी बोली — "पर वह है कहॉ? मुझे तो लगता है कि उसने वहीं ऊपर रहने का फैसला कर लिया है। वह वहॉ खुश है तो वह वहीं रहे, मैं उसकी परवाह नहीं करती।"

कौवी बोली — "नहीं नहीं ऐसा नहीं है जैसा कि तुम सोच रही हो। पर वह तभी वापस आ सकता है जब तुम वही करोगी जो उसने तुमसे करने के लिये कहा है।

उसने कहा है कि तुम उसके लिये पत्थरों का एक बिछौना यहॉ जमीन पर बिछा दो ताकि वह उस पर उतर सके।"

कछुए की पत्नी ने पूछा — "क्यों? क्या वह वहॉ वैसे ही उड़ कर नहीं गया था जैसे और लोग गये थे? तो अब उसे नीचे आने के लिये पत्थरों का बिछौना क्यों चाहिये?"

कौवी बोली — "हॉ वह उड़ कर तो गया था। पर अब वह वहॉ से तुम्हारे लिये बहुत सारा खाना लाना चाहता है। इसलिये उसने आसमान के देवता से एक शर्त लगायी है कि अगर वह वहॉ से पत्थरों के बिछौने पर कूदने के बावजूद ज़िन्दा रह जायेगा तो आसमान का देवता उसको जितना वह चाहेगा उतना खाना दे देगा।"

खाने के बारे में तो सोचने से ही कछुए की पत्नी के मुँह में पानी आ गया। वह यह सोच ही नहीं पायी कि अगर कछुआ ऊपर से पत्थरों के ऊपर कूदा तो उसका क्या होगा। उसने तुरन्त ही कछुए के लिये पत्थरों का एक बिछौना बना दिया।

जब कछुए की पत्नी पत्थरों का बिछौना बना चुकी तो कौवी वहाँ से कछुए को यह बताने के लिये आसमान देश को उड़ गयी कि उसका पत्तों का बिछौना नीचे धरती पर उसके लिये तैयार था।

कछुए ने अपने मेजबान को विदा कहा और धरती पर कूद गया। किसी गद्देदार बिछौने के या किसी और चीज़ पर गिरने की बजाय वह तो पत्थरों के बिछौने पर आ कर गिर गया था। क्या कूद थी उसकी?

उस कूद की आवाज इतनी ज़्यादा थी कि वह सारे जानवर देश में गूँज गयी और हर जानवर को लगा कि कछुआ मर गया।

कौवी चिल्लायी — "कछुआ मरा नहीं ज़िन्दा है।"

हालाँकि कछुआ मरा नहीं था पर उसका ऊपरी खोल कई टुकड़ों में टूट गया था। कछुए की पत्नी तो यह सब देख कर बहुत डर गयी। वह रो रो कर सब जानवरों से अपने पति के खोल को फिर से जोड़ने के लिये प्रार्थना करने लगी।

पर उन सबने उसको मना कर दिया। सब जानवरों ने कछुए को अपने समाज से निकाल दिया और कोई दूसरा भी उसका खोल जोड़ने के लिये तैयार नहीं हुआ।

किसी तरह कछुए की पत्नी घोंघे और केंकड़े को इस काम के लिये बुला कर लायी। पर वे भी जानवरों के देश के सबसे अच्छे औजार इस्तेमाल

नहीं कर सके क्योंकि जानवरों ने कछुए को अपने समाज से निकाल दिया था।

केंकड़े ने किसी तरह अपने टेढ़े पंजों से उसके खोल के टुकड़े एक साथ रखे और घोंघे ने अपना थूक इस्तेमाल कर के उन सबको जोड़ा।

इसी लिये आजकल कछुए का बाहरी खोल टेढ़े मेढ़े टुकड़ों का बना लगता है और जोड़ों पर से खुरदरा है जैसे उसे किन्हीं सीखने वालों ने जोड़ा हो।

21 कछुए ने उधार कैसे उतारा[109]

उधार उतारने का एक अक्लमन्द तरीका। अफ्रीका के नाइजीरिया देश की एक लोक कथा।

एक बार की बात है कि जानवरों के देश में सब जगह अकाल पड़ा हुआ था। खाना बहुत ही कम मिलता था इसलिये केवल ताकतवर और अक्लमन्द जानवर ही ज़िन्दा थे।

जिन जानवरों ने खाना इकट्ठा करके रखा हुआ और उसकी जान की बाजी लगा कर भी रक्षा की हुई थी केवल वे ही लोग ज़िन्दा थे। ऐसे समय में बच्चे पैदा करने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता।

कछुआ जानवरों के देश में सबसे अक्लमन्द जानवर माना जाता था। वह अपने धीमेपन और सबसे ज़्यादा आलसीपने और चालाकी के लिये भी बहुत मशहूर था।

इस अकाल ने उसको दूसरे जानवरों के मुकाबले में कुछ ज़्यादा ही तंग कर रखा था क्योंकि जैसी कि उससे आशा की जाती थी, न तो उसके पास अपना कोई खेत था और न ही उसने खाना इकट्ठा करके रखा हुआ था।

---

[109] How the Tortoise Paid His Creditors (Tale No 21) – a folktale from Calabar, Southern Nigeria, West Africa.

क्योंकि खाना बहुत ही कम था इसलिये उसको यह भी समझ में नहीं आ रहा था कि इस अकाल के समय में वह किससे खाना उधार माँगे। सो उसने सोचा कि उसको खाना नहीं बल्कि कुछ और उधार माँगना चाहिये। पर क्या?

एक दिन उसने सोचा कि उसको अपने पड़ोसियों से इमारत बनाने का कुछ सामान उधार माँग लेना चाहिये — "अगर वे मेरे सच्चे पड़ोसी हैं तो उनको मेरी झोंपड़ी के लिये कुछ डंडे ही उधार दे देने चाहिये।"

यह सोच कर सबसे पहले वह अपने पड़ोसी एक कीड़े के पास गया और उससे बोला — "ओ धीरे चलने वाले नमस्ते।"

कीड़े ने जवाब दिया — "हलो बूढ़े, तुम मुझे यह इज़्ज़त क्यों दे रहे हो?"

कछुआ बोला — "क्या तुम मुझे एक छोटा सा डंडा उधार दोगे? मैं एक घर बनाना चाहता हूँ और मेरे पास डंडे कम पड़ गये हैं। मैं तुमको उसे जल्दी ही वापस कर दूँगा।"

कीड़ा बोला — "डंडे? सारे लोग तो भूख से मर रहे हैं और तुमको मकान बनाने की पड़ी है? तुम्हारे पास खाना कहाँ से आता है?"

कछुआ बोला — "मुझे खाना नहीं मिलता वह तो ठीक है पर मैंने सोचा कि मुझे खाना उधार देगा भी कौन? सो मैंने सोचा जब

तक यह अकाल खत्म होता है तब तक मैं अपना मकान ही पूरा कर लूँ ताकि मैं जब भूख से मरूँ तो अपने परिवार के लिये कम से कम मकान ही छोड़ जाऊँ।"

कीड़े ने समय बरबाद न करते हुए उसको कुछ डंडे उधार दे दिये ताकि कहीं ऐसा न हो कि कछुआ अपना विचार बदल ले और उससे खाना माँग ले। डंडे देने के बाद कीड़ा बोला — "इनको वापस देने की याद रखना।"

कछुए ने कीड़े से वायदा किया — "मेरा वायदा ही मेरी इज़्ज़त है। तुमको तुम्हारा पैसा आज से सात बाजार दिन[110] के बाद ब्याज के साथ मिल जायेगा। उस दिन मैं अपने घर में तुम्हारा इन्तजार करूँगा।" फिर उसने कीड़े को धन्यवाद दिया और वहाँ से डंडे ले कर अपने घर चला आया।

उसके बाद वह मुर्गे के घर गया। वहाँ भी उसने वही तरीका अपनाया जो उसने कीड़े के साथ अपनाया था। इस बार वह जादू की तरह से काम किया। उसने वहाँ से भी डंडे उठाये और उनको ला कर घर में रख लिया।

फिर वह लोमड़े के पास गया, उसके बाद वह चीते के पास गया और फिर एक शिकारी के पास गया। उनसे भी उसने कुछ डंडे

[110] Seven market days – in villages markets are normally organized daily or weekly, so seven market days here seems to mean seven weeks.

उधार लिये और सात बाजार दिन बाद उनको वापस करने का वायदा किया।

सात बाजार दिन के बाद, करीब करीब उसी समय जब डंडे उधार लिये गये थे, कीड़ा अपने पैसे लेने के लिये कछुए के घर आया — "हलो बूढ़े, मैं यहॉ अपना पैसा लेने के लिये आया हूॅ।"

कछुआ बोला — "तुम ठीक समय पर आये हो ओ धीरे चलने वाले। वे छोटे वाले डंडे थे न?"

"हॉ वे छोटे वाले डंडे ही थे और वे मुझे ब्याज के साथ वापस लेने हैं।" कीड़ा बोला।

कछुआ बोला — ठीक है ठीक है, ब्याज के साथ।" और उसने कीड़े को अपने मेहमान वाले कमरे में बिठाया। उसने उसको वहॉ इन्तजार करने को कहा जब तक वह उसके पैसे ले कर आता है। कीड़ा यह सोच कर बहुत खुश था कि कछुआ उसके पैसे देने वाला हो रहा था।

पैसे की बात सोच सोच कर ही उसके मुॅह में पानी आ रहा था। उस पैसे से वह क्या क्या खाना नहीं खरीद सकता था। जब वह यह सब सोच ही रहा था तो कछुआ अपने झोंपड़े के पीछे वाले कमरे में गया और वहॉ से पीछे के दरवाजे से बाहर निकल गया।

फिर वह सामने के दरवाजे पर आया और अपने दूसरे मेहमान का इन्तजार करने लगा। तभी वहॉ मुर्गा आ पहुॅचा। उसने मुर्गे का

भी स्वागत किया — "आओ मुर्गे भाई, मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था।"

वह मुर्गे को घर के अन्दर ले गया और अपने मेहमानों वाले कमरे की तरफ इशारा करते हुए बोला — "आओ अन्दर आओ और वहॉ बैठ कर मेरा इन्तजार करो तब तक मैं तुम्हारा पैसा ले कर आता हूँ।"

यह कह कर कछुआ चल दिया और मुर्गे ने मेहमानों वाले कमरे का दरवाजा खोला। दरवाजा खोलते ही उसको कीड़ा दिखायी दे गया। इससे पहले कि कीड़ा उससे कुछ कहता कि वह तो कीड़े को तुरन्त ही खा गया।

कछुआ अब लोमड़े का इन्तजार कर रहा था। जैसे ही उसने उसे दूर से आते देखा वह खुशी से उसको लाने के लिये वहॉ तक गया और बोला — "आओ चालाक[111]। मुझे मालूम है कि तुम अपने समय के बड़े पक्के हो। आओ अन्दर चल कर बैठो तब तक मैं तुमहारा पैसा ले कर आता हूँ।"

कह कर उसने उसे भी अपना मेहमानों वाला कमरा दिखा दिया। पर लोमड़ा बोला — "मुझे तो अपना पैसा अभी चाहिये। मैं यहॉ बैठने नहीं आया।"

[111] Translated for the word "Sly". Because fox is sly that is why the tortoise called him "Sly".

कछुआ बोला — "तुम ऐसा कैसे सोचते हो कि मैं उतना पैसा अपनी जेब में लिये घूमता हूँ। तुम यहाँ आ तो गये ही हो, अन्दर चल कर बैठो और मैं तुम्हारा पैसा ले कर अभी आता हूँ।"

बेमन से लोमड़ा कछुए के घर के अन्दर चला गया। वहाँ जा कर उसने देखा कि वहाँ तो मुर्गा बैठा हुआ है। बस वह तो उसके पीछे भागा और कमरे में चारों तरफ भागता रहा। पर लोमड़े ने मुर्गे को जल्दी ही पकड़ लिया और खा गया।

अब इन दोनों के बाद चीते को आना था। कछुआ उसका भी दरवाजे पर खड़ा खड़ा इन्तजार कर रहा था। चीता भी अपनी राजसी शान से चला आ रहा था।

जैसे ही कछुए ने उसे दूर से आते देखा तो वह उसका स्वागत करने के लिये उसके पास तक गया और बोला — "आओ धब्बे[112] वाले। मैंने तुम्हारा पैसा तैयार रखा है और मैं उसको अभी ले कर आता हूँ।

पर तुमको यह बताने के लिये कि मैं अपनी बात का पक्का हूँ मेरे पास तुम्हारी पसन्द की चीज़ है जो मैंने अपने मेहमानों वाले कमरे में रखी है।"

चीते ने उत्सुकता से पूछा — "क्या है वह चीज़?"

---

[112] Translated for the word "Leopard". Because Leopards have spots on their body that is why Tortoise called him "Spot". See his picture above.

कछुआ बोला — "बस यह तो एक चौंका देने वाली चीज़ है पर तुम्हारे लिये इतना ही इशारा काफी है कि वह चीज़ तुम्हारे मतलब की है और बहुत ही स्वादिष्ट है।"

चीता यह सुन कर तो कछुए के मेहमानों वाले कमरे में जाने के लिये बिल्कुल भी इन्तजार नहीं कर सका। वह कूद कर उस कमरे में घुस गया।

वहॉ था उसका सबसे बड़ा दुश्मन लोमड़ा। आश्चर्य से उसके चेहरे को घूरता हुआ। चीता भूखा तो था ही बस फटाक से उसने लोमड़े को दबोच लिया और खा गया।

खा कर वह आराम से वहीं लेट गया और कछुए का इन्तजार करने लगा। वह अपने मन में सोच रहा था — "यह किस तरह का कछुआ है? मैंने तो कभी सोचा ही नहीं था कि इसके पास यह भी है। मैं तो हमेशा इसको जल्दी में ही तौलता रहा।"

जब चीता वहॉ अपने पैसे का इन्तजार कर रहा था तो कछुआ अपने दरवाजे पर खड़ा शिकारी का स्वागत कर रहा था। शिकारी अपनी भरी हुई बन्दूक कन्धे पर लटकाये चला आ रहा था।

कछुआ उसको देखते ही बोला — "मुझे पता है कि तुम हमेशा तैयार हो कर ही आते हो।"

शिकारी ने पूछा — "हॉ, मगर क्यों?"

कछुआ बोला — "कुछ नहीं। मेरा मतलब है कि तुम अपने साथ में हमेशा भरी हुई बन्दूक रखते हो। अगर मैं कोई गलती करूँ तो तुम मुझे गोली तो नहीं मार दोगे?"

शिकारी बोला — "विचार तो अच्छा है पर नहीं, मैं तुमको गोली नहीं मारूँगा। मैं एक शिकारी हूँ। मैं हमेशा ही अपनी भरी हुई बन्दूक अपने साथ रखता हूँ ताकि अगर मुझे कहीं कोई शिकार मिल जाये तो मैं उसका शिकार कर सकूँ।

इसके अलावा आजकल जंगल भी सुरक्षित नहीं है इसलिये भी भरी हुई बन्दूक साथ में रखनी पड़ती है। यह दोहरी सावधानी है। अब काफी सवाल हो गये यह बताओ मेरा पैसा कहाँ है?"

कछुआ माफी माँगते हुए बोला — "मुझे अफसोस है मेरे दोस्त, मैं तो बिल्कुल ही भूल गया पर जैसा कि बड़े लोग कहते हैं कि "जो बहुत सारे सवाल पूछते हैं वे कभी रास्ता नहीं खोते।"

सो तुम मेरे मेहमानों वाले कमरे में जा कर बैठ कर मेरा इन्तजार करो और मैं तुम्हारा पैसा ले कर अभी आता हूँ। इसे अपना ही घर समझना मैं तुम्हारो लिये ताजा ताड़ी[113] भी ले कर आता हूँ।"

जब शिकारी उस कमरे के अन्दर घुसा तो चीते के आराम में खलल पड़ा। चीता चौंक पड़ा पर उसको देखते ही शिकारी ने अपनी बन्दूक उसके ऊपर तान दी। शिकारी को देखते ही चीता उसके ऊपर उछला।

[113] Translated for the word "Palm wine"

शिकारी बन्दूक से गोली छोड़ने ही वाला था कि चीते ने उसका गला पकड़ लिया। इसी बीच शिकारी की बन्दूक से गोली चल गयी और चीते को लग गयी।

पर तब तक चीते ने शिकारी के गले के मॉस का इतना बड़ा टुकड़ा काट लिया था कि वह शिकारी को मार देने के लिये काफी था। जैसे ही कछुए ने बन्दूक चलने की आवाज सुनी उसने समझ लिया कि उसकी तरकीब काम कर गयी।

वह घर में अन्दर की तरफ दौड़ा और अपने मेहमानों वाले कमरे की तरफ यह देखने के लिये गया कि वहॉ कोई ज़िन्दा भी बचा था या नहीं। देखते हुए कि अब वहॉ कोई मेहमान ज़िन्दा नहीं था वह उस कमरे में घुसा और अपने ही ऊपर हॅस पड़ा।

जब वह हॅसते हॅसते सॅभला तो उसने चीते को उठाया और उसे काट डाला। शिकारी को उसने अपने घर के पीछे की जमीन में गाड़ दिया। इस तरह से अब उसके पास अकाल खत्म होने तक खूब खाना था।

Classic Books of African Folktales in Hindi

Translated by Sushma Gupta

1901 **Zanzibar Tales.**
No 1 by George W Bateman. 10 tales. The 1st African Folktale book.

1910 **Folktales From Southern Nigeria.**
No 15 By Elphinstone Dayrell. London: Longman Green & Co. 40 tales.

1917 **West African Folk-Tales**
No 20 By William H Barker and Cecilia Sinclair. Lagos: Bookshop. 35 tales.

1947 **The Cow Tail Switch and Other West African Stories.**
No 14 By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt. 143 p.

1962 **Fourteen Hundred Cowries and Other stories.**
No 8 By Abayomi Fuja. Ibadan: OUP. 31 tales

1998 **African Folktales.**
No 12 By Alessandro Ceni. 18 tales.

2001 **Orphan Girl and Other Stories.**
No 13 By Buchi Offodile. 41 tales

2002 **Nelson Mandela's Favorite African Tales**.
No 7 ed Nelson Mandela. 32 tales

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट। । **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales**.**
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियॉ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियॉ — थोमस फ्रैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

33. Il Decamerone
By Giovanni Boccaccio. **1353**. 100 Tales.
इल डैकामिरोन — जिओवानी बोकाकिओ। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Punjab
By Charles Swynnerton. Collected from his two books "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment". **1903 and 1892** respectively.
पंजाब की लघु कथाऐं —।

36. Cossack Fairy Tales and Folk Tales.
Translated in English By R Nisbet Bain. George G Harrp & Co. **c 1894**. 27 Tales.
कोज़ैक की परियों की कहानियॉ — अनुवादक आर निस्बत बैन। **2022**

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022